अरुण नामदेव

झूठ का सौंदर्य

व्यंग्य संग्रह

झूठ का सौंदर्य
व्यंग संग्रह

अरूण नामदेव

रुद्रादित्य प्रकाशन
प्रयागराज.

इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक/ लेखक/संपादक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश का फ़ोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन:प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता। इस पुस्तक से संबंधित किसी भी परिवाद की स्थिति में न्यायिक क्षेत्र प्रयागराज ही होगा।

ISBN :

द्रादित्य प्रकाशन
109, एच/आर/3-एन, ओ.पी.एस. नगर,
कालिन्दीपुरम, प्रयागराज, 211011
मो. नं.- 8187937731, 8175030339
ईमेल : rudraditya00@gmail.com

शाखाएँ : कौशाम्बी रोड, झलवा, प्रयागराज

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹

© अरूण नामदेव

टाइप सेटिंग : रूद्रादित्य प्रकाशन डीटीपी यूनिट,

कवर डिजाइन : कुँअर रवीन्द्र

आस्था पेपर कन्वर्टर
भार्गव प्रिन्टर्स

झूठ का सौंदर्य
अरूण नामदेव

Jhoot Ka Saundraya
Arun Naamdev

समर्पण

हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक
व्यंग्यकार
हरिशंकर परसाई को सादर समर्पित
जिन्होंने मुझे लेखन प्रक्रिया और
रचना कौशल का पाठ पढ़ाया

विडम्बना का विद्रूप ''झूठ का सौंदर्य''

व्यंग्य को साहित्य में बहुधा गंभीरता से नहीं लिया जाता और उस अखबारी व्यंग्य लगभग अंत्यज की तरह ट्रीट किया जाता है। किन्तु ''झूठ का सौंदर्य'' के लेख भले ही विभिन्न अखबारों में तीरतुक्का, ब्लॉगवाणी आदि नामों के कॉलम से प्रकाशित हुये हों, वे अख़बार की खबरों की तरह बासी नहीं हुये हैं। ये लेख बालमुकंद गुप्ता, हरिशंकर परसाई, राजकिशोर की परंपरा में पत्रकारिता के व्यंग्य की तरह ही कलाबद्ध होते हुये भी कालजयी भले ही न कहे जा सकते हों किन्तु उनके आज भी प्रासंगिक और समसमायिक होने से इंकार नहीं किया जा सकता। उनके विषय स्थानीय होते हुये व्यापकता में कम नहीं हैं। यही व्यंग्य की खूबी भी है कि वह लोकल होते हुये ग्लोबल होता है।

कबीर हिन्दी के सबसे सयाने व्यंग्यकार कहे जा सकते हैं। पाखंड पर उनकी ''सौ सुनार की एक लोहार की'' वाली चोट आज भी वैसी ही तिलमिलाहट पैदा करती है जैसी तब करती रही होगी। हिन्दी गद्य में व्यंग्य के पूर्वज भारतेन्दु हरिशचंद को माना जाता है जो ब्रिटिशकालीरन भारत में व्याप्त शोषण, कुरीति पर करारा प्रहार ''अंधेर नगरी'' के रूपक से करते हैं। भारतेन्दु हरिशचंद के पश्चात एक लंबी परंपरा बालकृष्ण भट्ट, बालमुकंद गुप्ता, पाण्डे वेचन शर्मा 'उग्र' से होते हुये शंकर पुणतांबेकर, नरेन्द्र कोहली, ठाकुरप्रसाद सिंह, सूर्यकांत व्यास, आलोक पौराणिक, श्रीलाल शुक्ल, ज्ञान चतुर्वेदी तक आती है। इस पूरी मीनार के दो प्रमुख स्तंभ हरिशंकर परसाई और शरद जोशी हैं जिन्होंने व्यंग्य को फर्म से आगे ले जाकर एक विधा का दर्जा दिलवाया। हरिशंकर परसाई ने समाज से प्रत्येक अंग, प्रत्येक वर्ग की अपनी सूक्ष्म दृष्टि से गहरी पड़ताल की और जहां-जहां पाखंड देखा वहां तेज नश्वर चलाया। इस प्रक्रिया में उन्होंने स्वयं को भी शामिल किया इसलिए उनके व्यंग्य लेखन में बड़ा गहरा आत्मालोचन दिखाई देता है। सादगी और संवेदना का उनका शिल्प आज भी परवर्ती व्यंग्यकारों द्वारा धड़ल्ले से प्रयोग किया जा रहा है। आज भी परसाई सबसे अधिक उद्धृत किये जाने वाले व्यंग्यकार हैं और उनकी सूक्तियाँ आजाद भारत के यथार्थ की पोस्टमार्टम रिर्पोट कही जा सकती है। ''तट की खोज'', ''रानी नागफनी की कहानी'', पगडंडियों का जमाना'', विकलांग श्रद्धा का दौर'' आज भी सर्वाधिक पढ़े जा रहे हैं।

परसाई के अतिरिक्त शरद जोशी ने भी व्यंग्य लेखन को सामाजिक सरोकार और दायित्वबोध के साथ गहरी बौद्धिकता प्रदान की। ''जीप पर सवार इल्लियां'', नावक

के तीर,'' ''रहा किनारे बैठ'' ''अंधो का हाथी'', ''एक था गधा'' से भला कौन परिचित नहीं होगा। वे लिखते हैं- ''लिखना मेरे लिये जीने की तरकीब है, इतना लिख लेने के बाद अपने लिखे को देख मैं सिर्फ यही कह पाता हूँ कि चलो इतने बरस जी लिया। यह न होता तो इसका विकल्प क्या होता, अब सोचना कठिन है कि लिखना मेरा निजी उदेश्य है।''

ज्ञात हो कि यह हरिशंकर परसाई का जन्मशती वर्ष भी है ऐसे में अरुण नामदेव के व्यग्यं लेख का पुस्तकाकार प्रकाशित होना अपने व्यंग्य पूर्वज के प्रति श्रद्धांजलि तो है ही किन्तु उससे अधिक कबीर और परसाई की परंपरा को आगे ले जाकर अपनी नई पीढ़ी का एक विरासत के रूप में सौपना भी है।

''झूठ का सौंदर्य'' में अरुण नामदेव अपने लेखों में हास्य और अतिश्योक्ति का आवरण रचते हुये भी वस्तुनिष्ठता और विश्लेषणपरकता से विचलित नहीं होते। इस पुस्तक में संकलित व्यंग्य लेख मूलतः तीन श्रेणी के हैं। प्रथम राजनैतिक, द्वितीय नौकरशाही विशेषकर पुलिस और तीसरा साहित्यिक और राजनैनिक जीवन में व्याप्त भ्रष्ट्राचार और शोषण पर करारा प्रहार है किन्तु इधर कुछ वर्षों से लिखे जा रहे व्यंग्य की वह खीझ और तिलमिलाहट यहां गायब है जिसे लेकर व्यंग्य को आतंकवादी कार्यवाही के रूप में चिन्हित किया जाने लगा है।

इन्हें पढ़कर यह भाव गहरा होता है कि व्यंग्यपूण रचनाएं भी सौद्देश्य होती हैं और फूहड़पन या सतही हास्त होना कतई आवश्यक नहीं है। वे भले पाठक के मन में गुदगुदी पैदा करती हों किन्तु अंत में उसे सोचने के लिये अकेला छोड़ देती हैं।

लगभग चार दर्जन संकलित लेखों में अरुण नामदेव परसाई शैली का अनुकरण करते हैं जिसमें वे एकसूक्त वाक्य से अपनी रचना शुरू कर उसका विस्तार और परिष्कार करते चलते हैं। ''चिंतन जारी है'' में वे लिखते हैं ''हमारा देश चिंतन प्रधान देश है, यहां अहर्निश चिंतन की अजश्र धारा प्रवाहित होती रहती है, देश में जब भी कोई भीषण आपदा आती है, प्राकृतिक प्रकोप बढ़ते हैं, कोई विकट समस्या फन उठाती है, और उससे जनजीवन प्रभावित होता है तो उससे निजात पाने के लिए चिंतन प्रारम्भ हो जाता है, चिंतन गोष्ठियां आयोजित की जाती है, चिंतन शिविर लगाए जाते हैं।''

लेखक की इतिहास दृष्टि और विश्लेषणपरकता का प्रभाव अन्य व्यंग्य लेख ''रामचंद्र कह गए सिया से'' में मिलता है जहां वे कहते हैं ''यज्ञो पर इनकी गहरी आस्था है, इनका मानना है कि जब यज्ञ करने से सन्तानोपत्ति संभव हो सकती है, तो चुनाव जीतना कौन सी बड़ी बात हे? यज्ञ करना हमारी प्राचीनतम सनातनी परम्परा है, इनका विश्वास है कि यज्ञ सारी आपदाओं से निजात पाया जा सकता है।''

मीडिया का पतन और उस पतन से पड़ने वाले सामाजिक प्रभाव की बानगी उनके लेख ''ट्रिपल एट और खबरी चैनल'' में देखी जा सकती है यह व्यंग्य एक लोक प्रचलित कहानी से शुरू होता है जिसमें एक खरगोश यह कहते हुये भाग रहा है कि भागो

दुनिया खत्म होने वाली है और उसके पीछे-पीछे बिना विचार किये अकारण भालू, शेर, हाथी, शेर, हाथी, हिरण भागने लगते हैं। कहानी के बहाने वे कहते हैं ''8 अगस्त सन् 08 को रात्रि बजकर 08 मिनट और 08 सेकेन्ड पर चीन ने बीजिंग ओलम्पिक खेलों की शानदार शुरूआत की, और निः शब्द नीले आकाश में इन्द्रधनुषी छटा बिखेरते हुए दुनिया खत्म होने के समाचारों का पहाड़ा पड़ने वाले खबरिया चैनलों के मुंह में अच्छी खासी कालिख मल दी।''

नौकरशाही की विद्रूपता पर अरुण नामदेव की दृष्टि निरंतर रहती है। विशषतः पुलिस तंत्र के भ्रष्टाचार को वे बड़ी बारीकी से छीलते हैं। जैसे कि हरिशंकर परसाई कृत ''रामसिंह की ट्रेनिंग'' और ''इन्सपेक्टर मातादीन चाँद पर'' अकस्मात याद आ जाते हैं। ''अब चोर पुलिस की ओर भागते हैं'' में वे कुछ इस तरह चित्र खींचते हैं कि ''पहले चोरी-चपाटी, जेबकतरी होने या अपराधियों से सताए जाने पर लोग पुलिस के पास जाते थे। अब ऐसा नहीं होता अब चोर, उचक्के, जेबकतरे और अपराधी तत्व पुलिस की उपस्थित से काफी आश्वस्त रहते हैं, निर्भय होकर अपने कार्य को अंजाम देते हैं। निर्भय होकर अपने कार्य को अंजाम देते हैं। पकड़े जाने पर ए पुलिस की ओर भागते हैं। क्योंकि उन्हें पता होता है कि पुलिस उन्हें जनता के कहर से बचा लेगी। पुलिस वाले इन्हें सरण और संरक्षण प्रदान करते हैं। ये तत्व पुलिस की अतिरिक्त आय का प्रमुख स्त्रोत होते हैं।''

इसी तरह ''सावधान हम सुधर रहे हैं'', में उन्होंने पुलिस में सुधार कार्यक्रमों की तबीयत से खबर ली है। खबर लेने के मामले में वे लोकतंत्र और भ्रष्ट राजनीति को जरा भी नहीं बख्शते। उन्हें कलियुग में भ्रष्ट्राचार का बाज हर तरफ दिखाई देता है। शुद्ध के लिये युद्ध भी जहां दिखाई देता है, एक तमाशा बनकर रह जाता है।

अरुण नामदेव के व्यंग्य में धार तीखी होने के साथ मीठी भी लगती है। उनकी वक्रोत्ति में कुंतक के कहे अनुसार सहृदयों को आह्लादित करने की क्षमता है। पुस्तक में संकलित लेखों में चारूता, मनोज्ञता, मनोरंजकता और वाग्वैदग्ध्य है और सबसे बड़ा गुण सहजता है जिसे उन्होंने कविताओं, शेर-ओ-शायरी के उद्धरण से रोचक एवं मुहावरे और लोकोत्तियों से चटपटा बनाया है। ये लेख उस पाठक जरूर निराश कर सकते हैं जो इस फलसफे में यकीन करता है कि ''गालिब दुनिया में वाहिद शायर है जो समझ में न आये तो दुगुना मजा देता है।''

अरुण नामदेव का व्यंग्य समझने में भी आता है, मजा भी देता है और सबसे अव्वल बात ये है कि वो हमारे भीतर देश-दुनिया की समझ बेहतर करता चलता है। हिन्दी साहित्य का संवेदनशील पाठक इस पुस्तक में संकलित लेखों से रसास्वादन के अतिरिक्त अपनी संवेदना का विस्तार करने में भी सक्षम होगा ऐसी आशा है।

हनुमंत किशोर
बी-46 चग्गर फार्म, तिलहरी

''अपनी बात''

साहित्य की अनेक विधाएँ होती हैं-यथा कहानी कविता, गीत उपन्यास,अत्मकथा,संसमरण आदि साहित्य की ये समस्त विधाएँ कभी मरती नही वे अपने पाठकों, लेखकों, आलोचकों समीक्षकों और प्रशंसकों के बीच सदैव जीवन्त बनी रहती हैं। इन्ही विधाओं और प्रंशसकों के बीच सदैव जीवन्त बनी रहती हैं। इन्हीं विधाओं में व्यंग्य भी एक मुश्किल विधा है, हास्य से इसका सम्बन्ध है जरूर फिर भी व्यंग्य एक अलग विधा है। हास्य में सिर्फ हँसाने के ही प्रयास होते हैं। वहाँ तर्क, बुद्धी, हकीकत का कोई उपयोग नही होता चूँकि व्यंग्य एक गंम्भीर विधा है अतः इसका सम्बन्ध जीवन के यथार्थ से भी है। जीवन के यथार्थ में कल्पना का पुट मिलाकर जो तैयार किया जाता है वही व्यंग्य है। या यूँ कहें कड़वी हकीकत को मीठी गुदगुदी शैली में करना भी व्यंग्य का एक स्वरूप हो सकता है। हिंदी में संत-साहित्य से व्यंग्य का आरम्भ माना जा सकता है। कबीर व्यंग्य के आदि प्रणेता हैं।

जब मैं ठाकुर रणमत सिंह हायरसेकेण्डरी स्कूल कोठी में कक्षा-९ वीं में अध्ययन कर रहा था उस समय हमें श्री दिनेश मिश्रौलिया जी हिन्दी पढ़ाया करते थे उनकी वाक्य शैली बहुत ही मनोविनोद पूर्ण व्यंग्यात्मक होती थी। पढ़ाते समय जब वह किसी छात्र से रुष्ठ हो जाते तो उसका ध्यान अपनी ओर आकृष्ठ करने के लिए ऐसे शब्दों वाक्यों का प्रयोग करते की वह भरी कक्षा में अपने आको शार्मिंदा महसूस करता और अन्य छात्रों को खूब हँसी आती। उनकी इस व्यंग्यात्मक मनोविनोद पूर्ण वाक्यशैली ने मेरा मन व्यंग्य की ओर आकर्षित हुआ यहीं से मेरी अभिरुचि व्यंग्य विधा की ओर बढ़ीं और मैं व्यंग्यकारों को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया।

इस क्रम में मैंने उपलब्ध व्यंग्यकारों में शरद जोशी, लतीफ घोंघी, शंकर पुणतंबेकर, प्रेम जनमेजय, नरेन्द्र कोहली, खट्टर काका, बालकृष्ण भट्ट, बेचैन शर्मा उग्र, आलोक पौराणिक, ज्ञान चतुर्वेदी आदि को पढ़ा लेकिन मुझे ओ धार ओर मारक क्षमता

नहीं मिली जिसकी मुझे तलाश थी। इसी समय मेरी मुलाकात और परिचय देवीशरण ग्रामीण जी के सौजन्य से व्यंग्य के पुरोधा कहे जाने वाले और व्यंग्य को साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने वाले व्यक्तिव हरिशंकर परसाई जी से हुई। यह बात तब की है जब मैं विज्ञान स्नातक की पढ़ाई पूरी कर सन् 1976 में सहायक शिक्षक बना और मेरी नियुक्ति नाशौद के पास स्थित शासकी माध्यमिक शाला श्वैरुआ में हुई। यहीं मेरी मुलाकात एक कवि गोष्ठी में ग्रामीण जी से हुई फिर तो यह सिलसिला निरन्तर आंगे बढ़ता गया।

मेंरी कविताओं को सुनकर ग्रामीण जी बोले कि तुम्हारी कविताओं में व्यंग्य का पुट रहता है इसलिए तुम व्यंग्य भी लिख सकते हो। इसके लिए तुम्हें व्यंग्यकारो को पढ़ना चाहिए वर्तमान समय में हरिशंकर परसाई बहुत अच्छे व्यंग्यकार हैं उनमें तीक्ष्ण और लोगों को तिलमिला देने वाली मारक क्षमता है। वो विसंगतियों विद्रुपताओं, पाखण्ड आदि के जड़ (मूल) पर प्रहार करते हैं। उन्ही ने मुझे इनकी कुछ पुस्तकें भी दीं। समय-समय पर वह जबलपुर में मुझसे मिलवाते ही रहते। परसाई जी ने मुझे लेखन कला-और रचना कौशल का पाठ पढ़ाया, व्यंग्यलेखन की बारीकियों को समझाया बस यहीं से मेरे व्यंग्य लेखन की शुरुआत हुई। मेरा सबसे पहला व्यंग्य सतना से प्रकाशित आनन्दी अग्रवाल के पेपर सतना टाइगई' में छपा जिसके सम्पादकीय विभाग में बाबूलाल दाहिया (पद्यमश्री सम्मानित) के सुपुत्र सुरेश दाहिया थे। इसी के साथ प्रारम्भ हुआ विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में मेरे व्यंग्य लेखन के प्रकाशन का सिलसिला मैं कृतज्ञ हूँ- सतना-टाईगर, स्टार समाचार नव भारत, नव स्वदेश, देशबन्धु,दैनिक जागरण, आदि समाचार पत्रों और, लखनऊ से प्रकाशित पत्रिका झुनझुन रीवा से प्रकाशित पत्रिका अपनयन, सतना से प्रकाशित पत्रिका शब्दशिल्पी और अट्टहास का जिनमें निरन्तर व्यंग्य लेखन का प्रकाशन होता रहा।

मैं परम आभारी हूँ आदरणीय हनुमन्त जी का जो उम्र में मुझसे छोटे होते हुए विद्या, बुद्धि, विवेक और साहित्यक समझ में मुझसे बहुत बड़े हैं उन्होंने मेरे आग्रह पर मेरे व्यंग्य ''संग्रह झूठ का सौंदर्य'' पर भूमिका लिखने के लिए अपना महत्वपूर्ण समय दिया। मैं आभारी हूँ श्री विवेक द्विवेदी जी का जो मुझे निरन्तर पुस्तक प्रकाशन की प्रेरणा देते रहे। अपने अनुज अखिलेश नामदेव और अनिल देव के प्रति अपना स्नेह प्रगट करता हूँ जो मुझे लेखन के लिए निरन्तर प्रेरित और प्रोत्साहित करते रहे।

मैं आभारी हूँ उन सभी साथियों मित्रों, सुभचिंतको आलोचकों एवं साहित्यकारों का जिनके प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रोत्साहन से यह संग्रह '' झूठ का सौन्दर्य'' का प्रकाशन संभव हो सका।

अपनी व्यंग्य कृति ''झूठ का सौंदर्य'' में संग्रहित व्यंग्य लेखों के माध्यम से - सामाजिक कुरीतियों बुराइयों राजनैतिक विद्रुपताओं आर्थिक असमानता सामाजिक कुरीतियों धार्मिक अन्धविश्वास पाखण्ड, कर्मकाण्ड आदि विसंगतियों को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया है।

यह रचना कृति मैं अपने कुल की नई पीढ़ी पुत्र आनंद पुत्रवधू संध्या मझले पुत्र अनुराग पुत्रवधू प्राची, सब से छोटे पुत्र आलोक पुत्रवधु रुची और भतीजे क्षितिज बहु आकांक्षा, भतीजे- आदित्य व आकर्ष को समर्पित है ताकि ये ऐसी विसंगति और विकारों से बचे रहें इस समर्पण में अभिराज, अमिका तथा क्षिप्रा भी सामिल है।

मैं परम आभारी हूँ अपनी बेस्टहाफ श्रीमती सरोज नामदेव का जिनके सहयोग सम्बल समर्थन और समर्पण से मेरी साहित्य साधना संभव हो सकी।

कृति में आलोचना, समालोचना, समीक्षा प्रतिक्रिया के अवसर हैं पाठक यथारुचि मुझे बता सकते हैं इसके लिए अग्रिम आभार।

दिनांकः 29 अगस्त 23

स्वास्तिक ग्रीनसिटी -एफ-24
शहडोल (म0प्र)
पिन-484001

अरुण नामदेव
मो0 8815715145

तमाशा लोकतंत्र का

भारत एक लोकतांत्रिक देश है। आजादी के बाद से यहां जो शासन व्यवस्था अपनाई गई उसका नाम लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था है। जिसे प्रजातंत्र,जनतंत्र के नाम से भी जाना जाता है। जिसका मतलब लोगों की, लोगों के द्वारा, लोगों के लिए बनाई गई सरकार होता है। अब यह लोगों के लिए बनाई गई सरकार, कितने लोगों की है। यह तो लोग ही जानें। कुछ ग्यानी-मानी लोग इसे जनता को बहला फुसलाकर,दंड-भय दिखाकर,पैसों का लोभ-लालच देकर सत्ता हथियाने का तंत्र भी मानते हैं। इस लोकतंत्र को बनाये रखने के लिए निरंतर चुनाव होते रहते हैं। आज कल चुनावों का मतलब, बैनर-बिल्ले, झण्डे-डंडे, पोस्टर-भाषण,आदि का रौब जमाकर जीत हासिल करना हो गया है। चुनाव नहीं होते तो घपले और घोटाले होते हैं। हमारें यहां जननेता या लोकनेता नहीं राजनेता होते हैं। यहीं चुनाव लड़ते लड़वाते हैं। यही जीतते हैं और सरकार बना कर जनता पर राज करते हैं। भारतीय लोकतंत्र की सबसे बड़ी देन देश में गाजरघास की तरह उगते राजनैतिक दल और टिड्डी दल की तरह मंड़राते नेता है यहां गाजरघास की तरह कुकुरमुत्ते का भी प्रयोग किया जा सकता था, पर उससे नेताओं की ज्यादा भद्द होती । यहां लल्लू साहब,पंजू साहब,याने जो भी 18 वर्ष की आयु पूरी कर व्यस्क हो गया है। चुनाव लड़ सकता है। वयस्कता के अलावा और कोई अन्य योग्यता या मानदंड का निर्धारण नहीं है हमारे यहां। हमारे देश में चुनाव में खड़ा नेता अपने भाषण में जो चाहे बोल सकता हैं। जैसा चाहे वैसा बोल सकता है। जितना चाहे उतना बोल सकता है। जहां चाहे वहां बोल सकता है, बोलना उसका लोकतांत्रिक अधिकार है। अभी चुनाव के समय हमारे वर्तमान पीएम महोदय ने जगह-जगह अपने चुनावी भाषण में बोला, अगर हम जीत गए तो भ्रष्टाचार मिटाएंगे। कालाधन वापस लाएंगे, हमें जिताओ अच्छे दिन आएंगे। सो भइया न कालाधन सफेद हुआ न अच्छे दिनों के ख्वाब ही पूरे हुए। परिणाम वही ''ढाक के तीन पात''। अपना भाषण देते हुए एक केन्द्रीय स्तर की सुश्री मंत्री महोदय ने कहा की आप रामजादों की

सरकार चाहते हैं या हरामजादों की। जनता ने इसे बड़े ध्यान-धर्य से सुना सहा और तालियां बजाई। एक युवा नेता ने ओजस्वी मुद्रा में कहा-अगर मैं जीत गया तो देश में क्रांतिकारी परिवर्तन लाऊगा, चारों तरफ सुख संबृद्धि की गंगा बहा दूंगा। भूखे नंगे और वंचित लोंगो का अस्तित्व इस पृथ्वी से मिटा दूंगा। मेरे जैसा-नेक, ईमानदार, दयालू, कोमल हृदय,विनयी, संवेदनशील प्रतिनिधि आप ढूंढ़ते रह जाएंगे। उसके इस वक्तव्य पर भी जनता नें खूब तालियां बजाई। तालियां बजाना, और वोट देकर चुनाव जिताना जनता का लोकतांत्रिक अधिकार है। वह जिसे चाहे उसे चुनाव जिताए। यहां की जनता नें तो किन्नरों तक को चुनाव जिताने के कीर्तिमान रचे है। हमारे यहां का लोकतंत्र लोकतांत्रिक कम और नेतांत्रिक ज्यादा है। यहां जो भी करते हैं नेता करते हैं। हमारे यहां के लोकतंत्र में जनता के पास इतनी ताकत तो नहीं कि वह नेताओं की नीतिओं पर सवाल खड़ा कर सके। इस मामले में हमारे देश की जनता कुछ ज्यादा ही मासूम है। इसीलिए ये चतुर सुजान नेता उसे उल्लू बनाकर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। यहां जितने भी नेता जनता की भलाई का पहाड़ पढ़कर संसद में आते है, जन सेवा भूलकर अपने स्वार्थ की कपास ओटने में व्यस्त हो जाते हैं।

सियासत साहों की प्रेतलीला

वर्तमान भारतीय राजनीति समय के बहुत ही नाजुक और संवेदनशील दौर से गुजर रही है। इसकी उदारता और सहिष्णुता पर चौतरफा आघात हो रहे हैं। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने एक ऐसी औदात्त राजनीति का सपना देखा था जिसमें भारतवर्ष की मूल संस्कृति के प्रमुख आदर्शो के साथ प्रत्येक व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास निहित हो। लेकिन हमारे देश की वर्तमान राजनीति आज ऐसे दुखद मोड़ पर खड़ी है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति के विकास के स्थान पर व्यक्तिगत स्वार्थ,पदलिप्सा, निरंतर अपने अंगद पैर जमाती जा रही है। प्रजातंत्र आज राजनीतिज्ञों के हाथ की कठपुतली बनता जा रहा है। आज की सियासत सपनों की सियासत हो गई है। झूठे सपने दिखाकर जनता को बरगलाना और वोट हासिल कर जीत अर्जित करना ही इनका मूल्य उदेश्य हो गया है। हार जाने पर प्रतिरोध की राजनीति प्रारंभ कर देते है। वर्तमान राजनीति अपने स्वस्थ परंपरा से हटकर अति दक्षिणपंथी, प्रतिक्रियावादी और रूढ़ होती जा रही है। धन, धर्म एवं धौंस का प्रभाव बढ़ता जा रहा है। केन्द्रीय सत्ता लगातार दौलत सम्राटों की खुसामद करती नजर आती है। सेकुलर, मध्यमवर्गीय, वामपंथी तथा प्रगतिशील लोंगो का राजनैतिक स्पेस सिकुड़ता जा रहा है। आज की राजनीति भ्रष्टचार,लांक्षन, चरित्र खंडन और आरोप प्रत्यारोप के जिस दौर से गुजर रही है उसे देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि-भारतीय राजनीति का भविष्य बहुत बच्छा होगा। झूठे वादे और आश्वाशनों से जनता को भरमा कर राज करने की मनोवृत्ति वाले लोग राजनीति का बेड़ा गर्ग करने पर तुले है। वर्तमान राजनीति काजल की एक ऐसी कोठी है। जिसके अन्दर जो भी जाता है दागी हो जाता है। यह नमक की एक ऐसी खदान है जिसमें जो भी जाता है गल जाता है। विडंबना यह है कि आकंठ भ्रष्टाचार करने, उच्च राजनैतिक पद प्राप्त करने की होड़ में लोग इसमें निरंतर धंसते चले जा रहे है। हमारा देश तेजी से सत्ता के दुरूपयोग के युग में प्रवेश करता चला जा रहा है। वोट की मूल्य हीन राजनीति आम आदमी के सपनों और आकांक्षाओ को अजगर की तरह निगलती चली

जा रही है। हर दल मूल्यों की दुहाई देकर दूसरे दल को नसीहत देते हैं। लेकिन जब खुद की बारी आती है तो वही नैतिकता और मूल्य स्वार्थ की आग में कपूर की तरह स्वाहा हो जाते हैं। स्थिति एक '' नाग नाथ'' दूसरा '' साँप नाथ'' वाली है। दोनो ही जनता के विश्वास को डस रहे हैं। दलों के दल-दल में सब कुछ खत्म होता जा रहा है। सत्ता सुख का भोग करने के लिए हर व्यक्ति हर दल अपनी अस्मिता खो कर हर तरह के समझौते कर रहा है। सत्ता हासिल करने के लिए धर्मनिरपेक्षता की दुहाई देने वाली पार्टियां साम्प्रदायिक दलों की गोद में जा बैठती है। हिन्दुत्व का पहाड़ पढ़ने वाली पार्टियां सत्ता के लिए धर्म-निरपेक्ष दलों की पालकी को कंधा देने से भी नहीं हिचकिचाती। सत्ता और विपक्ष दोनों की प्राथमिकताएं बदल गई हैं। दोनों के केन्द्र में लोक सेवा नहीं स्वार्थ है। सत्ता और स्वार्थ की राजनीति का ज्वलंत उदाहरण तात्कालिक रूप से बिहार में देखा जा सकता है। न इन्हे जन की चिंता है न जनतंत्र की यह सब अपनी-अपनी कुर्सी की चिंता में व्यस्त है। इनकी इस प्रेतलीलाओं से समूचा राष्ट्र त्रस्त है।

मंगल ग्रह का पानी

मैं सेवानिवृत्त हुआ तो मेरे बेटे ने मुझसे 10 एक साल पुराना बटन दबाने वाला मोबाइल फोन छीनकर उंगली रगड़ने वाला नया स्मार्टफोन उपहार स्वरूप थमा दिया, बोला अब आप पुरानी दुनिया से निकलकर नए इलेक्ट्रानिक युग का आनंद उठाइये। इसमें जब चाहें, जिससे भी चाहें चैटिंग कर सकते है। फेसबुक और व्हाट्एप का उपयोग कर अपना मनोंरजन कर सकते हैं। ट्विटर में ट्वीट्स कर अपनी बात देश दुनिया तक पहुँचा सकते हैं। तब से मैं इस स्मार्टफोन को रीछ के पांव की तरह पकड़े उंगली रगड़ता रहता हूं।

ऐसे ही एक दिन इसमें मंगल ग्रह में पानी होने का संदेश आया जिसे मैं बड़े गौर से पढ़ रहा था, तभी हमारे परममित्र प्यारेलाल जी आ धमके बोले, अमा यार यह मोबाइल में आँखे गड़ाए बड़े ध्यान से क्या पढ़ रहे हो। मैनें कहा ''मंगल ग्रह में पानी'' होने का समाचार। यह सुनते ही वह तपाक से बोले हो गया कल्याण। मैने पूछा वह कैसे, तो उन्होंने मुझे समझाते हुए कहा, अब इस मंगल ग्रह के पानी पर राजनीति होगी। मंगल ग्रह के पानी पर राजनीति भला वह कैसे। वह बोले देश के भाग्य विधाता जनता के सामने इस मंगल ग्रह के पानी पर किस तरह की प्रतिक्रिया जता सकते हैं वह काबिले गौर है। पहले मोदी जी को लेते हैं, वह कहेंगे मित्रों! सड़सठ साल हो गए देश को आजाद हुए। आज तक क्या मंगल ग्रह में पानी मिला? (जनता, नहीं मिला) तो अब मंगल ग्रह पर पानी मिलने के बाद आप से पूछना चाहता हूं कि आपको बुद्ध पर पानी चाहिए कि नहीं चाहिए (जनता, चाहिए), शनि पर पानी चाहिए कि नहीं चाहिए (जनता,चाहिऐ), तो आप देश में होने वाले चुनाव में नितीश लालू को हराइए मैं आपको शनि,बुद्ध, मंगल तो क्या रवि तक में, पानी ढूंढ कर दूंगा। (जनता, मोदी-मोदी पानी-पनी), ये तो हुए पी.एम। साहब।

अब राहुल जी मंगल ग्रह के पानी पर क्या कहेंगे, वह भी सुन लें। राहुल- पानी,

ऐ पानी क्या होता है? ये जो मंगल ग्रह का पानी है, वह किसानों और मजदूरों का पानी है। लेकिन यह सूट-बूट की सरकार इस पानी को सिर्फ पूंजीपतियों को पिलाना चाहती है। हम ऐसा हरगिज नहीं होने देंगे। केजरीवाल कहेंगे-ये पानी तो दिल्ली का है। इस पानी को हम आम आदमी तक पहुंचाना चाहते हैं। पर केन्द्र एलजी के माध्यम से इसे आप तक पहुंचाने में रोड़ा अटका रही है। लालू जी कहेंगे-ये जो मंगल, बुद्ध, वृहस्पति, शुक्र, शनि पर पानी की रट लगाते हैं। इस पर पहला हक दलितों का है। इस पर रिजर्वेशन चलेगा। हम इसे कभी केशरिया होने नहीं देंगे। हम बिहारी लालू हैं। सबसे पहले इस पानी का उपयोग बिहारी जनता करेगी। हम इसे अकेले किसी को ढकोसने नहीं देंगे,तो समझ गए न मंगल ग्रह के पानी पर देश के लोकतंत्रावतारों की लोकतांत्रिक सियासत। मैं हक्का-बक्का सा प्यारेलाल का मुह ताकता रह गया।

दिल्ली शहर का चुनाव देखो

होली के फागुनी मधुमास में संम्पन्न होने जा रहे दिल्ली विधानसभा के चुनाव इनदिनों देश दुनिया में मनोरंजन के भरपूर साधन परोस रहे है। बस दूरदर्शन के खबरी चैनल खोलके बैठ जाइये और दिन भर मुफ्त में मनोरंजन कीजिए। वैसे तो राजनीति के हर चुनाव अपने आप में ही एक मनोरंजन कार्यक्रम होते हैं लेकिन इन दिनों दिल्ली विधानसभा के चुनाव विशेष आकर्षण के केंन्द्र हैं। जब पक्ष और विपक्ष के बीच शब्दों-अपशब्दों-कुशब्दों और आरोप-प्रत्यारोप के दौर चलते हैं तो ऐसा लगता है मनो जवाबी कब्बाली चल रही हो। इस बार का दिल्ली चुनाव कुछ और ही विशिष्ठ है। यहां सत्ता रूपी सीता का वरण करने के लिए हर रावण साधु का वेश धारण कर जनता को रिझाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं। इस चुनाव की एक महत्वपूर्ण बात और है वह यह की भारतीय जनता पार्टी ने अपने महानायक को इस चुनाव में मुख्य भूमिका नहीं दी है। जिन्होने लोकसभा से लेकर अब तक भाजपा को विजय श्री प्रदान की है। इस बार उन्होनें अपनी रणनीति बदलते हुए पूर्व पुलिस अधिकारी किरण बेदी को सीएम पद का उम्मीदवार बनाया है। किरण बेदी अपनी सक्रियता और नाटकीय कार्यशैली के लिए जानी जाती हैं। इसलिए भाजपा को यह लग रहा है। अरविंद केजरीवाल की अति सक्रियता और नाटकीयता का मुकाबला वही कर सकती हैं। सो भइया अब भाजपा ने किरण बेदी के गले में घंटी बांध दी। इस वजह से भाजपा के वरिष्ठ नेताओं में अंदरूनी अनबन भी है। इस चुनाव की दूसरी विशेषता यह है कि भाजपा ने अपनी पूरी ताकत अपनी पूरी समर्थ और हिकमत केजरीवाल के खिलाफ केंद्रित कर दी है। कांग्रेस हासिए पर खड़ी हाफ रही है। अब दिल्ली देश की धड़कन और राजधानी होने के कारण यहां अन्य प्रदेशों की तरह बिजली, पानी और सड़क की समस्याएं तो हैं नहीं की जिसे चुनावी समर का मुद्दा बनाया जा सके। सो व्यक्तित्व खंडन ही एकमात्र मुद्दा था। पर पता नहीं भाजपा को क्या सूझा जो उन्होंने अन्ना हजारे की फोटो पर

माला चढ़ाकर खामखां बैठे-बैठाये एक मुद्दा मोल ले लिया है। यह तो वही बात हुई कि आ बैल मुझे मार। हां यहां गरीबी और झुग्गी झोपड़ी में रहने बालों की समस्याएं जरूर हैं जिनका इलाज किसी के पास नहीं है। ना ही किसी ने इसे अपना मुद्दा बनाया। अगर यहां की सीएम किरण बेदी बनती हैं तो वह अपने प्रशासनिक नेचर के कारण सदैव सुर्खियों में रहेगी और उनसे सबसे ज्यादा पीड़ित भाजपा के ही लोग होंगे और अगर केजरीवाल सीएम या नेता प्रतिपक्ष बने तो वह दोनो ही स्थितयों में धरना प्रधान राजनीति करेंगे। इस चुनाव में सबसे गंभीर स्थिति कांग्रेस की है, जिसकी कोई बात तक नहीं कर रहा। जबकि अपने पंन्द्रह साल के शासनकाल में दिल्ली का काफी विकास भी किया लेकिन इस युग के महानायाक द्वारा उनकी उपलब्धियों को शून्य करार दिया जा रहा है। अब कांग्रेस है कि उसे अपनी उपलब्धियाँ गिनाना भी नहीं आ रहा तो सबसे मनोरंजक स्थिति कांग्रेस की ही हुई न। इस सब के बावजूद दिल्ली में चुनावी बसंत के मौसम में फागुनी तराने छाने लगे हैं। अबीर गुलाल के स्थान पर अपशब्दों और आरोप प्रत्यारोपों की भरमार है। अब देखना यह है की इस फागुनी मधुमास होली में विजय गुलाल किस के माथे पर सुशोभित होता है।

बज गया बिगुल चुनाव का

सन् 2014 चुनावी वर्ष रहा। अभी हाल ही में विधानसभा व लोकसभा के चुनाव संपन्न हुए। उनसे फारिंग हुए तो नगरीय निकाय के चुनावों का बिगुल बज गया। भारत में नगरीय निकाय और त्रिस्तरीय पंचायती चुनाव धूर्त कीर्तियों, धनधिपतियों, अवसरवादियों,चाटुकारों और दलालों के लिए परम सम्वृद्धि एवं सौभाग्य का तथा सामान्य प्रजा के लिए चरम दुर्गति व दुर्भाग्य का समय होता है। लोकसभा, विधानसभा के चुनाव, स्थानीय निकायों के चुनाव से इस रूप में भिन्न होते हैं की इन बड़े चुनावों मे दलगत दबंग प्रत्याशी ऊंचे-ऊंचे मंच सजाकर एक दूसरे की पोल खोलते हैं। विशाल जनसमुदाय के सामने उनके काले कारनामों का काला चिट्ठा खोलते है। स्थानीय निकायों के चुनाव में स्थित इसके विपरीत होती है। क्योंकि प्रत्याशी स्थानीय होने के कारण वोटर उसके सारे उल्टे-सीधे, जायज-नाजायज क्रिया कलापों से भली-भांति परिचित होते हैं। स्थानीय निकाय के प्रत्याशियों को घर-घर जाकर अपनी उन्नत नाक रगड़ते हुए वोटों की याचना करनी पड़ती है, जबकि बड़े चुनावो में प्रत्याशी का काम दांत निपोरते हुये हाथ जोड़ने से ही चल जाता है। ये दोनो ही चुनाव वायदा फरोशी के मामले में एक समान होते हैं। नगरीय निकाय चुनाव बड़े चुनावों की अपेक्षा ज्यादा संवेदनशील होते हैं। इसमें भात मांगो तो पुलाव मिलता है, मोबाइल मागों तो लैपटॉप मिलता है। चुनाव के पूर्व सभी सत्ता साधक जनता से बड़े-बड़े इंद्रधनुषी वादे करते हैं। आश्वासनों के सुंदर हवाइ किले बनाते हैं। किन्तु चुनाव जीतते ही अपनी औकात में आ जाते हैं। जनता से किए गए वादों को भूलकर अपने और अपने परिवार के लोगों के लिए भोग विलास और ऐश्वर्य के साधन जुटाने में लिप्त हो जाते हैं। चुनाव हमारे देश में नेताओं के झूठ बोलने के कला कौशल की अग्नि परीक्षा होती है। हमारे देश के नेताओं की काया में गिरगिट की आत्मा प्रवेश कर गई है। इसी वजह से वह अवसरानुकूल अपना रंग बदलने की क्रिया में परम प्रवीण हैं। झील सी गहरी आंखों

में घड़ियाल का वास है, जिससे यह बड़े ही सहज भाव से घड़ियाली आंसू बहा लेते हैं। कान सर्पीले हैं जिससे इन्हें शोषित-पीड़ित जनता की आवाज सुनाई नहीं देती। हाल ही में संपन्न होने जा रहे नगरीय निकाय के चुनावी समर में पर्चा दाखिल करने और वापस लेने का समय गुजर गया। चुनाव में कुछ दबंग किस्म के प्रत्याशी मैदाने जंग में जोर आजमाइश कर रहे है, तो कुछ प्रत्याशियों के वोट मांगने के तरीके भिन्न -भिन्न हैं। दबंग प्रत्याशी वोटरों को डरा धमकाकर वोट अपने पक्ष में डलवाने के लिए विवश कर रहे हैं तो दब्बू किस्म के प्रत्याशी दबे पांव घर-घर जाकर अनुन्य विनय के साथ वोटों की याचना कर रहे हैं। मेरे एक मित्र हैं प्यारेलाल। वह अपनी उलटवंशी हरकतों के लिए कुख्यात हैं। मैं उन्हीं के घर में बैठा वर्तमान चुनाव की दशा-दिशा पर विचार विमर्श कर रहा था। की इस बार के चुनाव में कुछ दलगत प्रत्याशियों को दल से टिकिट न मिलने के कारण बागी बन कर निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में अपनी ताल ठोंक रहे हैं। उनका मानना है कि अगर कहीं येन-केन-प्रकारेण चुनाव जीत गए तो पार्टियां खुद चमेली का तेल लिए उनके आगे पीछे घूमेगी। विचार विमर्श की इस धारा में ''दाल-भात में मूसर चंद '' की तरह एक दबंग किस्म के प्रत्याशी अपने दल बल के साथ आ धमके। प्यारेलाल जी को एक पर्चा पकड़ाते हुए हाथ जोड़कर बोले। देखिए प्यारेलाल जी इस बार आपका और आप के सारे परिवार का बहुमूल्य वोट हमें ही मिलना चाहिए। हम आप का शुभ आर्शीवाद लेने आये हैं। यह सब देख सुन कर प्यारेलाल जी हक्का-बक्का रह गए। उनके दिमाग की बत्ती सहसा जल उठी। वह सोचने लगे की या अल्लाह यह अचानक इनको क्या हो गया है? जो कल तक सीधे मुंह बात नहीं करते थे, जिनको लोग खुद अपना शरीर घुटनो तक मोड़कर प्रणाम करते थे, वे आज खुद यह कृत्य कर रहे हैं। जरूर दाल में कुछ काला है। तभी उन्हें चाणक्य की एक बात याद आई ''अगर किसी के व्यवहार में अचानक परिवर्तन आ जाए तो समझ लेना चाहिए की कुछ गड़बड़ जरूर होने वाला है। वह मानो सोते से जाग गए फिर पर्चा पढ़ते हुए बोले-श्रीमान जी इसमें आपने लिखा है,कि जहां - जहां ज्यादा ठंण्ड पड़ती है वहां हर घर में हीटर लगवा देंगे, जहां बाढ़ आती है वहां की वर्षा को नियंत्रित कर देंगे, जहां सूखा पड़ता है वहां नदियों का जाल बिछा देंगे, हम भिखारियों का दाता और कंगालों को करोड़पति बना देंगे, हम दफ्तरों में अफसर और बाबू को एक साथ बिठाएंगे, ताकि अफसर, बाबू के न होने और बाबू अफसर के न होने का बहाना बनाकर काम के लिए टाल मटोल न कर सकें। क्या ये सारे वादे आप पूरे कर पायेगे? इस पर प्रत्यासी महोदय आंख तरेरते हुए बोले देखिए प्यारेलाल जी जो कुछ पर्चा में

लिखा है उसे भूल जाइए और बस इतना याद रखिए की वोट सिर्फ हमे ही देना है! रही वादों की बात तो वादे हमेशा चुनाव जीतने के लिए किये जाते हैं पूरा करने के लिए नहीं। देश के बड़े-बड़े नेता यही करते हैं। चुनाव एक लाख खर्च कर के एक करोड़ कमाने का जरिया है। यही चुनावी सत्य है......

बज गया बिगुल चुनाव का, नेता हुए सचेत
फिर जनता की आंख में झोंकेंगे ये रेत।

माडलीकरण पर उतारू भारत

आजकल हमारा देश माडलीकरण के दौर से गुजर रहा है विकसित देशों के विकसित प्रांतो के तर्ज पर भारत जैसे विकास शीलदेश के विभिन्न प्रांतों के नगरों का माडलीकरण किये जाने की योजनाएँ प्रस्तावित हैं। जिसके लिए करार भी किये जा रहे है। जैसे-चीन के संघई प्रांत के तर्ज पर मंबई का माडलीकरण चीन कीही राजधानी ग्वांगडोंग के तर्ज पर अहमदाबाद का माडलीकरण शामिल है। हमारे माननीय पी.एम.जी जापान गए तो वहाँ से दो चार मॉडल सलेक्ट कर लाये। टीवी सीरियल वल्फों का विज्ञापन करते हुए असरानी जी कहते है सारे घर के बदल डालूँगा कुछ उसी तर्ज पर हमारे पी.एम जी भी पूरे देश का माडलीकरण करने पर उतारू हैं। बनारस को तो पहले ही स्मार्ट ट्रेन चलाने का एजेंडा भी योजना में शामिल है पी.एम जी जहाँ भी जाते हैं जो चीज भाती है उठा लाते है। अब वह दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया के तमाम माडलीकृत देशों का अजायब घर बन जायेगा। विश्व गुरू कहा जाने वाला देश भारत विकाश हेतु विकसित देशों का पिछलग्गू होने जा रहे है। हमें प्रगतिशील होने से कोई नहीं रोक सकता। हम प्रगतिशील होकर ही रहेंगे। प्रगतिशील हमारा जन्म सिध्य अधिकार है। अभी तक भारत प्रगति के लिए तरसता रहा है अब उसके अच्छेदिन आने वाले हैं। बिजली,पानी सड़क और श्राव्थ के लिए तरसते गाँव का विकाश बाद में करेंगे, पहले नगरों का माडलीकरण हो जाय द्य यह तो अंदर की बात है नीतिगत मामला है। अभी तक हमारी गिनती पिछड़ो में है। प्रस्मावित नगरों का माडलीकरण होते ही हम भी चीन, जापान अमेरिका और रूस की तरह विकसित हो जाएँगे। हमारी गिनती भी विकसित राष्ट्रों में हो ने लगेगी देश विकशित होगा तो जनता भी विकसित हो जायेगी, यह विकाश का आधुनिकतम सिध्यांत है। तब हम 56 इंच का सीना तान कर कह सकेंगे कि हम किसी से कम नहीं अभी तक प्रेम प्रणय का प्रतीक विश्वविख्यात आगरे का ताजमहल, दिल्ली का कुतुबमीनार और खजुराहो के मंदिरों में अंकितमूक

रमंभाओं को देखने विदेशी पर्यटक भारत आये थे। अब वह अपने ही देश के विकशित महानगरों के मॉडलों को देखनें आएगें। देख कर कहें गेवाह! कितना वेहतरीन विकाश है। कितनी हुबहू नकल की है इंडिया ने हमारे महानगरों की। नकल करने में तो इसका कोई शानी नहीं है रुलिंग पार्टी के एक अखिल भारतीय नेता से एक पत्रकार ने पूछा एमान नीय जिस गुजरात मॉडलीकरण की चर्चा चुनाव प्रचार के दौरान की जाती थी। कैसा है वह फिर बोले-गुजरात जा के देख लो पत्रकार ने कहा-आम आदमी पार्टी के नेता अररिवन्द केजरीवाल वहाँ गए थे और बता रहे थे की गुजरात में मजदूरों और किसानों की हालत बहुत ही खस्ता है वह फिर उसी अंदाज बोले गुजरात जा के देख लो जब पत्रकार ने उनसे यह जानने की कोशिश की ए.। जब देश में ही गुजरात जा के देख लो हम विदेशी देशों के तर्ज पर तो भारत का माडलीकरण कर रहे हैं लेकिन हमारे देश के समाजवाद का भारतीय मॉडल कब तैयार होगा और इसे कौन तैयार करेगा यह गहन चिंता का विषय है।

बोलने वाले पी.एम. जी...

जब से चाय बना कर बेंचने वालों को इस बात की जानकारी हुई है, कि हमारे वर्तमान पीएम मोदी जी बचपन में चाय बेचा करते थे, तब से उनमें एक नई ऊर्जा का संचार हुआ है। आज चाय बेंचने वाले और पीने वाले दोनों ही अपने आप को गौरवांवित महसूस करते हैं। इस विनिमय में उनको मोदी जी की उपस्थिति का अहसास होता है। इन दिनों नगरों में चाय के गुमटियों की संख्या तेजी से बढ़ी हैं। यह प्रगति की निशानी है। इससे बेरोजगारी भी दूर होगी, जिस चाय बेंचने के धंधे को हेय की दृष्टि से देखा जाता था, वह सहसा सम्मानित हो गया है''बचपन में एक कविता पढ़ा करते थे'' मां खादी की चादर देदे मैं गांधी बन जाऊं '' उसी तर्ज पर अब बच्चे अपने मम्मी पापा से कहते हैं- पापा चाय की दुकान खुलवा दो मैं भी मोदी बन जाऊं। ऐसे ही एक दिन मैं अपने परम मित्र प्यारे लाल के यहां बैठे स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक हुए प्रधानमंत्रियों के कार्य, व्हार और उनके काम-धाम करने के तौर तरीकों पर बात चीत कर रहा था। तभ्ज्ञी उनका बच्चा बार-बार उनके पास आता और कान में हुनहुनाते हुए कुछ कहता वह उसे डांट कर भगा देते। मैंने पूछा आखिर बच्चा कहना क्या चाहता है? प्यारेलाल जी बोले यह कल से बस एक ही जिद ठान बैठा है कहता है पापा जी चाय की दुकान खुलवा दो मुझे भी मोदी बनना है। अब आप ही बताइये इस तरह चाय बेंचने मात्र से कोई मोदी बन जाता तो आज हिन्दुस्तान मोदी मय नजर नहीं आता। पुनः मुद्दे पर आते हुए प्यारे लाल जी बोले स्वतंत्रता प्राप्त से लेकर अब तक 15 प्रधानमंत्री हुए हैं, जिनमें से 14 पुरूष और एक महिला हुई हैं इनमे से कुछ कठोर अनुशासन प्रिय,कुछ अति वाचाल तो कुछ ''मौन सर्वोत्तम भाषण '' के हिमायती थे। लेकिन हमारे वर्तमान पीएम कुछ अलग ही ताशीर के हैं। इनके बोलने कि अदा बिलकुल ही अजब है, गजब है, निराली है। अपनी इसी वाकपटुता की वजह से इन्होने पीएम की कुर्सी पा ली है। इनके चुनावी भाषण को सुनकर जनता बाबली हो गई। अच्छे

दिन के ख्वाब में खो गई। परिणाम स्वरूप भाजपा अपने पूर्ण बहुमत से सत्ता में आई। अब ख्वब तो ख्वाब होते हैं पूरे हुए तो हुए नहीं तो नहीं हुए। बोलने के मामले में मोदी जी का कोई शानी नहीं है। अपने प्रथम स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उन्होंने लिखा लिखाया भाषण नहीं पढ़ा। अपितु उनके मन में देश के जनता के प्रति जो उदगार आये बोलते चले गए। जब भारत का जंगी बेड़ा आईएनयस विक्रमादित्य राष्ट्र को समर्पित किया गया तब उस पर से दहाड़ते हुए बोले-'' न तो हम आंख दिखाएंगे और न झुकाएंगे सीमा पर हो रही आतंकी हरकतों को भी नहीं बर्दास्त किया जाएगा। यह सुनते ही सीमावर्ती शत्रुओं की नेकर ढ़ीली हो गई। बोले या अल्लाह यह तो आतंकी हर्कतों को बर्दास्त न करने की धमकी दे रहे हैं। अगर सचमुच ऐसा हो गया तो हमारा अस्तित्व ही मिट जाएगा मोदी जी निहायत ही वाक पटुता सम्पन्न पीएम हैं ये यत्र तत्र सर्वत्र जहां भी जाते हैं कुछ न कुछ बोलकर ही आते हैं। अभी हाल में ही भूटान गए, नेपाल गए, जापान की यात्रा की, वहां हिंदी में बोलकर अपने राष्ट्रभाषा प्रेम को दर्शाया हैं। भारत में आए चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग को भी अच्छी तरह समझा दिया की अगर दोस्ती कायम रखनी है तो सीमा पर शांति बनी रहनी चाहिए। ये हिंदी -चीनीभाई-भाई कहने से काम नहीं चलेगा। आज कल मोदी जी की छवि बोलने वाले पीएम के रूप में निखर रही है। यह तो कुछ भी कहते हैं, बोलते हैं ईश्वर उन्हें उसे पूरा करने की शक्ति दे सामर्थ दे यही कामना है।

अनारा की सीडी

आज का युग संस्कृति महाभारत का युग है। जिधर देखो उधर संस्कृतियों का द्वन्द चल रहा है। नई संस्कृति पुरानी संस्कृति को पछाड़ रही है। आज जिनके कारण संस्कृति संकट उत्पन्न हुआ है, वही लोग सबसे अधिक संस्कृति बचाओ का पहाड़ा पढ़ रहे हैं ऐसे ही एक सज्जन से हमने पूछा भाई यह आप जो नई और पुरानी संस्कृति के संक्रमण के संस्मरण संधारित करते रहते हैं, जिनके कारण देश की सनातनी संस्कृति संकट में पड़ रहीं है, आखिर यह आती कहां से है और फलती कैसे? वह तपाक से बोले यह तो नहीं मालूम की यह आती कहां से है? लेकिन फैलती कैसे है? यह अवश्य मालूम है। इसे फैलाने में टी.वी चैनलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। ये चैनल ऐसे-ऐसे आपत्तिजनक दृश्य आपको दिखाते हैं कि जिनका वर्णन करने में शर्म आ जाती है। मैंने कहा आपको कैसे मालुम कि दिखाए गए दृश्य आपत्तिजनक हैं। अजी! मैंने कहा जब देखते हैं इसलिए दिखाया जा रहा है। अब आप खुद समझिए कि यह आपकी तथाकथित संस्कृति किसके कारण संकट में है। अगर कोई वस्तु कोई किसी को देता है तो वह लेने वाले के पास पहुंच जाएगी। अगर वह उसे अंगीकार नहीं करेगा तो स्वाभाविक है कि वह उसी के पास रह जाऐगी। ऐसे ही सांस्कृतिक संकट की समस्या को लेकर एक श्वेत बाल, वर्ण वाले सज्जन, जिनके उन्नत ललाट पर चमक रहा था, चंदन अधरों पर था,ओम् नमः शिवाय् का वन्दन करते हमारे घर आए। बोले बड़ा खराब जमाना आ गया है, पता नहीं इस देश और समाज का क्या होने वाला है।

टीवी के मनोरंजन चैनल खोलो तो दिगंबर बालाएं किलोल करती दिखाई देती है। समाचार चैनल खोलो तो अपहरण, बलात्कार और हत्या के दृश्य दिखाए व सुनाए जाते हैं। बड़ी जिल्लत झेलनी पड़ती है.इस समय उनका चेहरा ऐसा लग रहा था, मानों पूरे देश के सांस्कृतिक संकट की काली छाया उनके चेहरे पर सिमट आई हो। फिर एक गहरी निःश्वास भरते हुए बोले, यह सब काम तो कमोवेश हमारे जमाने में भी होते

थे, लेकिन तब उनकी गोपनीयता बनी रहती थी लेकिन आज मीडिया की चुस्ती-फुर्ती की वजह से ये खास काम आम हो जाते हैं। यहां तक कि उनकी सीडी तक बनाकर बाजार में बिकने लगी। इन्दौर के अनारा प्रकरण की धूम में समाचार चैनलों की जो भूमिका रही है, वह अविस्मरणीय है। यह ब्रम्हा से भी ज्यादा चितेरे हैं, ब्रम्हा की आंख से बच भी जाए पर इनके कैमरे की आंख से बचना मुश्किल है, ये प्रकरण को जिस तरह से परत खोलकर दर्शाते हैं वैसा तो प्रत्यक्षदर्शी भी नहीं बता सकता। आखिर समाज में पनप रही इस तरह की अनैतिक गतिविधियों का क्या कारण है। हमने उन्हें समझाते हुए बतलाया यह पूंजी वादी व्यवस्था का ज्वलंत उदाहरण है। जो साम्प्रदायिकता से भी खतरनाक चीज है

यह सभी जानते हैं कि यह अनैतिक है, लेकिन ये सारे अनैतिक कार्य बड़े ही नैतिकता के साथ सम्पन्न होते है। इसमें लिप्त लोगों के चरित्र की तरह जरा भी दोगले नहीं हैं। देश के सारे अनैतिक कार्य बड़ी ही नैतिकता के साथ ईमानदारी पूर्वक संचालित हैं। नैतिक लोगों के द्वारा अपमानित सत्य निष्ठ आज यही अपना अस्तित्व बचाए हुए हैं। जितने नैतिक सीडी बनाने वाले हैं, उससे कम नैतिक सीडी खरीदने वाले भी नहीं हैं। बिक रहे हैं का साफ मतलब है खरीदी जा रही हैं। बिक रही हैं का जिक्र आते ही वह तपाक से बोले, यह 'अनारा' की सीडी कहां मिलेगी? मैंने कहा इस संबंध में मेरा सूचना तंत्र जरा कमजोर है लेकिन आप यह सब क्यों जानना चाहते हैं? वह बोले हम देखना चाहते हैं कि आखिर उसमें है क्या? हमने कहा आदरणीय दादा जी आप युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्त्रोत हैं, आज जबकि आपके पांव कब्र में लटक रहे हैं, तब आप 'अनारा' की सीडी के पीछे क्यों भटक रहे हैं?

इस पर वह अपने चेहरे पर तिलस्मी मुस्कान बिखेरते हुए बोले उम्र से क्या होता है मन जवान तो तन जवान, क्या आपने वह कहावत नहीं सुनी ज्यों-ज्यों डूबे श्याम रंग,त्यों-त्यों गाढ़ो होय। मैं तो आपके पास जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि वाली अवधारणा पर विश्वास करके आया था कि आप को जरूर पता होगा पर यहां तो धन और धरम दोनों का संकट उपस्थित हो गया। मैंने कहा अगर आप मुझे संकटमोचन मानकर ही मेरे पास आए हैं तो मैं आपको इसका पता ही देता हूं कि यह अनारा की सीडी और इस जैसी अन्य तमाम सीडियां पुलिस स्टेशन पर मय सीडी प्लेयर के उपलब्ध हो जायेगी।

इतना सुनते ही वह बिना धन्यवाद दिए ही थाने की ओर बढ़ लिए और मैं देश में पनप रही संकट की संस्कृति के बारे में सोचने लगा। जहां हर तरफ मांस भ्रष्टचार की दुर्गन्ध तेजी से फैल रही है।

हमें तो लूट लिया

डाकू और लुटेरे सिर्फ बीहड़ों,जंगलो और पहाड़ो में ही नहीं रहते अपितु ये राजनीति के दलदल में उगे दलाली के कुकरमुत्तों की तरह सर्वत्र व्याप्त हैं। जंगली लुटेरों और बस्तियों के लुटेरे में सिर्फ इतना अन्तर है कि जंगल के लुटेरे मुंह में नकाब बांधकर हाथों में दोनली सम्हाले आते हैं। और आपको लूटकर चले जाते हैं। लेकिन नगरीय लुटेरे दुकान सजाकर डिस्काउंट और ऑफर का उस्तरा सम्हाले खुद आपको लुटने के लिए आमंत्रित करते हैं

बहुत ही नायाब हैं इनके लूटने के तरीके आप अपने मेहनत की जमा पूंजी समेटे इनके काउंटर पर जाते हैं और खुशी से लुटकर घर लौट आते हैं। इस लूट शब्द पर मुझे एक पुरानी फिल्म का गीत याद आ रहा है' हमें तो लूट लिया मिल के हुश्नवालों ने, गोरे-गोरे गालों ने, काले-काले बालों ने। 'यह तब की बात थी, अब की बात कुछ और है अब ताक हुश्न खुद लुटने के लिए हाजिर है पर इस राम और कृष्ण के देश में अभी भी कुछ शर्म-हया बाकी हैं इसलिए ए हुश्न वाले लुटने के लिए 'हलीबुट' चले जाते हैं। पिछले दिनों एक अखबार में एक दिगम्बर सौन्दर्य बाला का वक्तव्य छपा था 'किसी ने पूछा था कि आप अपने कपड़े उतारकर अश्लील सेक्सी अदाएं क्यों प्रदर्शित कर रही हैं? जिसके जवाब में उन्होंने कहा था कि दर्शक जो चाहते हैं हम वहीं परोस रहे हैं यदि वह इससे आगे के दृश्य देखना चाहेंगे तो हम उसके लिए भी तैयार हैं यह भी हमारे समाज का अप सांस्कृतिक लुटेरपन है। इसी ने देश और समाज में मांस भ्रष्टचार फैलाया है। खैर छोड़िये इन 'क्रिटिकल रोबरीज' को हम तो सहज तरीके से लुटने की बात कर रहे थे, आइए उसी दिशा में आगे बढ़ते हैं। आपको कहां लुटना है, कैसे लुटना है, इसकी जानकारी आपको आपके बेडरूम में स्थापित टीवी के विभिन्न विज्ञापनी चैनलों द्वारा मिल जाएगी, जहां से हर पल हर सेकेण्ड हजारों विज्ञापन आपकी नजरों के सामने से गुजरते हैं, जो देश-दुनिया का सारा बाजार दिखा

देते हैं। आप और हम हन विज्ञापनी तिलस्म के सम्मोहन में फंसे लुटने के लिए दुकानों में पहुच जाते हैं। जहां सुन्दर सी सेल्स गर्ल मुस्कुराकर आपका स्वागत करती है। यह आपको लूटने का पहला अस्त्र प्रयोग है। आपको सुसज्जित गद्दीदार आसन में बिठाकर आपका भरपूर स्वागत किया जाएगा, ठीक वैसे जैसे कि बलि के पूर्व बकरे का किया जाता है फिर मौसमानुसार आपको पेय पिलाया जाएगा,यहां तक पहुंचते-पंहुचते आप पूरी मानसिकता से लुटने की भूमिका होती है, इसी में मजा आता हैं आप अपने घर में भी जब कोई महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित करते हैं तो उसके लिए भी भूमिका तैयार करते हैं, नहीं तो मजा नहीं आता। अब दुकानदार आपको आपकी मन पसंदीदा वस्तुओं के साथ कुछ अपनी मन पसंदीदा चीजें भारी ऑफर के साथ प्रस्तुत करेगा, मसलन यह नहाने का नया साबुन है, तीन साबुन का सेट लेने पर एक साबुन मुफ्त या वैसलीन के 200 ग्राम पैक के साथ एक बॉडी लोशन 12 रुपए कीमत का मुफ्त और हम इस ऑफर के चक्रव्यूह में फंसकर अपनी तयशुदा सामग्री की जगह ऑफरी सामग्री लेकर बारह रूपये के हुए मुनाफे का भ्रम पाले घर लौट आते है। अगर हम दुकानदार से कहें कि इस 12 रुपये के ऑफर को अपने पास रखो और हमारे मूल कीमत में इसे डिसकाउन्ट कर दो इसके लिए वह कतई तैयार नहीं होगा क्योंकि ऐसा करके वह एक ओर आफरीय वस्तु का टैक्स बचाकर सरकार को लूटता है और दूसरी ओर हम आपको क्योंकि ऑफर की वस्तु उत्पादन टैक्स से मुक्त होती है, यह लूट का नायाब तरीका है। पिछले दिनों मोबाइल लेने के लिए मैं एक दुकान में गया, सेट देखा, कीमत पूछी, उसने कहा अगर आप बिल लेंगे तो इसकी कीमत 3900/- है, बिना बिल व 3800/- है। अब अगर मैं बिल लेता हूं तो मैं लुटता हूं और अगर नहीं लेता तो सरकार को चूना लगता है। मेरे अन्दर राष्ट्रबोध जागृत हुआ और 100 रुपये अतिरिक्त भुगतान कर सेट खरीद लिया। इसी प्रकार आपको जगह-जगह गलियों और चौबारों में नगरों और महानगरों में सेल और महासेल के पाण्डल लगे मिल जाएंगे जो दामों। में भारी कमी का बैनर लटकाए आपको लुटने के लिए आमंत्रित करते हैं। जिसमें 800रुपये कीमत वाली साड़ी महज 150/- रुपये में उत्पादन लागत से कम कीमत पर वस्तुओं को बेचने का गणित मेरी समझ में आज तक नहीं आया। हर तरफ लूट का मार्केट गरम है और उपभोक्ता इस लूट तंत्र में आराम से लुट रहा है। खुदा खैर करे.

नेता के एक पुतले का रावणाभिषेक

नवदुर्गोत्सव के प्रारम्भ होते ही जगह-जगह महिषासुर मर्दनी माता दुर्गा की भव्य प्रतिमाओं के स्थापना का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है। इन प्रखर प्रतिमाओं की परछांई के चारों ओर चंदे का जाल फैलना भी प्रारम्भ हो जाता है। चंदालोलुप काक्रोच की तरह सक्रिय हो जाते है। उनकी रात्रिकालीन मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति सहज हो जाती है। चंदा वसूलना हमारी सियासती परम्परा का अनुपम उपहार है.

नवदुर्गोत्सव के साथ-साथ नगर, गांव और कस्बों में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान राम की लीला का मंचन भी शुरू हो जाता है। जो नारद मोह से प्रारम्भ होकर रावण वध से होता हुआ राम के राज्याभिषेक तक चलता है। रामायण में वर्णित विविध प्रसंगो का भावप्रवण मंचन होता है। जिसे श्रद्धालुजन बड़ी निष्ठा से देखते हैं वैसे तो रामायण के सभी प्रसंग अनुकरणीय है.(सुपर्णखा) के नाक, कान, काटने, सीता हरण और धोबीवाले सीता निर्वासन के प्रसंग को छोड़कर) इन सभी प्रसंगो में धनुषयज्ञ का प्रसंग सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। आज भी यह उतना ही लोकप्रिय है। जितना हजारों साल पहले था। धनुष भंग के दिन समूचा रामलीला मैदान खचाखच भर जाता है। धनुष टुटते ही जय श्रीराम के नारों से आकाश गूंज उठता है यह हमारी तोड़क फोड़क संस्कृति पर निष्ठा का बेजोड़ उदाहरण है.

दूसरा सबसे महत्वपूर्ण और जनप्रिय (क्षमा कीजिएगा) जनाना प्रिय प्रसंग सीता हरण का है, मैंने इसे जनाना प्रिय इसलिए कहा क्यों कि धनुषयज्ञ में पुरूषों का और सीता हरण में महिलाओं का प्रतिशत ज्यादा रहता है। सब बेसब्री से सीता हरण की प्रतीक्षा में जमें रहते हैं। कब सोने का मृग सामने से गुजरे, कब सीता मइया राम से उसे मारकर उसकी खाल से कुटिया का शृंगार करने का प्रस्ताव रखे और कब रावण सीता जी का हरण कर आकाश मार्ग से लंका के लिए प्रस्थान करे.रावण द्वारा सीता का हरण होते ही प्रांगण तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठता है। शायद यहीं से

अपहरण की संस्कृति का सूत्रपात हुआ होगा? जिस देश में नारी के हरण पर तालियां बजती हों उसका तो विरंच ही मालिक है। रामलीला मंचन के दौरान कभी-कभी बहुत ही अनोखी घटनांए घट जाती हैं। एक बार मैं मंच के समीप खड़े-खड़े रामलीला का अवलोकन कर रहा था। आम लोग रामलीला देखते हैं,वैज्ञानिक, बुद्धिजीवी और लेखक, कवि अवलोकन करते हैं। इन सबसे हटकर कुछ पुलिस वाले भी होते हैं। जो रामलीला देखने वालों को देखते हैं। मेरे सामने 5-7 साल के दो बच्चे खड़े थे। रावण के मंच पर आते ही वह ऐसे प्रसन्न हो गए जैसे बहुप्रतीक्षित कुटिल मुस्कान धारी नेता के मंच पर अवतरित होते ही भोली-भाली जनता प्रसन्न होती है। जब रावण अपना अभिनय कर मंच के पीछे चला गया तो जिज्ञासावश वह दोनों बच्चे और उनके पीछे पीछे मैं भी अंदर का दृश्य बहुत ही अजीबोगरीब था। रामधरती पर बैठे चिलभ भर रहे थे और रावण कुर्सी में बैठा दम लगा रहा था। कमोवेश मेरे देश की भी स्थिति कुछ ऐसीही है। जहां राम को होना चाहिए वहां रावण कुडली मारकर बैठा है। बच्चे रावण के पास जाकर बोले है! हे! रावण तेरे दस शीश में बीस आंखे कमाल है। जब तू रोता होगा तो वह दृश्य बहुत ही विचित्र होता होगा। इतना सुनते ही रावण को आ गया आवेश, जैसे छू गया हो वायर फेस, कड़ककर बोला अरे! मूर्खो ऐसा कदापि नहीं होता, रावण के राज में प्रजा रोती है, रावण नहीं रोता और आप देख ही रहें हैं कि हमारे देश में कौन हंस रहा है और कौन रो रहा है। लोग रावण से मुक्ति पाने के लिए छटपटा रहे हैं। एक रावण है कि जिसका कद भ्रष्टाचार नेता की तरह अनुदिन बढ़ता ही जाता। इनके कद को बढ़ाने में हम आपका योगदान है। एक बार एक नगर में एक नेता के पुतले का निर्माण कर बीच चौराहे में उसके दहन की योजना बनाई गई। पुतला दहन का कारण था वहां के एक नेता द्वारा कुछ नेतोचित कृत्य से भड़क गई और विरोध स्वरूप उनका कद्दावर पुतला बनाया गया। नगर भ्रमण के पश्चात जैसे ही उसके दहन की प्रकिया प्रारम्भ होने वाली थी कि तभी पुलिस वाले पहुंच गए। यह पहला अवसर था जब पुलिस घटना घटने के पूर्व घटनास्थल पर पहंची थी, अन्यथा घटना घटने के पश्चात घटनास्थल पर पहंचना उसकी नैतिक पहचान है। पहुंचती भी क्यों नहीं? मामला नेताजी के पुतला दहन का था। ऊपर से सख्त निर्देश जारी हुए कि किसी भी हालत में पुतला दहन नहीं होना चाहिए। पुतले को जब्त कर थाने लाया गया। अब ऐसे कददावर कुंभकर्णी कायाधारी पुतले के रख रखाव की समस्या उत्पन्न हुई। कुछ पुलिस वालों की खाट खड़ी करनी पड़ी तब कहीं जा के पुतला ठिकाने लगा। जिनकी खाट खड़ी की गई थी वह नित्यप्रति ईश्वर से उससे मुक्ति की प्रार्थना करते।

आखिर एक दिन बड़े अधिकारी आए, समस्या रखी गई, सुझाव मिला की दहशरा आ रहा है, नौ सिर और जोड़कर पुतले का रावणाभिषेक कर दशहरे के दिन जला देना। इस तरह सांप भी मर जाएगा और लाठी भी बाच जाएगी। ऐसा ही किया गया, दशहरे के दिन बड़े हर्षोल्लास के साथ पुतला दहन समारोह सम्पन्न हुआ। पत्रकारों ने फोटो खींची, टी.वी. वालों ने कवरेज लिया पर पुलिस वाले वहां नहीं दिखे।

दलाली के कुकुरमुत्ते

दलाल शब्द की उत्पत्ति रंडी खाने से हुई मानी जाती है। पहले दलाल रंडी खाने में हुआ करते थे। जो रंडियो के लिए दलाली किया करते थे। उनके लिए ग्राहक पकड़ कर लाते थे। परमनिन्दनीय कृत्य सम्पादन के पश्चात जो पैसा रंडियो को मिलता था, उसका कुछर अंश इन दलालों को दे दिया जाता था। यही राशि दलाली कहलाती थी और इस राशि को ग्रहण करने वाला दलाल। दलाली का गोरख धन्धा आज भी राजनीति में भ्रष्टचार की तरह फलफूल रहा है। रंडी खाने से निकलकर वर्डवाइड हो गया है। मंदिर से मुर्दाघाट तक, संसद से राजघाट तक इन दलाली के भीष्पपितामहों का वर्चस्व है।

एक बार मुझे अपने एक आस्थावान, अस्तिक मित्र की बदौलत एक सुविख्यात देवस्थावन, में जाने का अवसर मिला। भीड़ के आगे आस्था परास्त हो गई। मैं लाइन से बाहर आया और बिना दर्शन किए वापस लौटने का निर्णय लिया। तभी गेरूआ वस्त्रधारी एक भक्त की निर्मल दृष्टि मेरे ऊपर पड़ी, वह मेरे पास आए, अपना परिचय दिया। मेरा नाम स्वामी घसीटा नन्द है। मैं यहां के पुजारी मंडल का सदस्य एवं महंत का उत्तराधिकारी हूं आप बिना दर्शन किए वापस चले जाए। यह उपयुक्त नहीं है। मैने निवेदन किया स्वामी जी उमड़ रहे श्रद्धावान सैलाब के आगे मेरी आस्था परास्थ हो गई है। मेरे लिए दर्शन दुर्लभ है। वह तपाक से बोले-'राम कृपा कहु दुर्लभ नाहीं। आप को दर्शन मिलेंगे और अवश्य मिलेगे। बस इस सेवक को 101रूपये का गुप्तदान और भगवान को 151रुपये का विशेष प्रसाद चढ़ाना होगा। मैंने उनकी शर्त का शीघ्र पालन किया और भगवान को धन्यवाद किया प्रभु आज आप के इन दलालों की वजह से आपके दर्शन सुलभ हुए। ऐसे ही एक बार एक महानगर के रेलवे स्टेशन में प्रेशर बढ़ गया पेट में तेज मरोड़ उठ रही थी, प्राण नाक तक आकर लौट जाते थे। प्रसाधन में अच्छी खासी लम्बी लाइन लगी थी। भारतीय सिस्टम (दाएं, बाएं से अनाधिकृत

प्रवेश) पूरी तरह फेल था। इज्जत दांव पर लगी थी। एक-एक पल भारी पड़ रहा था। आंख थोड़ी देर के लिए बंद होती, फिर खुल जाती। मेरे चेहरे पर उभर रही पीड़ा की रेखाओं को पास खड़े एक तिलक-सिखाधारी सज्जन ताड़ गए। बोले-जल्दी है। मुझे इस इज्जत लेवा संकट से किसी तरह उबरियए। वह बोले-इसके लिए बारह रुपये निकालिए। मैंने कहा 2 रुपये की जगह बारह रुपये? यह तो बहुत ज्यादा है। वह अपने कत्थई दांतो को निपोरते हुए बोले-इज्जत बचाना है, तो दलाली तो लगेगी ही। मैने तुरन्त उनकी मांग पूरी की। वह सुलभ शौचालय के व्यवस्थापक को सम्बोधित करते हुए बोले-तिवारी जी इन्हें आरक्षित श्रेणी वाले प्रसाधन कक्ष में ले जाइए वह मुझे वहां पहुंचा कर बोले- जाइए और जल्दी निपट कर बाहर आइए। मैंने कहा- इसमें तो महिला प्रसाधन लिखा है। वह कुपित होते हुए बोले-लिखा तो संविधान भी है। पर उसका कितना पालन होता है? यह हिंदुस्तान हैं, यहां लिखे पर कितना कहां अमल होता है, यह आप भी जानते है। नो पार्किंग जोन में पार्किंग होती है। जहां लिखा रहता है, यहां थूकना मना है, वहां सबसे ज्यादा थूकते हैं मैं तुरन्त अंदर गया और हल्का होकर बाहर आया, कहने का आशय यह है कि आज मंदिर और देवालयों से लेकर सुलभ शौचालयों तक दलालों का जाल बिछा है।

आज ऐसा कोई क्षेत्र नहीं बचा है, जहां दलाल रूपी दैत्यों का जाल न बिछा हो। अगर आपको अपनी सम्पत्ति बेचनी है, तो दलाल, खरीदनी है तो दलाल, आरक्षण कराना है तो दलाल, शादी-विवाह कराना है, तो दलाल, देवी- देवताओं के दर्शन करना है तो दलाल याने आज यह दलाली राजनीति में भ्रष्टाचार की तरह घुल मिल गई है।

बड़े- बड़े अधिकारी और उच्च ओहदा प्राप्त नेतागण अपने लिए बाकायदा दलाल नियुक्त कर रखे है। अधिकारियों के लिए यह दलाली का काम बाबू नाम का नागवंशी जीव करता है। यह कर्मचारियों को पहले किसी प्रकरण में उलझाते है, फंसाते है, फिर उनका शोषण करते है। गिद्ध कौओं और कुत्तों की तरह नोचते-खसोटते है। शोषित और खरोटित राशि का कुछ हिस्सा साहब को और कुछ खुद आत्मसात कर लेते है। इस दलाली की राशि को प्राप्त कर दोनों ऐसे खुश होते है, मानुष तनधारी बाबू नाम के जीव की प्रकृति दूध पिलाने पर डसने की होती है। इसे जो व्यक्ति जितना ज्यादा दूध पिलाता है। यह उसे उतना ही अधिक डसने की कोशिश करता है। जो हनुमान जी की तरह हाथ में गदा लेकर प्रस्तुत होते है। उन्हें देखकर ऐ अधिकारी और बाबू नतमस्तक हो जाती है। वैसे तो हर क्षेत्र में दलाली के इन काले जिन्दों का साम्राज्य

है। पर राजनीति के दलदल में ऐ दलाली के कुकुरमुत्ते कुछ ज्यादा ही उग रहे हैं। हर बड़े नेता का दलाल कोई न कोई छुटभैया नेता होता है। पूर्व का यह परम निकृष्ठ कलंकित शब्द दलाल आज सोने के सिक्के जैसा चमक रहा है। समय के साथ शब्दों के अर्थ में कैसे परिर्वन आता है। यह इसका बेजोड़ उदाहरण हैं। शब्दो के अर्थ सदैव समय सापेक्ष हुआ करते है। अति निकृष्टाा के अर्थ में प्रयुक्त होने लगते हैं। और अति उत्कृट अर्थ ध्वनित करने वाले शब्द अतिनिकृष्ट जैसे की 'नेता' शब्द। पहले जब हम 'नेता' कहते थे। तो हमारे सामने सुभाषचंद बोस का चित्र उभर आता था। जिनके पास एक मिशन था। देश को आजाद करने का एक नक्शा था, देश को सजाने सवारने का. किन्तु आज जब हम पूर्व का वह परिचित शब्द नेता दोहराते हैं तो हमारी आंखो के सामने स्वार्थ की गंदी नाली में बिलबिलाते हुए चंद कीड़े उभर आते हैं। नाक में सड़ांध भर जाती है। आधुनिक नेताओं के जिस्म से भ्रष्टाचार की बू आती है। आधुनिक निर्माण के नाम पर इनके पास अपने घर का नक्सा है, एक बड़ा सा बक्सा है जिसे पाँच साल के अन्दर नोटों से भरना है और मिशन किसी तरह से अपने कुर्सी की रक्षा करना है।

जिसको देखो वहीं हुआ हैं, यहां दिवाना कुर्सी का
अपना प्यार देश हुआ है, पागल खाना कुर्सी का।

चितंन जारी है

हमारा देश चिंतन प्रधान देश है। यहां अहर्निश चिंतन की अजश्र धारा प्रवाहित होती रहती है। देश में जब भी कोई भीषण आपदा आती है, प्राकृतिक प्रकोप बढ़ते है, कोई विकट समया फन उठाती है, और उससे जनजीवन प्रभावित होता है तो उससे निजात पाने के लिए चिंतन प्रारम्भ हो जाता है। चिंतन गोष्ठियां आयोजित की जाती हैं, चिंतन शिविर लगाए जाते हैं।

मंहगाई पर चिंतन बेरोजगारी पर चिंतन, नेताओं मंत्रियों और उच्चअधिकारियों द्वारा किए जाने वाले रिकार्ड तोड़ घपलों पर चिंतन कौन मंत्री किस कारण से असंतुष्ठ होकर अपनी मदर पार्टी छोड़ कर नई पार्टी का गठन कर रहा है इस पर चिंतन। चुनाव लड़े हार गए तो हार के कारणों पर चिंतन करना हमारे राष्ट्रनेताओं की हावी है। देश के राजनीतिज्ञों के पास चिंतन करने के लिए कुछ न होतो व्यवस्था पर प्रश्नचिन्ह लगने लगते है। लोग सरकार को नाकारा और निकम्मी समझने लगते है। इसलिए कभी-कभी उक्त आरोप से बरी रहने के लिए समय-समय पर व्यवस्था द्वारा खुद समस्याएं क्रिएट की जाती है। फिर उनके निदान के लिए राष्ट्रीय स्तर पर चिंतन प्रारंभ कर दिया जाता है। यह बात और है कि इनका आधिकांश चिंतन स्वजन सुखाय और परजन दुखाय होता है। ऐसे ही देश में एक महान चिंतन सम्राट है। जो शिवसेना प्रमुख के नाम से कुख्यात है। जो समय समय पर अपने विराट चिंतन द्वारा तरह-तरह की समस्यांए निष्पादित करते रहते हैं। इनके चिंतानारिष्ट का पान कर इनके अंधअनुयायी गण इनके निर्देशों पर भूचाली गतिविधियां प्रारंभ कर देते है। कभी इनका चिंतन मिनी वर्ड मुंबई को निखालिश महाराष्ट्र बनाने के लिए होता है, तो कभी-कभी जाति, धर्म सम्प्रदाय और भाषा को लेकर कोई न कोई बखेड़ा खड़ा करना। वर्तमान समय में उन्होंने शहरूख खान की फिल्म माई नेम इज खान पर चिंतनकिया और उसे देश द्रोही करार देते हुए उसके प्रदर्शन पर विरोध जतायां जबकि देखने वाले बतलाते हैं कि यह फिल्म

सामाजिक समरसता और भाईचारे की भावना को बढ़ावा देने वाली फिल्म है। लेकिन विरोध करना है तो करना है यही उनका राजनैतिक अध्यात्म है। वहरहाल वर्तमान समय में देश की सबसे बड़ी समस्य चिंता और चिंतन का विषय है मंहगाई। जो बहुत ही संवेदनशील मसला है। 100 रू. किलो दाल और पचास रूपये किलो चीनी, लोगो के कपड़े उतारने पर उतारू है। अगर देश में डायबटीज के मरीज न होते तो यह शक्कर भी 100 रू. का आकड़ा पार कर गई होती। मंहगाई के बढ़ते ग्राफ को देखकर देश के सभी राज्यों के मुख्यमंत्री सहसा संवेदनशील हो गए। और मंहगाई के लिए केन्द्र सरकार को जिम्मेदार ठहराने लगे। मंहगाई आसमान छू रही है और उसे जमीन पर उतारलाने के लिए प्रधान मंत्री महोदय कुछ नहीं कर रहे। मुख्य मंत्रियों द्वारा अनवरत लगाए जा रहे आरोपो से विवस होकर उन्हें भी संवेदनशील होना पड़ा अब चुंकि मंहगाई राष्ट्रीय समस्या है। इसलिए उस पर राष्ट्रीय चिंतन आवश्य है, सो प्रधानमंत्री ने सभी संवेदनशील मुख्य मंत्रियों की बैठक आहूत की जिसमें उत्तर प्रदेश और पंजाब के मुख्यमंत्रियों को छोड़ कर लगभग सभी सभी मुख्य मंत्रियों ने भाग लिया। प्रधानमंत्री ने बैठक को सम्बोधित करते हुए कहा कि यह हम मानते हैं कि देश में महगाई बढ़ी है। लेकिन इसके लिए सिर्फ केन्द्र ही पूरी तरह जिम्मेदार नहीं है इसमें राज्य सरकारों का भी हाथ है। इसलिए हम यहां आरोप-प्रत्यारोप की जंग न लड़ते हुए मिल बैठकर मंहगाई के कारणों और निदानों पर चिंतन कर उसका निष्कर्ष प्रस्तुत करेंगे। इस पर किसी ने कहा कि पार्टियों द्वारा पुजी पतियों से की गई चंदाखोरी के कारण मंहगाई बढ़ी है। इसलिए चुनावी चंदाखोरी समाप्त की जाए चंदाखोरी समाप्त होने से जमाखोरी क्योंकि सरकार जमाखोरी के खिलाफ कार्यवाही करते हुए भय नहीं खाएगी। पूंजीपतियों द्वारा की गई जमाखोरी भी मंहगाई का कारण हैं। किसी ने कहां कि सांसद, विधायक और शासकीय कर्मचारियों की वेतनवृद्धि से महगाई बड़ी है इसलिए वेतन वृद्धि का सिस्टम समाप्त किया जाय, विधायक, सांसद,और मंत्रियों के भत्ते कमकिए जाएं तथा मंत्रियों के हवाई सफर और विदेश यात्रा पर नियंत्रण रखाजाय महगाई खुद व खुद सरपर पैर रखकर नौ दो ग्यारह हो जायेग। एक अति संवेदनशील मुख्यमंत्री ने अपना सुझाव रखते हुए कहा कि-देश में मंहगाई का प्रमुख कारण गरीबी और ईमानदारी है। महगाई का सबसे अधिक प्रभाव इन्हीं पर पड़ता है। तो जो ईमानदार है वही गरीब है। ए लोग ईमानदारी से जितना कमाते है उससे अपना और अपने परिवार के सदस्यों का पेट नहीं भरपाते है। अभावो के समुंदर में डूबते उतराते है और दाल-दाल चिल्लाते हैं। बेईमान, भ्रष्ट और नम्बर दो की कमाई करने वालों को देखिए तड़का

लगी दाल मौज से खाते हैं 'और मस्ती करते हैं इसलिए हरिशचंद के इन बंसलो को अमेरिका और युरोप खदेड़ दिया जाए। सभी का चिंतन सार सुनने के बाद माननीय प्रधानमंत्री ने कहा कि-देशकाल के अनुसार काम करने का अपना एक सिद्ध ढंग होता है। चिंतन करने और सोचने का भी एक सलीका होता है। लोकतांत्रिक दृष्टि से इस प्रकार का चिंतन अलोकतांत्रिक है। असंवैधानिक है। हमे कभी कभी अपने नेताई आचरण से हटकर बुद्धिजीवियों की तरह चिंतन करना चाहिए। सभी के प्रति आभार व्यक्ति करते हुए प्रधानमंत्री जी ने कहा कि इस पंद्रह दिन के अन्दर मंहगाई कम होने लगेगी। सरकार दालों के उत्पादन को बढ़ाने के लिए राष्ट्रीय दाल-मिशन की स्थापना करेगी। बहरहाल जब तक महगाई पर पूरी तरह नियंत्रण नहीं प्राप्त हो जाता तब तक इस पर राष्ट्रीय चिंतन जारी रहेगा।

दलाली की संस्कृति

हमारा देश संस्कृति प्रधान देश है। संस्कृतियों के मामले में यह दुनिया में सबसे महान है विशिष्ठ है। यहां संस्कृतियों की अच्छी खासी फेहरिस्त है, यहां सॉप को दूध पिलाने से लेकर वादाफरोस नेताओं को बोट देने तक की संस्कृति का विस्तार है। वोट लेने के लिये जो नेता जनता के पीछे मजनू की तरह दीवाने होकर हायजनता हाय मेरी प्यारी जनता एक बार तू मुझे वोट देकर सत्ता की कुर्सी पर बिठा दे कह कर गिड़गिड़ाते है। वहीं नेता चुनाव जीतने के बाद जनता को उसी तरह भूल जाते है। जैसे वन से राजमहल आने के बाद दुष्यंत शकुन्तला को। युग परिवर्तन के साथ-साथ देश में नित नई संस्कृतियों का उद्भाव और विकास हो रहा है। जिस प्रकार पाकिस्तान में आतंकवाद, अमेरिका में साम्रराज्यवाद, जर्मनी में नश्लवाद पनप रहा है उसी प्रकार भारत में दलाली की संस्कृति का ग्राफ गुणित अनुपात में बड़ रहा है।

भारत में यह दलाली की संस्कृति नेताओं में भ्रष्टाचार की तरह दिनदूनी रात चौगुनी फैल रही है। जिस तेजी से यह दलाली की संस्कृति देश में अपने पैर पसार रही हैं उसे देखते हुये ऐसा प्रतीत होता है कि अब वह दिन दूर नहीं जब सब्जी मंडी में सब्जी खरीदने के लिए आपकों दलालों की जरूरत पड़ेगी। अभी आप सब्जी मंडी जाते है। अपनी मन पंसदीदा सब्जी का मोल-भाव करते हैं और खरीदारी कर खुशी-खुशी घर जाते है, लेकिन अब वह दिन दूर नहीं जब आप को भिंडी, करैला, पालक आदि सब्जी खरीदने के लिए दलालों की दरकार होगी। दलाल कमीशन एजेन्ट, विचौलिए और दल्ले ए सारे के सारे नाम उस करामाती जीव के हैं जिनके बिना आज के युग में व्यवस्था के बटवृक्ष का एक पत्ता भी नहीं बिलवा। किसी भी आफिस में बाबू को दलाली दिए बिना आप की फाइल टस से मस नहीं होगी। आफिस से घर और घर से आफिस का चक्कर काटते हुये आफ के चार जोड़ी जूते घिस जएँगी। वही आप दलाली चुका दीजिए फिर देखिए किस तरह आपकी फाइल को पर निकल आते हैं।

वह दूर अधिकारी के टेविल से कुदकती हुई आप की कल्पना को साकार कर देगी। बिना दलाली चुकाए काम कराकर तो देखिए नानी याद आजाएगी। आप जहां भी जाएंगे, जो भी काम कराना चाहेंगे दलाल नाम का जिन्न हर जगह आपके सामने प्रगट हो जाएगा। रेलवे में रिजर्वेसन हेतु जब आप सम्बी कतार को पार करते हुये खिड़की तक पहुचते हैं और बाबू द्वारा नो होम का पहाड़ दोहरा दिया जाता है तब आप कितने मयूश हो जातें हैं। आप को अपनी यात्रा कितनी यातना दायक लगने लगती है। वही आप यह काम किसी दलाल को सौंप दीजिए फिर देखिए वह किस प्रकार छप्पर फाड़कर आपके मनचाहे कोच में मनचाही वर्थ उपलब्ध करा देता है। आप दलाली के इस माया जाल को देखकर दंग रह जाएंगे। ड्राइविंग लाइसेंस बनवाने के लिए जाइए सारे कागजात रखने के बावजूद आप को बैरंग वापस आना पड़ेगा वहीं दलालों के सरण में चले जाइए टू व्हीलर तो क्या फोर व्हीलर का लाइसेंस आपके घर पहुंच जाएगा। कुछ दलाल जो जबरिया आपसे अपना हक वसूल लेंगे। बीमा एजेन्ट को देखलीजिए वह तब तक सूरज की पहल किरण के साथ आप के दरवाजे में प्रतिदिन दस्तक देता रहेगा जब तक आप इसकी किसी बीमा पालसी की भेंट नहीं चड़ जाते चाहे बच्चे को किसी नामधारी स्कूल में भर्ती करना हो, चाहे बिजली का कनेक्शन लेना हो, चाहे बैंक से लोन लेना हो, चाहे अस्पताल में बेड प्राप्त करना हो, चाहे जमीन,प्लाट या फ्लेट की खरीद फरोख्त करना हो तो हर मुकाम पर आपकों दलाल नाम के नागवंशी जीव की जरूरत पड़ेगी। जो अपने फन फैलाए, आपकों डसने के लिए आतुर मिलेंगें। यह दोनो के बीच खड़े होकर दोनो से भलाई चाहता है।

रामचंन्द्र कह गए सिया से

जब-जब देश-प्रदेश में चुनाव का मौसम आता है। हमारे देश के भाग्य-विधाता आस्थावान हो उठते है। उनके अन्दर आस्था का समुन्दर हिलोर लेने लगता है। वह अपनी कुंभकरणी निद्रा को त्यागकर चुनावी महासमर में विजय श्री हासिल करने के लिए मंदिर, मठ और देवालयों में जाकर साधु-संत और महन्तों के श्री चरणों में अपना उन्नत ललाट टेकते हुए यह वरदान मांगते हैं कि हे प्रभु आनन्ददाता हमें ऐसा आर्शीवाद दीजिए कि हम अपने तमाम समर्थकों सहित चुनाव में विजय प्राप्त कर देश-प्रदेश में सर्वभौम सत्ता स्थापित कर सकें। इतना ही नहीं ये अपनी विजय पिपाशा को लेकर तांत्रिकों के ठिकानों में जाकर उनसे याचना करते हैं कि हे! जगन्नाथ,जंत्र, तंत्र, मंत्र और यंत्र के ज्ञाता अपनी अगूढ़ विद्या और साधना से प्राप्त रहस्यमयी शक्ति से ऐसा चमत्कार कर दीजिए, जिससे मेरे सारे प्रतिद्वन्दी चारो खाने चिट्ट हो जाएं हमारा एकक्षत्र राज्यसत्ता स्थापित हो जाय। सो भइया हमारे देश के शियासत जादे पूरी तरह इस तंत्र,मंत्र, यंत्र के रहस्यमयी लोक में गिरफ्त होते चले जा रहे हैं। जनता पर इसका असर हो न हो पर ये पूरी तरह से उसके अंसर में है। इनका मानना है कि जो विजयश्री पांच वर्षो तक जनता जनार्दन की सेवा करने से प्राप्त नहीं होती, वह साधु-संत महन्तों और तांत्रिकों की शरण में जाने से अनायाश ही हासिल हो जाती है। इसके लिए यह तरह-तरह के यज्ञों का आयोजन करते हैं। यज्ञों पर इनकी गहरी आस्था है। इनका मानना है कि जब यज्ञ करने से सत्तानोपत्ति संभव हो सकती है, तो चुनाव जीतना कौन सी बड़ी बात है? यज्ञ के द्वारा सारी आपदाओं से निजात पाया जा सकता है। यज्ञों द्वारा सारी आपदाओं से निजात पाया जा सकता है। यज्ञों द्वारा पुत्र प्राप्ति की घटना के आगे विज्ञान के सारे चमत्कार सारी अवधारणाएं धरी की धरी रह जाती है। ये वैज्ञानिक दृष्टि वाले कितने तकिया नूश हैं जो यज्ञ जैसी महानतम् चमत्कारी कृत्य की महत्ता को नहीं समझा पा रहे। अभी सुनामी लहरों ने कहर ढाया, तो उसके समन के

लिए यज्ञ किया गया। जब कभी देश की सीमाओं में युद्ध के बादल मंडराते हैं तो उन्हें भगाने के लिए यज्ञों का विषद आयोजन किया जाता है। यज्ञ करने से पर्यावारण शुद्ध होता है, वातावरण में व्याप्त बीमारी फैलाने वाले हानिकारक जीवाणु नष्ट हो जाते हैं। लोग-बाग बेकार में करोड़ो रूपए खर्चकर कीटनाशक रसायन बनाते हैं कल-कारखाने लगाते हैं। अगर ऐसा न होता, तो हमारे धर्मपुराण अध्यात्मिक दर्शन पर निष्ठपूर्वक काम करने वाले ऋषि, मुनि, साधु, संन्यासी किसी सुपरिचित योजना के तहत ये कार्य क्यों सम्पन्न करते।

अभी नए वर्ष के शुभागमन के साथ ही चुनावों ने हम सभी का पुरजोर स्वागत किया। इसमें अपनी जीत दर्ज करने के लिए अनेक प्रत्याशियों ने काले घोड़े के नाल की अंगूठी, तो किसी ने तांत्रिको के द्वारा दिए गए अनेकों प्रकार के कंकड़-पत्थर को अंगूठी में जड़वाकर धारण किया। ऐसा करने के पीछे उनकी मान्याता है कि इससे क्लेश मिटते, गृह नक्षत्रों के कुप्रभाव दूर होते हैं। गृह नक्षत्रों का मानवजीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इनके वक्र होने पर महान देवात्माओं को भी कृष्ण जन्म भूमि की हवा खानी पड़ती है। इन ग्रहों के चक्कर बड़े अजीब हैं। इन्हीं के चलजे राजा हरिशचन्द्र में यातना झेली,राम को वनवास हुआ। ये अवतारी पुरूष थे, जब ये नहीं बचे, तो ये सामान्य जन को कैसे बचा सकते हैं? फिर इसमें युग का प्रभाव भी शामिल है। इस कलिकाल में जो कुछ भी न हो जाय, वह कम है। इस कलियुग के संबंध में मुझे गोपी फिल्म का एक गीत याद आ रहा है।

रामचंद्र कह गए सिया से, ऐसा कलयुग आएगा।
हंस चुगेगा दाना तिनका, कौआ मोती खएगा।।

सो भइया आज के समय में अंकुले-बंगुले मस्ती छान रहे हैं। मानस के राजहंस यातनाएं झेल रहे हैं। यह सब कलयुग का प्रभाव है। यदि इस गीत का और आगे खोला जाय, तो इसकी पंक्ति-पंक्ति में कलयुग के प्रभावों का सार निहित है। हर व्यक्ति यहां वक्त का गुलाम है-

मुरझा के काली झील में गिरते हुए भी देख।
सूरज हूं मेरा रंग,मगर दिन ढले भी देख।
बिछती थीं जिनकी राह में फूलों की चादरें,
अब उनकी शान वक्त के पैरों तले भी देख।।

अशुभ ग्रहों का शुभीकरण

आज जब दिनभर के काम काज निपटाकार घर पहुंचा तो देखा की सोफे में एक उन्नत तोंद धारी पंडित जी तिष्ठायमान हैं। सामने मेरी जन्म पत्री रखे पत्नी पंडित जी से बात चीत कर रही हैं। बोली पता नही इधर कुछ दिनों से इन्हें क्या हो गया? बड़ी ही अजीबो गरीब हरकतें करते रहते हैं। जब देखों तब धर्म-कर्म के विरुद्ध अनाप-सनाप बोलते लिखते रहते हैं। आमजन का शोषण करने के लिये जन्म से मृत्यु तक के अनेकानेक संस्कारों की सृष्टि कर रखी है जो इन्हीं के द्वारा सम्पन्न कराए जाते हैं और दान पुण्य के नाम पर अच्छी खासी मोटी रकम ऐंठ ले जाते हैं।

पंडित जी जन्म पत्री में बैठे ग्रहों पर अपनी दृष्टि डालते हुए बोले ए ऐसी हरकतें कब से कर रहे हैं। पत्नी ने सोचते हुये कहा जब से इनकी मुलाकात ग्रामीण नाम के एक साहित्यकार से हुई है। बस तभी से ए घर में दंदात्मक भौतिकवाद, प्रगतिशील प्रतिक्रियावाद और न जाने क्या-क्या बड़बड़ाते रहते हैं। पत्नी की बातों को ध्यान से सुनते हुये बोले इनका जन्म कब हुआ है।

पत्नी ने बतलाया 14 अप्रैल सन 1953 को पंडित जी गंभीर हो गये आंखे चढ़ाते हुए बोले याने डॉ. अम्बेडकर के जन्म दिन को। तभी तो यह सबके विरोधी हैं, कई उपाय कर डाले लेकिन यह रास्ते पे नहीं आ रहे। अब आप ही कुछ ऐसा अनुष्ठन करिए जिससे ए सही रास्तें पर आ जाएं। अनाप-सनाप लिखना पढ़ना छोड़ कर शुद्ध प्रवचनी संत बन जाएं। ऐसा हो जाने पर ए पूंजीपतियों के बीच उच्च प्रतिष्ठ पाएंगें। दान-पुण्य की राशन-राशि से घर में वैभव लक्ष्मीण किलोल करेगी मेवा मिष्ठानों से भण्डार भर रहेगा। बड़े-बड़े ओहदाधारी हाकिम अफसर नेता मंत्री इनके आगे-पीछे घूमे शो अलग मोटी रकम का प्रसाद चढ़ाकर खुद को धन्य करेंगे। पंडित जी ने जन्मपत्री में बने नव ग्रहों पर दृष्टि जमाते हुये बोले- सौर मंडल में विचरण कर रहे नौ प्रमुख ग्रहों यथा-चन्द्रमा मंगल, बुद्ध, बुहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु का मनुष्य के जीवन

पर निरंतर प्रभाव पड़ता है। जन्म कुण्डली में उपस्थित ग्रहों की स्थिति जातक पर अलग-अलग ढंग से अपना शुभ-अशुभ प्रभाव डालती है। सुख-दुख, लाभ-हानि, जय-पराजय, जन्म-मरण, यश-अपयश, द्वेश, मित्रता-वैमनस्य, सुविचार-कुविचार, सत्य, इन्हीं ग्रहों के प्रभाव से होते है। इनका सूर्य छठे, चंद्र आठवें, ग्रह में है जो अशुभ फलदायी है। जिनके प्रभाव से फसल सूख जाती है। नल में प्रवाहित पानी, खारा हो जाता है। व्यक्ति विवेक हीन हो जाता है। इनकी शांति के लिए दाएं हाथ से ब्राम्हण को चांदी, चावल दान दें। मंगल चौथे ग्रह में व बुद्ध, राहू के बारहवें घर में, बुहस्पति सातवें, शुक्र पहले शनि पांचवें घर में आसीन है जो परम अशुभ है। जो इनकी मति भ्रष्ट कर रहे हैं। जिससे ए धर्म-कर्म का विरोध करते हैं। इन ग्रहों के प्रभाव से सर के बाल झड़ जाते हैं। जातक गंजा हो जाता है। इन अशुभ ग्रहों के शुभीकरण के लिये नौ दिन नौ ब्राम्हण निरंतर नौ घण्टे जप करेंगे। नौ दिन का भोजन होगा और नौ एवं उसके गुणित अनुपात में अन्न, फल, मेवा, मिष्ठन, घी, गुड़ एवं नौ हजार मुद्राओं का खर्चा आएगा। अनुष्ठन पूर्ण होते ही इनकी बुद्धि अपने आय ठिकाने पर आ जाएगी।

पितर मोक्ष का सन्ना-भन्ना

प्यारेलाल जी बहुत ही भड़भड़िया किस्म के जीव हैं। जब भी मेरे घर आते हैं अपनी धारा प्रवाह बकवास प्रारंभ कर देते हैं। आज आते ही बिना किसी दुआ सलाम के अपने भोथरे प्रश्नों का प्रहार मेरे, मस्तिष्क में करना प्रारंभ कर दिया। बोले ए मरने के बाद मरने वालों का क्या होता है। मैंने कहा अंतिम संस्कार वह बोले मेरा मतलब यह है कि भृत्य शरीर को छोड़कर जीव कहां जाता मैंने कहा भइये ए सब गूढ़ रहस्य की बातें है मुझे मरने के बादवालों पर कोई दिलचस्पी नहीं है।

यह तो कोई कर्मकांडी ब्राम्हण ही बता सकते हैं। वह बोले आप बजा फरमा रहे हैं। हमारे पंडित जी कह रे थे कि मरने के बाद जीव अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग का सुख और नर्क की यातना झेलते हैं और कुछ स्वर्ग और नर्क के बीच त्रिशंकु की तरह अधर में लटकते रहतें है। जब मैंने उनसे पूछा कि ये त्रिशंकु की तरह कौन से जीव लटकते हैं। इस पर उन्होंने कहा कि जिनकी संतान उनके मरणोपरांत किए जाने वाले क्रिया कर्म श्रद्धा पूर्वक नहीं करते। जब से उन्होंने मुझे यह बताया है तब से मेरी नींद उड़ गई। मैंने कहा मरने वाले तो मरकर ठिकाने लग गए अब उनको लेकर तुम्हारी नींद क्यों हराम हो रही है। प्यारे लाल जी चिंतित मुद्रा में बोले। मेरे पिता श्री को सिधारे तीन साल हो गए हैं। मैंने उनकी मुक्ति के लिए कोई कर्मकांड नहीं किया। बेचारे तीन साल से त्रिशंकु की तरह लटक रहे होंगे। मुझे इन्हीं की चिंता खाए जा रही है। पंडित जी कह रहे थे जब तक तुम उनका क्रिया-कर्म और श्राद्ध विधिविधान से नहीं करोगे वह लटकतें-भटकते ही रहेंगे। मरने के पूर्व तो हम उनका कुछ अच्छा कर नहीं सके। कम से कम मरने के बाद तो उनकी दिवंगत आत्मा की शांति के लिये कुछ कर दें। पंडित जी कह रहे थे कि पित्रपक्ष में प्रतिवर्ष उनका श्राद्ध करना चाहिए। प्रतिदिन कम से कम पांच ब्राम्हणों को भोजन कराना चाहिए तभी उनी आत्मा को काले कष्टें से मुक्ति मिलती है।

मैंने कहा पंडित जी मैंने अपने पितरों के लिये तीन वर्षों से कुछ भी नहीं किया। ऐसा अज्ञानता वस हुआ। अब आपने ज्ञानचच्छु खोल दिए हैं। बेचारे तीन वर्ष से भूखे-प्यारे बृम्हाण्ड में भ्रमण कर रहे होंगे। क्या ऐसा कोई उपाय है कि उनकी तीन वर्ष की सुधा शांत की जा सके। पंडित जी तपाक से बोले समाधान तो हर समस्या का है। ऐसा करो कि पांच ब्राम्हण प्रतिदिन वार्षिक की दर से 15 ब्राम्हणों को 16 दिन तक उततम भोजन कराकर पांच-पांच मन अन्न दान कर दो। उनकी तीनों वर्षों की तृषा-सुधा शांत हो जाऐगी। मैंने कहा पंडित जी यह सारा सराजाम जुटाना तो मेरे लिये बड़ा मुश्किल है। कोई और सरल उपाय हो तो सुझाइये। पंडित जी तपाक से बोले ऐसा करो इन सबका सन्ना-भन्ना दे दो। हम उनसे सन्ना (सामान) जुटाकर कृतकृत्य कर देंगे। जबसे पंडित जी ने यह सन्ना-भन्ना का सुझाव दिया है तब से मुझे यही चिंता हो रही है कि इतना मैं कहां से कैसे कर पाऊंगा। जब मरने के बाद इतना सब जीने वाले परिजन को भोगना है तो पता नहीं ए मरने वाले मरते ही क्यों हैं। अब आप ही बताइए अगर ब्राम्हण न होते ता बेचारे पितरों का क्या होता। क्या मरने के बाद वाले सारे कृत्य ब्राम्हणों ने ही पेटेंट करा रखे हें। क्या हम स्वयं नहीं सम्पन्न कर सकते? क्या हमारे खाने-पीने से इनकी सुधा अैर तृषा शांत नहीं होगी क्या विदेशों में भी इस तरह के कृत्य होते है। मैंने कहा कि इसलिए क्योंकि और देशों में ब्राम्हण ही नहीं जो गाय की पूंछ पकड़ कर बैतरणी पार कराएं। प्यारेलाल जी झुंझलाते हुए बोले। पिता जी तो सारी झंझटों से हाथ झाड़ कर चले गए और हमें फंसा गए इस कर्म कांड के झमेले में। हमें तो लगता है कि इन सारी मुसीबातें से छुटकारा पाने के लिए देश के नेताओं की तरह विदेश भाग जाएं।

मेरी शकल देखकर मेरी पत्नी ने पूछा। ए दाढ़ी बाल क्यों बढ़ा रखे हैं? क्रया ग्रीनीज बुक आफ वर्ड रिकॉर्ड में नाम लिखाना है? मैंने कहा इन दिनों पितर पक्ष चल रहा है, पंडित जी ने बाल न बनवाने की सख्त हिदायत दी है इसलिए जब तक पितरपक्ष चल रहे हैं तब तक दाढ़ी नहीं बनेगी। इस पर वह तमतमाते हुये बोली पंडित जी को तो..... अगर यही हाल रहा तो एक दिन खुद भी पितरों जैसे दिखाई देने लगेंगे। अब तुम्ही बताओं पत्नी की बात मानू या पंडित जी की।

ट्रिपिल एट और खबरी चैनल...!

काफी समय पहले मैंने एक कहानी पढ़ी थी। शीर्षक था-'भागो दुनिया खत्म होने वाली है।' कहानी में एक खरगोश था, जो बहुत सोचता था। एक दिन वह एक पेड़ के नीचे बैठा आराम कर रहा था। तभी उसे जोर की आवाज सुनाई दी। आवाज सुनकर वह तेजी से भागा। रास्तें में उसे एक बन्दर मिला। बन्दर ने पूछा खरगोश भाई इतना तेजी से कहां भागे जा रहे हो। खरगोश बिना रूके बोला-दुनियां खत्म होने वाली है। जान बचाना चाहते हो, तो भागो। खरगोश के पीछे बन्द भी भागने लगा इसी प्रकार रास्तें में भालू, शेर, हाथी और हिरण आदि जानवर मिले। खरगोश ने सब को दुनिया खत्म होने वाली है। का समाचार सुनाया सब खरगोश के पीछे भागने लगे। अन्त में एक सियार मिला। आप सब ये भली-भांति जानते है कि सियार में नेतृत्व की प्रधानता होती है। वह अन्य जानवरों की अपेक्षा ज्यादा शातिर बृद्धि होता हैं उसने बारी-बारी से सबसे भागने का कारण पूछां सबने कहा कि भाई हमें कुछ नहीं मालूम। हमें तो खरगोश ने बताया कि दुनियां खत्म होने वाली है जान बचाना चाहते तो भागो। सो हम भागने लगे।

जब सियार ने खरगोश से पूछा तो उसने बताया कि-मैं एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। तभी एक जोर की आवाज सुनाई दी। मैंने सोचा 7दुनिया खत्म होने वाली है। सो भागने लगा। सबने उस पेड़ के नीचे जाकर देखा तो पाया कि एक बड़ी सी डाल पेड़ से टूटकर नीचे पड़ी थी। खरगोश इसी डाल के टूटने की आवाज सुनकर भागा था। खरगोश की, इस बेवकूफी पर सभी जानवर शर्मिन्दा थे।

दूरदर्शन के कुछ खबरिया चैनल ऐसे ही दुनिया खत्म होने के समाचार समय-समय पर प्रसारित कर बड़ी ही चतुराइ और मक्कारी से हमारे दिमाग में अंधविश्वास का जहर घोल रहे हैं।

सात अगस्त की रात को मैं राजधानी भोपाल के होटल पुखराज में दिन भर के

काम-काज से मुक्ति पाकर अपने कमरे में आराम कर रहा था। तभी मोबाइल फोन घनघना उठा। फोन पर पत्नी की घबराहट भरी आवाज आई आप घर-द्वार छोड़कर भोपाल में पड़े हैं क्या आप को मालूम नहीं कि कल याने 8 अगस्त को दुनियां खत्म होने वाली है। मैंने पूछा आपको यह कैसे पता चला। उन्होंने कहा कि टी.वी. में दिनभर से 08.08.08 को दुनियां खत्म होने के समाचार आ रहे हैं। मैंने अपने रूम का टी.वी. ऑन किया तो सचमुच ही टी.वी. के एक खबरिया चैनल से दिनांक 08.08.08 यानि ट्रिपल एट को दुनियां खत्म होने के चौंका देने वाले सनसनी खेज समाचार आ रहे थे। टी.वी. के स्क्रीन पर दुनिया खत्म होने के कम्प्यूटरी कृत दृश्य दिखाए जा रहे थें कहीं बवंडर उठ रहे हैं। कहीं बड़ी-बड़ी गगनचुम्बी इमारतें ताश के पत्तों के महल की तरह धराशाई हो रही हैं। ज्वालामुखी फट रहे हैं। धरती आग की दरिया में डूब रही है। ऐसे भयावह दृश्य देखकर किसी भी कमजोर दिलवाले व्यक्ति को हार्टअटैक आ सकता था। बार-बार यह चेतावनी दी जा रही थी कि हमारे इस 8 के आतंक से जुड़े रहिये। जो नहीं जुड़ेंगे वह जीवन भर पछताएंगे। अब इन अक्ल के अन्धे कालिदास के वंशजों को कौन समझाए कि जब यह दुनिया खत्म ही हो जाएगी तब कैसा पछतावा। आखिर सात अगस्त की रात खत्म हुई और 08.08.08 का वह प्रलंयकारी दिन भी आया। (खबरिया चैनलों के अनुसार) जब दिनांक 8 अगस्त सन् 08 को रात्रि 8 बजकर 08 मिनट और 08 सेकेन्ड पर चीन ने बीजिंग ओलम्पिक खेलों की शानदार शुरूआत की। और निःशब्द नीले आकाश में इन्द्रधनुषी छटा बिखरते हुए दुनिया खत्म होने के समाचारों का पहाड़ा पढ़ने वाले सभी खबरिया चैनलों के मुंह में अच्दी खासी कालिख मल दी। ऐसे ही एक दिन टी.वी. के खबरिया चैनल से एक दिल दहला देने वालाल खौफनाक समाचार प्रसारित हो रहा था कि शीघ्र ही पृथ्वी मंगल ग्रह से टकराकर समाप्त हो जाएगी। इस भयावह समाचार ने मुझे जरा भी विचलित नहीं किया। मुझे लगा इस पृथ्वी पर मुझ जैसे करोड़ों लोग ऐसे हैं जिन्हें कभी हवाई जहाज की यात्रा नहीं की। जब हमारी पृथ्वी मंगलग्रह से टकराने के लिए तेजी से ऊपर जाएगी तब अनायास ही मेरे जैसे उन तमाम लोगों को पृथ्वी समाप्त होने के पहले हवाई जहाज की यात्रा जैसा आनंद प्राप्त हो जाएगा। इस खबरिया चैनलों द्वारा एक सफेद झूठ और परोसा गया था कि - शनि और मंगल ग्रह एक दूसरे के करीब आ रहे हैं। यह संयोग बहुत ही अनिष्टकारी है। पृथ्वी पर प्रलय की प्रबल संभावनाएं हैं। सो भइया मंगल और शनि करीब आकर दूर भी होने लगे फिर भी पृथ्वी सलामत हैं ईश्वर पृथ्वी को, पृथ्वी के खत्म होने की संभावनाएं तलाश करने वाले ऐसे खबरिया चैनलों की कुदृष्टि और कुविचार से बचाए यही कामना है।

जियत न परसैं माड़ -मरे खबा मैं खांड़

प्यारेलाल जी बहुत ही भड़भड़िया किस्म के इन्सान हैं। इन दिनों उन्हें प्रश्नेरिया हो गया है। वह जब भी मेरे घर आते हैं, औरांगउटागं टाइप के प्रश्नों का पिटारा लेकर आते है एक दिन आए और आते ही अपना एक प्रश्न मेरे दिमाक में जड़ दिया, बोले जानते हैं आप कि आजकल ए साधु संत, महंत जंगलो से शहर की ओर भागकर मीडिया चैनलों में अपनी धूनी क्यों रमाते हैं। मैंने नहीं की मुद्रा में अपना सिर हिला दिया। वह जब बोलने लगते हैं तो दूसरों को कुछ बोलने का अवसर ही नहीं देते, जब तक कि सामने वाला उनकी धारा प्रवाह वक्तव्य सुनकर अन्तरध्यान नहीं हो जाता। बोले इसलिए कि आजकल जंगलो में डाकुओं ने अपना साम्राज्य स्थापित कर रखा है। जिनसे तीन-तीन प्रदेशों की सरकार त्रस्त है। अब आजकल के डाकुओं में बाल्मीक जैसी विशिष्टाता तो होती नहीं वह राहजनी, डाकेजनी छोड़कर संत बन जाएं उल्टे इसके ठीक विपरीत हो रहा है।

आज भी प्यारेलाल जी एक दार्शनिक प्रश्न लेकर मेरे पास आए, बोले आप पढ़े लिखे विद्वान हैं यह बतलाइए कि मरने के बाद मरने वालों का क्या होता है? मैने कहा अंतिम संस्कार. वह तो मुझे भी पता है। यह अंतिम संस्कार के बाद जीव शरीर को छोड़कर कहां चला जाता है? यह गूढ़ रहस्य की बातें है। मुझे मरने के बाद वालों में कोई दिलचस्पी नहीं है पर कर्मकाण्डी लोग तो कहते हैं कि मरने के बाद जीव कर्मानुसार स्वर्ग-नरक की यातनाएं झेलते हैं। जो व्यक्ति अपने मृत परिजनों के किरिया करम विधि विधान से नहीं करते उनके पुरखा नहीं तरते, उन्हें मोक्ष प्राप्त नहीं होता। यह मोक्ष वोक्ष का चक्कर तो मेरी समझ में नहीं आता मैने कहा पर यह तुम क्यों जानना चाहते हो? प्यारेलाल जी बोले मेरे (पिता श्री को परमगति को प्राप्त हुए तीन बरस बीत गए हैं, मुझे उन्हीं की चिंता है। पंडित जी कह रहे थे जब तक तुम उनके सारे संस्कार विधिवत सम्पन्न नहीं करा देते तब तक उनकी आत्मा भटकती रहेगी। कितने चोले बदलने पडेंगे तब कहीं जाके छुट्टी हो तो हो।

पिता जी तो सारे झंझटो से हाथ झाड़कर चले गए और हमें फंसा गए कर्मकांड के चक्रव्यूह में, जिसें बेध पाना मेरे लिए अति दुर्गम है। प्यारेलाल जी घोर बुद्धिजीवी होने के साथ-साथ घोर संदेह वादी भी हैं बोले अगर कर्मकांड के बाद भी पिताजी को मोक्ष प्राप्त नहीं हुआ तो? मैंने कहा हे! बुद्धिविनायक जिसको जाना था वह तो चला गया अब उसकी चिंता में क्यों अपना निर्मल मन मलिन करते हो। पिताजी की शांति के लिए जीते जी तो हम उन्हें कुछ अच्छा खिला पिला नहीं सके, सोचते हैं कि अब मालपुआ,खुरचन, मेवा मिष्ठान खिलाकर उनकी क्षुधा शांत कर दें मैंने कहा इसी को कहते हैं, जियत न परसैं माड़,मरे खबामैं खांड़। मरे हुए को कैसे खिलाओगे। प्यारेलाल जी बोले ब्राम्हणों को खिलाकर। उन्हें खिलाने से पितरों को प्राप्त होता है। पंडित जी कह रहे थे प्रतिवर्ष उनकी श्राद्ध होनी चाहिए। कम से कम पांच ब्रम्हणों का भोज होना चाहिए। यहां तो अपने पेट के ही लाले पड़े हैं ए पांच ब्रम्हण कहां से जेंवाएं। तीन वर्ष से भूखे प्यासे भटक रहे हैं। पंडित जी ने कहा है पांच ब्राम्हण वार्षिक श्राद्ध की दर से तीन वर्ष के पंद्रह ब्राम्हणों को भोजन करा दो, तुम्हारे पिताजी की अतृप्त आत्मा तृप्त हो जाएगी। मान लो अगर यह ब्रह्मण्ड नहीं होते तो क्या सभी आत्मांए भूखी-प्यासी ब्राम्हण में विचरण करती। मैंने कहा हे! पागलखाने के सुकरात तुम्हारे इन गूढ़ दार्शनिक प्रश्नों का मेरे पास कोई जवाब नहीं है। मुझे तो लगता है कि यह सांसारिक लोगों को छोड़कर वानप्रस्थ की ओर प्रस्थान कर जांऊ या फिर डी आईजी पंड्या की तरह गृहस्थ से विरक्त होकर ''मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरो न कोई'' गाऊं आज मेरी पत्नी ने भी मुझे धिक्कारा बोली ये दाढ़ी क्यों बढ़ा रखी है। मैंने कहा पंडित जी का कहना है जब तक पितर पक्ष चल रहा है दाढ़ी नहीं बनेगी।

वह बोली वाह रे मेरे अक्ल के तहसीलदार धिक्कार है। तुम्हारी बुद्धिमता पर। आज के वैज्ञानिक युग में रहकर भी अंधविश्वास के समुंदर में गोते लगा रहे हो। अगर यही हाल रहा तो एक दिन तुम स्वयम् पितरों जैसे दिखाई देने लगोगे समझे कि नहीं। अब आप ही बताइये पंडित जी का कहना मानूं या पत्नी का। मैंने रस लेते हुए कहा पत्नी का मानोगे तो लोग तुम्हे जोरू का गुलाम कहेंगे। कहने दो वह मुझे मंजूर है पर यह कर्मकाण्ड और पितर पचीसी मेरे वश का रोग नहीं है,यह कहते हुए प्यारेलाल जी उठे और नाई की दुकान की ओर चल दिए।

ये देश है साधू-संतो का

एक वह समय था जब हमारे देश के ऋषि मुनि साधु संत,घनघोर बियावान जंगलो में जाकर कठोर तपस्या करते थे, शरीर को सुखाते थे, कद , मूल, पत्तियां खाकर अपनी छुधा शांत करते थे। तपस्या में इतना लीन हो जाते थे कि दीमक उनकी काया को ढंक लेती थी। उर्वसी और मेनकाएं भी उनके तप को डिगा नहीं पाती थीं। अब समय बदल गया है, आजकल के साधु-संत, महंत मीडिया (दूरदर्शन) के वातानुकूलित कक्षों में सुखाशन पर बैठकर तत्व ज्ञान की बातें बतलाते हैं, त्याग और बलिदान का संदेश देते है, मेवा मिष्ठान का भोग लगाकर अपनी काया को कमनीय बनाते हैं। समय का फेर है। जैसे इन मीडिया के महंतो के दिन फिर हैं,वैसे सबके फिरे।

कभी हमारा देश वीर जवानों, अलबेलों और मस्तानों का देश हुआ करता था। लोग मस्त होकर यह देश है वीर जवानों का अलबेलो का मस्तानों का कहकर मस्ती से नाचने-गाते थे। अब यह देश साधु-संत और महंतो का होकर रह गया है। इनके परम अनुयायी राष्ट्रनायक, लक्ष्मीपति खुश होकर यह देश है साधु-संतो का, संतो और महंतो का गाकर धूम मचाते है। उनका आशीष पाकर परम सुख शांति और वैभव की प्राप्ति करते है। दूरदर्शन के आस्था और संस्कार जैसे चैनलों से इन मीडिया के महंतो के प्रवचन आते रहते हैं।

जब मेरे पास कोई काम नहीं होता तो उस फालतू समय में मैं टी.वी. देखने में लगता हूं। यह टी.वी. फालतू समय को सार्थक करने का अच्छा माध्यम है। जब सीरियल खत्म हो जाता है तो विज्ञापन, फिर पांच मिनट का सीरियल और दस मिनट का विज्ञापन दो, चार घंटे कैसे गुजर जाते हैं पता नहीं चलता।

यों दूरदर्शन के खबरिया चैनलों में भी क्या है, रोज- रोज वहीं समाचार फलां नेता ने इतना कमीशन खाया, उसके तेल घोटाले की पोल खुली भू माफिया ने लाखों रूपए की घूंस खिलाकर करोड़ो रुपये की सरकारी जमीन हड़प ली, जिसकी सीबीआई जांच

चल रही है। मुझे संसद में हुई कार्यवाही देखने में बहुत तरस आता है। दो -चार मिनट की बहस फिर कुर्सी तोड़ प्रतियोगिता, दो-चार मिनट मिनट की कार्यवाही फिर बर्हिगमन।

जब खबरिया चेनलों से मन ऊब जाता है तो आस्था चैनल देखने लगता हूं यह भक्तिरस। से सराबोर चैनल है। एक तांत्रिका का यंत्र,मंत्र,तंत्र पर आधारित प्रवचन चल रहा था। ग्रहों के दुष्प्रभाव का वर्णन चल रहा था। ग्रहों के दुष्प्रभाव का वर्णन कर रहे थे, सुनकर मैं हतप्रभ रह गया। मुझे लगा सारे ग्रह प्रतिकूल हैं फिर बोले ग्रहों की शांति के लिए अनिष्ट नाश के लिए हमने एक सम्पूर्ण कष्ट निवारण सिद्धि चैतन्य यंत्र का निर्माण किया है, जिसे धारण करने से सात पुस्तों का दरिद्दर दूर हो जाता है। मुझे लगा कि इस यंत्र की जानकारी अगर पहले हो जाती तो काम-धाम छोड़कर सुखपूर्वक जीवन बिताता। इस यंत्र की निछावर राशि आम आदमियों के लिए 2000 रुपये व लक्ष्मीपतियों के लिए विशेष यंत्र की कीमत गुप्त रखी है।

धर्म को किस तरह उद्योग बनाया जाता है, यह गुरूमंत्र धर्म ध्वाजा के वाहकों से सहज सीखा जा सकता है। धर्म को उद्योग बनाने की संस्कृति का विकास हमारे देश में तेजी से हो रहा है। ऐसी संस्कृति के प्रादुर्भाव से अन्धविश्वास पैदा होता है। जातिवाद की जड़े मजबूत होती हैं, भीख मांगकर अपनी जीविका चलाने वाले फलते फूलते है। हम तेजी से ऐसी पतनशील भयानक संस्कृति का शिकार हो रहे हैं। एक मठ के मठाधीस आस्था चैनल से प्रवचन कर रहे थे। रुपया, पैसा, सोना, चांदी, हीरे जवाहरात भगवत भक्ति के सामने निर्मूल्य हैं,निस्सार हैं,ऊबकर मैंने चैनल बदल दिया,जहां समाचार आ रहा था मंदिर के पुजारी मूर्तियों के सारे आभूषण उतारकर नदारद हो गये। इस कृत्य पर मुझे बहुत वितृष्णा हुई। मैने पुनः आस्था चैनल लगा दिया जहां स्वामी जी सम्बन्धों के पवित्र समीकरणों की व्याख्या कर रहे थे, हर पराई स्त्री को माँ मानो, हर युवती को बहन, इन पर कुदृष्टि नहीं डालनी चाहिए। हमारे संत तुलसीदास ने कहा है इन्हीं कुदृृष्टि विलोभहिं जेई, ताहिंबधे कहु पाप न होई। प्रवचन पूर्ण होने पर मैने चैनल फिर बदल दिया। समाचार आ रहा था कि पूजा का थाल सजाकर पूजा करने मंदिर आई नवयौवना की मंदिर के पुजारी ने अस्मत लूट ली। हमारे समाज के संतो का चरित्र भी देश के नेताओं की तरह संदिग्ध हो गया है। एक संत को और मैं बड़े ध्यान से सुना करता हूं, वह फौजदारी के वकील की तरह प्रवचन देते हैं। कुछ संत बंधु ऐसे हैं जो हर प्रसंग, चाहे वह वीर रस का हो, या भायानक अथवा हास्य रस का ही क्यों न हो उसे वह करूण रस मे ही प्रस्तुत करते हैं। ए

मीड़िया के महंत जिस तरह से हमारा कल्याण कर रहें है। उसका भगवान ही मालिक है। स्थितियां

कुछ इस प्रकार हैं।
क्या होगा जाने इस बेबस समाज का
आस्था की डोर जिससे टूट गई हो किस किस को सम्हालेगा भला बाप वधु का
बारात की बारात अगर रूठ गई हो।

चम्पाकली का तीन सौ, जयनंदन का तीस

एक जगजाहिर जागीरदार जी स्वर्गवासी हो गए वह बहुत ही सामाजिक समरसता की भावना से ओत-प्रोत व्यक्तिव थे। वह बेहद कलापरखी और कला प्रिय थे। उनकी नाच गाने में विशेष रूचि थी। जब भी कोई सामाजिक राजनैतिक या धार्मिक आयोजन कराते या कोई तीज त्योहार यथा होली, दिवाली मनाते, तो उसमें चम्पाकली का मुजरा जरूर होता। जिसे देखने-सुनने के लिए आसपास के गांव का जन समूह ऐसे उमड़ पड़ता। जैसे किसी नेता के मंत्री बनने के पशचात पहली बार नगरआगमन पर उमड़ता है। अपने इकलौते बेटे को भी वह यही परामर्श देते कि मेरे मरने के बाद भी यह परम्परा जारी रहना चाहिए।

स्वर्गवासी पिताश्री के मरणोपरान्त होने वाले सभी कृत्यों से निवृत होकर ब्राम्हण समुदाय के विशेष आग्रह पर श्रीमद् भागवत कथा एवं अठारह पुराणों के वाचन का आयोजन किया गया। भण्डारा के अवसर पर स्वर्गवासी पिताश्री की मंशा के अनुसार चम्पाकली का मुजरा भी हुआ। सभी ने रात भर मुजरे का भरपूर आनन्द उठाया।

विदाई के अवसर पर भगवान कथा वाचन कर रहें पुरोहितों, पौराणिकों को एक पीतम्बरी के साथ तीस-तीस रूपए भेंट किए गए। चम्पाकली को तीन सौ रुपये के साथ एक जड़ाउदार बेशकीमती घांघरा व चुनरी ससम्मान समर्पित किया गया। किसी ने इसका प्रतिवाद किया कि पंडित जी को तीस रूपये और चम्पा कली को तीन सौ, यह तो उचित नहीं है इस पर जागीरदार जी के श्रवंणतुल्य पुत्र ने कहा कि यही उचित है। पुरोहितों ने किया ही क्या है? दूसरे की लिखीं इबारत वाचकर सुना दिया और मेवा मिष्ठन का भोग लगाया।

उधर चम्पा कली को देखो, कितनी मेहनत की है रात भर पैर चलाए हैं, ढ़ोलक की थाप पर। कितनी अदाएं बिखेरी हैं। ठंडी में भी पसीने की बूंदे ढरक रही थी। हमने जो भी किया ठीक किया।

इधर जब पंडित जी घर पहुँचे तो उनकी पत्नी ने बड़े ही उत्साह से उनका स्वागत किया। उन्हें पूरा विश्वास था कि आज पंडित जी चढ़ोत्तरी और भेंट की मोटी रकम लेकर आए होंगे। किन्तु जब पंडित जी ने उनके हाथ में कुल तीस रुपये थम्हाए तो उनके हाथ से खुशी के कबुतर उड़ गए। बोली यह क्या? दस दिन की कमाई तीस रुपये जिसके प्रति उत्तर में पंडित जी ने बस इतना ही कहा।

महिमा घटी पुराण की, का करैं जगदीश।
चम्पाकली का तीन सौ, जयनन्दन का तीस।।

स्वामी जी रुष्ट हैं...

एक ख्यातिलब्ध प्रवचनी संत अपने प्रवचन में सम्पूर्ण दुःख और कष्ट का हेतु आपेक्षाओं को बता रहे थे। बोले संसार में समस्त दुःखों का कारण आपेक्षाएं हैं आपेक्षाएं ही सारे कष्ट की जननी हैं। जितनी ज्यादा आपेक्षाएं करेंगे उतना ही कष्ट भोगेंगे। हम भारतीय लोग बहुत ही खतरनाक किस्म के आपेक्षावादी हैं एक नवोदित समाज सेवक आया, स्वामी जी को साष्टांग प्रणाम कर निवेदन किया महाराज हम बहुत दुःखी है। पिछली चुनाव में एक जनसेवक आए थे, आश्वासन दिया था। कि अगर आप लोग हमें जिताते हैं तो हम आपके सारे कष्ट दूर कर देंगे। रात-दिन बिजली जलेगी, खेतों में गंगा-जमुना हहराएंगी, हर हाथ को काम मिलेगा लेकिन चुनाव जीतने के बाद वह 'गदहे के सिर से सींग' की तरह गायब हो गए हैं। अब तो हमें उनका 'मनहूस' चेहरा भी याद नहीं है। हम सब परम दुःखी हैं, निराश हैं, हतास हैं। स्वामी जी थोड़ी देर तक आंख बंदकर ध्यान मग्न रहे। जैसे कि अपने क्षेत्र से फरारी काट रहे उस विधायक को खोज रहे हों फिर आंखे खोलीं, शांत स्वर में बोले 'अपेक्षा'! तुम्हारे सारे दुःखों का कारण आपेक्षा है। जो तुमने चुनाव जीतने वाले सम्बन्धित विधायक से जोड़ रखी हैं। नेताओं को चुनाव जिताकर सत्ता की घास चरने के लिए छोड़ दो। उनसे किसी प्रकार की अपेक्षा मत करो। आत्मनिर्भर और स्वाबलंबी बनो। इसी से तुम्हारा कल्याण है लेकिन हम उन्हें जिताकर उनसे आपेक्षाएं करते हैं और कष्ट भोगते हैं। काम करो, धन कमाओ, दान करो यही जीवन का सार तत्व है हम साधु संत लोक कल्याण की बात सोचते हैं जो तन, मन, धन से संतो की शरण में आता है, उसका कल्याण हो जाता है। अपना कर्तव्य करो, फल की अपेक्षा मत करो, नहीं तो कष्ट उठाना पड़ेगा। गीता में स्वयं भगवान कृष्ण ने कहा है। 'कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर रे इंसान कर्म पर अपना अधिकार समझो, फल पर तुम्हारा कोई अधिकार नहीं है। इसलिए हे मनुष्यों,जनतंत्र की जनताओं जिस प्रकार नेता लोग चुनाव जीतकर जनता से मुंह मोड़ लेते हैं, उनसे अनापेक्षित होकर सत्ता सुख का भोग करते हैं इसी प्रकार जनता को

चाहिए कि वह भी विजयी नेता से अपनी सारी आपेक्षाएं त्यागकर सुखी हो जाएं नवोदित जनसेवक युवा था। स्वामी जी के वचनों को सुनकर उसे आक्रोश आ गया। बोला आप हमारे हिमायती हैं या नेताओं के दलाल आज कल साधु-संत,ऋषी-मुनियों के प्रति जो लोक आस्था थी, वह उनके असंतोचित कृत्यों को देखकर स्खलित होती जा रही है। जिन पूजा स्थलों से पवित्र प्रार्थनाओं की आवाजें सुनाई देती थीं, वहां से आज साधु, संत महंतो के भुजपासों में छटपटा रहीं वेवास लाचार युवतियों की कराहें सुनाई देती हैं। अब ऐसा वह जानबूझकर थोड़े ही करते हैं इस सम्बन्ध में उनका कहना है कि हम भी इंसान है, हमारे अन्दर भी वासना रूपी भेड़िया निवास करता है, जिसे हम अपनी भक्ति, शक्ति से नियंत्रण में रखते हैं पर जब कभी किसी मेनका या उरवसी को देखकर यह अनियंत्रित हो जाता है और असंतोचित कृत्य कर देता है तो लोग हमें क्यों धिक्कारते है। अभी हाल ही में दूरदर्शन में समाचार आया कि प्रदेश की संस्कार धानी में संचालित एक विशाल आश्रम के आश्रमधीश कुछ संदिग्ध गतिविधियों में संलग्न पाए गए। पुलिसिया जांच में कई गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन हुआ है। स्वामीजी का आश्रम अनेकानेक कक्षों व दीर्घाओं में विभाजित है दर्शन दीर्घा में बैठकर स्वामी जी अपने श्रद्धालुओं को दर्शन दिया करते थे। दूसरा एक प्रवचन कक्ष था, जिसमें आसीन होकर भक्तजनों को ज्ञान-ध्यान की बातें बताया करते थे कि संसार निस्सार है, मिथ्या है।

यहां काम धाम, धन, धरम और माया के बन्धन हैं भगवत भजन और संत सेवा ही इससे मुक्ति का साधन है। संतो के प्रति सेवा समर्पण की सच्चे सुख का आधार है, ऐसा उपदेश देते थे। इनसे हटकर एक और सत्संग कक्ष था, जहां पर स्वामी जी सर्वाग सुन्दरियों के साथ सत्संग करते थे। उन्हें समझाते यही जीवन का सार है। बिना संसर्ग के नारी जीवन निस्सार है। ईश्ववर ने आपका सृजन इंसी हेतु किया है। प्रवचन करना, रमणियों का रमण कर उनका जीवन सार्थक करना स्वामी जी के नैसर्गिक कृत्य थे। एक और मंत्रणा कक्ष था, जहां उच्च स्तरीय पहुंचे हुए महात्मन लोगों से स्वामी जी गुप्त मंत्रणा किया करते थे। इन मंत्रणाओं का खुलासा अभी बाकी है। पुलिस वालों ने जो उनके इन सारे रहस्यों का पर्दाफाश कर उनकी कमनीय कंचन काया को कलंकित कर दिया है, उससे स्वामी जी के इन परम अकथनीय कृत्यों से बहुत दुःखी हैं। उनके अंतस से बस यही टीस निकल रही है।

बनाया हमने जिसे रहनुमा जमाने में।
उसी ने छोड़ दिए सांप आशियाने में।।

भ्रष्टम् शरणम् गच्छामी

एक ऐसी जगह थी जहां रहने वाले सभी लोग नकटे थे, याने ऐसे लोग जहाँ सब की नाक कटी होती थी। इस जगह को नकटिस्तान के नाम से जाना जाता था। हमारे देश की तरह यहाँ भी लोकतांत्रिक तरीके से नकटों के द्वारा नकटों के लिए नकटे जन प्रतिनिधि चुने जाते थे। इनकी सरकार नकटों की सरकार कही जाती थी। जो सिर्फ नकटों के प्रति ही उत्तरदायी थी। यथा नाम तथा गुणा के अनुसार यहाँ के लोगों में जरा भी लोक,लाज,शर्म हया नाम की कोई चीज नहीं थी। यहां के नेता हाकिम, उच्च ओहदेदार अधिकारी व्यापारी कर्मचारी सभी नकटे थे। चारों ओर नकटों का सामाज्य था।

नकटों के इस जहान में कहीं से एक नाक वाला पहुँच गया। उसे देखकर सभी नकटे हैरान थे। वह जहां जाता नक्कू आया, नक्कू आया कहते हुए नकटे उसके पीछे पीछे चलने लगते। हर जगह उसे नकारा जाता। दुकान, आफिस, अस्पताल जहां भी जाता यह कहकर भगा दिया जाता कि हम सिर्फ नकटों के लिए हैं हम नक्कुओं का कोई भी काम नही करते। मुहल्ले भर के नकटे अपने घर का कूड़ा करकट नक्कू के घर के सामने फेंक देते। तंग आकर उसने अदालत का दरवाजा खटखटाया लेकिन वहाँ भी उसे निराशा ही हाथ लगी वकीलों ने यह कहते हुए उसे वहां से भगा दिया की यह अदालत सिर्फ नकटों के लिए है हम तुम्हारा केश रजिस्टर्ड नही कर सकते नकटों की इस अपेक्षा से त्रस्त होकर उसने अपनी भी नाक कटवाली और नकटों की जमात में शामिल हो गया। अब उसे कोई परेशान नहीं करता था। सभी नकटे उसका सम्मान करने लगे। हर काम में उसकी तन,मन,धन से मदद करते अब वह परम सुखी था।

कमोवेश आज हमारे देश की स्थिति भी नकटिस्तान जैसी ही हैं। वहां नकटों का वरचस्व था यहाँ बेईमान और भ्रष्टचारियों का है। आज देश की सम्पूर्ण फिजा में भ्रष्टाचार का जहर घुला हुआ है। यहां की सारी नेयतें बेइमान और भ्रष्टाचारियों के आधीन हैं। शासन, प्रशासन सरकारी कार्यालय व्यापार और वाणिज्य, ऐसा कोई क्षेत्र

नहीं बचा जहाँ भ्रष्टाचार ने अपने अंगद पांव न जमा रखे हों। हर जगत भ्रष्टाचारियों का बोल बाला है। ईमानदारों को लोग हेय की दृष्टि से देखते हैं। राणासांगा के वंसज कह कर ताना मारते हैं। भ्रष्टाचार के नंदनवन में निर्भीक विचरण कर रहे भ्रष्टाचारी किसी ईमानदार के पहुंच जाने पर ऐसा महसूस करते हैं जैसे लकड़बग्घो के क्षेत्र में कोई सिंह पहुंच गया हो।

आज हमारा देश भ्रष्टाचार प्रधान देश बन गया है। भ्रष्टाचार हमरी संस्कृति, हमारी परम्परा हमारे रहने जीने का ढंग हो गया है। भ्रष्टाचार और बेईमानी हमारे खून में दूध में पानी की तरह घुलमिल गई। हमारा सम्पूर्ण जीवन भ्रष्टाचार के काले समुंदर में आकंठ डूबता जा रहा है। भ्रष्टाचार विमुख जीवन की कल्पना असंभव प्रतीत होने लगी है। भ्रष्टाचार हमारे जीवन को सहज बनाता है। ईमानदारी कष्ट देती है। बेईमानी से सुख मिलता है। इससे हर काम सहज हो जाते है। किसी भी कार्यालय में बिना लिए दिए कोई भी काम सम्पन्न नहीं होते। भ्रष्टाचार और बेईमानी सफल जीवन की कुजी है। हमारे देश में वहीं सफल है जो भ्रष्टाचार में संलिप्त है। बदरंग चेहरा, दागी चरित्र बेढंगी चाल हमारी लोकतांत्रिक पहचान बन गई है। क्या करें आज सत्ता के शिखर से ही भ्रष्टाचार की तरणतारणी गंगा प्रवाहित हो रही हो तो लोग उसमें हाथ धोने से भला कैसे चूक सकते हैं।

समाज व्यक्तियों का समूह होता है। इसके नियम कानून और परम्पराएं इसी विसाल समाज के द्वारा निर्मित और संचालित होती हैं। उससे हट कर किए जाने वाले कार्य असमाजिक कार्यों की श्रेणी में आते हैं। आज जब की समाज में बहुलता बेईमान और भ्रष्टमाने जाएंगें। यहां रिश्वत लेने देने वाले घपले और घोटाले करने वाले कमीसन खोर लोग भ्रष्ट नहीं माने जाएंगे। भ्रष्टों के समाज में यह सृष्टाचार है। यहाँ सबसे बड़ा भ्रष्टाचारी तो वह है जो ईमानदार है, सत्यवादी है, नैतिकता का ठेकेदार है। सदाचारी है।

ऐसे सभी लोग हमारी भ्रष्टाचारी परम्परा, संस्कृति और कार्य व्यवहार के लिए कलंक हैं। भ्रष्टाचारियों के समाज में भ्रष्टाचार की निर्मल परम्परा से दूर रखना चाहिए। कहते हैं कि एक ईमानदार सौ भ्रष्टाचारियों से ज्यादा खतरनाक होता है। एक ईमानदार पूरी भ्रष्टाचारी परम्परा को प्रदूषित करता है। लेकिन देश के महत्वपूर्ण पद पर आशीन अपनी ईमानदारी और वित्तव्यवस्था के लिए प्रख्यात व्यक्तिव की निरीहता को देखते हुए यह मान्यता ध्वस्त नजर आती है क्यों आज अधिकांश भ्रष्टाचारी इन्हीं की नाक के नीचे फल-फूल रहे हैं।

हमारे देश के नेता भ्रष्टाचारी संस्कृति की अमूलनिधि हैं। इन्होने भ्रष्टाचार की

संस्कृति को फैलने-फूलने एवं विस्तार देने में काफी मेहनत की है। आज देश में जितने भी रिकार्डतोड़ घपले-घोटाले हो रहे हैं यह सब इन्ही के भ्रष्ट सुकर्मों का फल है। इनके बदौलत आज कोई भी ईमानदार सांसद और विधायक विधान सभा में टिक नहीं सकता इनकी भी हालत के लिए उसे भी बेइमान और भ्रष्ट होना पड़ता है।

गांधी जी के सत्याग्रह की तरह भ्रष्टाचार की प्रकृति भी अहिंसक होती है। यह बड़े खामोशी से अपना काम करती है। यह नतो किसी को मारती है, न तोड़ती है अपितु जोड़ती हैं। यह दो भ्रष्टाचारियों के बीच समन्वय और सम्बन्धों के सुन्दर समीकरण स्थापित करती है। जब कि ईमानदारों के बीच यह व्यवस्था नहीं देखने को मिलती। जो काम ईमानदारी की बदौलत नही हो पाते वह भ्रष्टाचार के द्वारा तुरन्त बन जाते हैं। ईमानदार बनकर घट्टा खाने से बेईमान बनकर सुखभोग करना बेहतर है। हमारा यह परम कर्तव्य होना चाहिए की हम भ्रष्टाचार की संस्कृति के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें। जहां भ्रष्टाचार होगा वहां ईमानदारी का जहर फैल ही नहीं सकता। सत्य और ईमानदारी का अनुयायी बनकर राजा हरिशचनद्र की तरह दर-दर की ठोकरें खाने से बेईमान और भ्रष्ट होकर राज करना ज्यादा बेहतर है। ''स्वर्ग की दाशता से नर्क की बादशाहत अच्छी होती है। भ्रष्टाचार आज का राजधर्म है। वर्तमान युग का सास्वत सत्य है। वह उतना ही ज्यादा सुखी है। इसलिए अगर आज के युग में सुखपूर्वक जीना चाहते हैं तो भ्रष्टाचार की सरण में जाइए

जनता, चुनाव और करामाती नेता

आमधारण है कि देश-दुनिया के अधिकांश नेता निहायत करामाती और स्वार्थउद्यमी होते हैं। सामान्य तौर पर इनके क्रिया कलाप स्वार्थ की खाल में मढ़े होते हैं। आदमी से नेता बनना जितना आसान है, नेता से आदमी बनना उतना ही कठिन। जब भी कोई व्यक्ति आदमी से नेता बनता है और नेता बनकर किसी चुनाव में खड़ा होता है तो पता नहीं उसके अन्दर देशभक्ति और जनसेवा का जज्बा कैसे उफान लेने लगता है। वह जन सेवा के लिए आकुल-व्याकुल होने लगता है। बिना जल की मछली की तरह तड़पने लगता है। उसे लगता है कि वह कितना जल्दी चुनाव जीत कर अपने जन सेवा का अरमान पूरा करले। मानो अगर उसे चुनाव जितवा कर जनता ने अपनी सेवा का अवसर नहीं दिया तो उसके प्राणपखेरु उड़ जाएँगे औ उसकी जनसेवा के लिए विकल अतृप्त आत्मा स्वर्गलोक और मृत्युलोक के बींच त्रिशंकु ती तरह भटकती- रहेगी। क्या करें इन बेचारे जन सेवकों के पास बिना चुनाव जीते जनसेवा करने का कोई विकल्प ही नहीं है। ए चुनाव जीतकर की गई जनसेवा को ही वास्तविक,सच्ची और लीगल जन सेवा मानते हैं। ए भूलकर भी अनलीगल जन सेवा करने के पक्षधर नहीं है। चुनाव जीतने के बाद इनके द्वारा किए गए हर कार्य लीगल हो जाते हैं। फिर चाहे ये चुनाव ग्राम स्तर पर पंच और सरपंच के हों या जिला स्तर पर जिला जनपद के या फिर विधान सभा व लोक सभा के। सब में इनकी एक सी गत रहती है।

जिस प्रकार जमाखोरों को काली कमाई बहुत भाती है उसी प्रकार नेताओं को कुर्सी। चुनाव आते ही ए कुर्सी के लिए ऐसे दीवाने हो जाते हैं। जैसे- मजनू लैला के लिए, फरहाद सिरी के लिए और राँझा हीर के लिए दीवाने हो गए थे। चुनाव जीतने के बाद कुर्सी मिलते ही नेता ''सरकार'' हो जाते है और छिनते ही बेकार। याने नेता दो प्रकार के होते हैं एक वह जिनके पास कुर्सी होती है वे रोजगार वाले नेता कहलाते हैं, जिनके पास नहीं होती वे बेरोजगार नेता कहे जाते हैं। चुनाव जीतने व इस कुर्सी (पेड़खण्डासनी) को प्राप्त करने के लिए यह कुछ भी करने को तैयार हो जाते हैं। वह सारे काम जो अपने माता-पिता औ पत्नी के कहने पर घर में भी कभी न किए

होंगे। रूमफ्रेसनर स्प्रेकर वातानुकूलित मकानों में रहने वाले ये बोटों के याचक मजदूरों के हाथ में पड़े छाले औ पैरों की विमाइयाँ सहलाते हैं किसानो के थके कंधो को थपथपाते हैं। उनके मैले कुचैले, फटे-पुराने चीथड़ों में लिपटे बच्चों को गोद में उठाकर पुचकारते हैं। अपनी स्त्री की हुई रुमाल से उनकी नाक पोंछते हैं। मूमफली और खोमचे वालों से खड़े होकर बात करते हैं। उनकी दो रुपये पैकेट वाली मूमफली का दाम दस रुपये चुकाते हैं सायद इस उम्मीद में कि अगर चुनाव जीत गए तो दस के दस हजार बनालेना तो हमारे ही अधिकार क्षेत्र में होगा। ऐसा करते हुए बेचारे चुनावधर्मी नेताओं को कितनी आत्मग्लानि हुई होगी, कितना मानसिक आघात जनता तो यही समझती है कि यह सारा नाटक बोटों के लिए किया जा रहा है। याने चुनाव सम्पन्न होने तक ए लोग वह सारे हथगंडे अपनाते है। जिससे जनता को रिझाकर वोट प्राप्त किए जा सकें। चुनाव के पहले तक ये सब जनआज्ञाकारी बने रहते हैं। जनता जो भी कहेगी तत्काल उसका पालन करेंगे। अगर जनता कहेगी कि मुर्गा बन जाओ तो हम बोट देंगे, तो ए तुरन्त मुर्गा बन जाँएगे, गुड्डी तान लेंगे। जिनकी गर्दन सदैव तीर की तरह बनी रहती थी वह आम्रफल से लदी डाली की तरह झुक जाती है। जनता को देखते ही अधरों में मृुदृल मुस्कान लाते हुए अपने दोनो हाथ जोड़कर शरीर को घुटनो तक मोड़ कर प्रार्थना करने लगते है ''शरण में आए हैं हम तुम्हारी,दया करो हे दयालू जनता'' चुनाव के बाद प्रार्थना करने वाले बदल जाते है। जनता के सेवक जनता के जनार्दन बन जाते है। चुनाव के पहले तक इन्हे जनता के हजार दुख, कष्ट दिखाई देते हैं। व जनता को एव-एक करके सारे दुख, कष्ट और अभाव बतलाते हैं। और उन्हें दूर करने के सब्जबाग दिखलाते हैं। कहते है अगर आपने हमें जिताया तो हम आपके सारे दुःख सारे संकट जड़ से मिटा देंगे। जनता इनके इस अप्रत्यासित आचरण को देख कर भौचक रह जाती है। सोचती है कि हे! भगवान चुनाव में खड़े होते ही इन्हें ए सहसा क्या हो गया जो ए तारपीन के तेल की तरह तरल और मोम से भी ज्यादा मुलायम होकर संकट मोचन हनुमान बन गए हैं।

हर प्रत्यासी बड़े-बड़े विद्वानों और अनुभवी वरिष्ट नेताओं के पास जाकर लुभावने नारे और आकर्षक वकतव्य (घोषणापत्र) बनवाते हैं। ताकि जनता उसको पढ़कर उसके वाक जाल में फंस जाए। कोई जरूरतमंद लोगो को अधिक से अधिक लाभ पहुंचाने का वायदा करता है। कोई बेरोजगारों को रोजगार दिलाने की हुम्मी भरता है। जबकि हकीकत यही है कि खुद बेरोजगारी का घट्टाखाकर नेता बने हैं। कोई भ्रष्टाचार के दल-दल में फँस समाज को उबारकर निर्मल बनाने का लक्ष्य निर्धारित करते हैं। अब नैतिक

दृष्टि से नेता कितने निर्मल हैं। यह बताने की जरूरत नहीं है। जो स्वयं भ्रष्टचार के दल-दल में आकंठ डूबा तो वह भला दूसरों को क्या उबारेगा। कोई भगीरथ बनकर सूखाप्रभाहित और पेयजलसंकट से जूझ रहे क्षेत्रों में गंगा-जमुना प्रवाहित कराने का संकल्प लेता है। कोई कहता है कि अगर जनता ने मुझे जिताया तो मै उसका जीवन रोंशनी और प्रकाश से भर दूंगा। और अगर हार गए तो ?

जिसे देखो वही वादों की बड़ी-बड़ी चट्टाने जनता के सर पर फेंक रहा है। जनता बेचारी इनके कृत्य को देख कर पसो पेस में है कि किसे चुने और किसे न चुने।

जनता पोलिंग बूथ में, खड़ी लिए मत पत्र,
किसे चुने किसे न चुने, सबसे है वह त्रस्त।
जैसा कल था आज है, स्थिति बड़ी विचित्र,
कोई भला भविष्य के, कैसे खींचे चित्र।

समस्या समाधान समिति

हमारा देश समस्या प्रधान देश है। यहाँ हर कोई किसी न किसी समस्या से ग्रस्त है। इसमें से कुछ समस्याएँ राष्ट्रीय होती हैं, कुछ सामाजिक,कुछ राजनैतिक और कुछ व्यक्ति गत। व्यक्ति गत समस्याओं से जूझ रहे कुछ समस्या ग्रस्त लोगों द्वारा, समस्याओं से निजात पाने के लिए स्थानीय स्तर पर एक समस्या समाधान संगोष्ठि का आयोजन किया गया। जिसमें नगर के नेता, डाक्टर, साहित्यकार और पुलिस के आला अधिकारियों ने भाग लिया। तय यह किया गया कि एक एक करके सभी लोग अपनी अपनी समस्याएँ सदन के समक्ष रखेंगे। जिसमें सदन के समीसदस्य विचार विमर्स कर उसका समाधान प्रस्तुत करेंगे।

इसक्रम में सबसे पहले नगर के एक बरिष्ट नेता ने अपनी समस्या रखते हुए बोले मैं नगर का एक ख्यातिलब्ध, संवेदनशील, दलबदलू नेजा हूँ। आवश्कतानुसार दल बदलना मेरी खानदानी विशेषता है। दलबदलने की कला मुझे विरासत में मिली मेरे पूवर्ज आस्थावान दलबदलू थे। दलबदले में उनकी गहरी आस्था थी। मुझे भी बिना दलबदले नींद नहीं आती। राजनीति में प्रवेश करते ही, जनता से झूठबोलने घपले और घोटाले करने की लत लग गई है। देश के बड़े-बड़े नामी गिरामी घोटाले बाज नेताओं से आत्मीय सम्बंध हैं। उनका अनुसरण करने का मेरा दिल करता है। स्वच्छ राजनीति से मेरा मन घबराता है। कृपया मेरा मार्गदर्शन करें।

सदन गहन विचार विमर्श करके समाधान प्रस्तुत किया दल-बदल वर्तमान राजनीति में समान सी बात है। करते रहिए। जनता से झूठ बोलना उसे दगा देना एक सफल नेता के गुण हैं। घोटालों की लत देश के लिए अवश्य हानि कारक हैं। पर आप की सेहत और सम्पन्नता में वह चार चाँद ही लगाती है। इसलिए देश को भाड़ में झोककर स्वहित में नियमित रूप से बड़े-बड़े घोटाले करते रहिए। इस संबंध में अपने से बरिष्ट घोटालें बाज नेजाओं से परामर्श और मार्गदर्शन लेते रहिए। सफलता आपके

चरण चूमेंगी।

अगले क्रम में एक सरकारी डाक्टर ने आपनी समस्या रखते हुए गंभीर स्वर में बोले- मैं एक सरकारी डाक्टर हूँ। अस्पताल में मरीजों की भीड़ को देखकर चक्कर आते हैं। पढ़ाई के दौरान सचिन तेन्दूलकर और अभिषेक बच्चन से प्रेरणा ग्रहण कर अपने से उम्र में बड़ी लेडी डाक्टर के रूपफांस में फंस गया था। उसके बहकावे में आकर प्राइवेट नर्सिंग होम खोलने की ग्रन्थि वाल ली। अब नर्सिंग होम खोलने के लिए पैसे नहीं हैं। सरकारी वेतन से संतोष नहीं है। आखिरकार अन्य डाँक्टरों की तरह से डाका डालूं। मेरा पेट बहुत बड़ा है किसी तरह दवाओं के मैन्युअल बेंच कर अपना पेट भर रहा हूँ। उचित समाधान सुझाएँ।

समिति के सदस्यों ने पहले एक दूसरे को देखा फिर डॉक्टर की ओर मुखातिब होते हुए बोले आपकी समस्या निश्चय ही बहुत विकट है। किन्तु आपने यह नहीं बताया कि आय किस मर्ज के डॉक्टर हैं। फिल हाल आप के लिए यही उचित है कि आप किसी और के नर्सिंग होम में खुद को अटैच कर लें। इससे आपकी डियूटी आवर्स में अस्पताल से भागने में आसानी होगी और मरीजों को देखकर चक्कर भी नहीं आएंगे। मरीजों को डरा-धमकाकर और उन्हें सीरियस बताकर अपने नर्सिंग होम में रेफर करें। अन्य डाक्टरों की तरह किसी पैथालाजी से दलाली फिक्स कर लें। जरूरी और गैर जरूरी जाँच के लिए मरीजों को सम्बंधित पैथालाजी में जाँच हेतु भेंजे। और भरपूर कमीशन ऐठें। धीरे-धीरे आपके पैसों की भूख शांत होने लगेगी। आपकी भावनाग्रंथी हथेली में रखी बर्फ की तरह डिजाल्व होने लगेगी।

अब समस्या रखने की बारी पुलिस अधिकारी की थी। उसने समस्या रखते हुए कहा-मैं एक नामी गिरामी इन्काउन्टर स्पेसलिस्ट पुलिस वाला हूँ। पिछले दिनो इनाम और तरक्की के लालच में कुख्यात अपराधी के नाम पर एक यतीम भीखारी का ऐनकाउन्टर कर दिया। इनाम की राशि और तरक्की भी मिल गई। मेरी समस्या यह नहीं है कि गलत आदमी का एनकाउन्टर कर दिया पर प्रावलम यह है कि एक स्थानीय कुख्यात गुण्डे को इस बात का पता लग गया है। अब वह मुझे ब्लैकमेल करके पचास प्रतिशत मांग रहा है। मुझे जान से मारने की धमकी देता है।

समस्या की गंभीरता को देखते हूए सभी अपस्थित सदस्यों ने कई दृष्टि से इस पर गहन चिंतन मनन किया फिर अपना निष्कर्स प्रस्तुत करते हुए बोले। सातिर अपराधियों के नाम पर इनाम और पदोन्नति के लालच में आकर निरपराधियों का एनकाउटर करना पुलिस वालों के लिए आम बात होती जा रही है। गुण्डे द्वारा मांगी

जाने वाली 50 प्रतिशत की राशि तो क्या 100 प्रतिशत मांगे तो देने होंगे आप की समस्या भिखारी के इन्काउन्टर से पैदा हुई है। आप अन्य भिखारियों के कटोरो पर नजर रखिए और मौका पाते ही उनसे भी पैसे ऐंठिए यह कह कर कि भीख मांगना सामाजिक अपराध है ना मानने पर अन्दर कर देने की धमकी दीजिए।

आजकल पुलिस वालों का अपराधियों से पंगा लेना ठीक नहीं है उनसे मैत्री सम्बन्ध बनाए रखने में ही भालाई है सो कर भला होगा भला की सुक्ति अपनाइए अपने बीबी बच्चों का ख्याल रखते हुए उन्हें किसी बड़े अपराधी के संरक्षण में दे दें। समय को ध्यान में रखते हुए समस्या समाधान संगोष्ठी की कार्यवाही अगली मीटिंग तक के लिए स्थगित कर दी गई।

शिक्षक सम्मान समारोह

5 सितम्बर को शिक्षक दिवस कहते हैं। ठीक वैसे ही जैसे कि 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस और छब्बीस जनवरी को गणतंत्र दिवस पर शहीदों का पुण्य स्मरण करते हैं उनके छायाचित्र पर माल्यार्पण करते हैं। उसी प्रकार शिक्षक दिवस के दिन गुरूजन समुदाय का सम्मान करते हैं। 5 सितम्बंर डॉ. राधाकृष्णन का जन्मदिन है इसी दिन डॉ. राधाकृष्णन पैदा हुये थे। पहले वह शिक्षक थे, आजादी के बाद उन्हें राष्ट्रपति बना दिया गया। पहले ईमानदार, कर्त्वयनिष्ठ, विद्वान, बुद्धि जीवीयों को देश के ऐसे उच्च पद प्रदान करने की परम्परा थी, शिक्षक से ज्यादा ईमानदार व्यक्ति और कौन हो सकता है। पहले शिक्षक के पास बेईमानी के कोई साधन, सराजाम नहीं होते थे। (अब ऐसा नहीं है)

डॉ. राधाकृष्णन ने राष्ट्रपति बनने के बाद अपने जन्मदिन को शिक्षक दिवस का नाम देकर शिक्षकों को दान कर दिया, तभी से शिक्षक दिवस मनाए जाने की परम्परा हुई। इसे शिक्षक और छात्र दोनों मिलकर मनाते हैं। भीड़-भाड़ के लिए जनता को भी आमंत्रित किया जाता है। जब जनता आती है तब उसके स्वागत के लिए गेट पर खड़े होकर शिक्षक उनका अभिवादन करते हैं। टीका लगाकर नाश्ता कराया जाता है। आप हमारे दिवस पर पधारे इसके लिए आभार व्यक्त किया जाता है। चूंकि यह शिक्षक दिवस है। इसलिए शिक्षक दरी बिछाने से लेकर मंच बनाने का पूरा काम स्वयं करते हैं। भाषण इत्यादि देने के लिए किसी बड़े नेता को आमंत्रित किया जाता है। भाषण देना नेताओं का जन्मसिद्ध अधिकार है। नेताओं का जनता, मंच और माला से गहरा सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध में मुझे एक घटना याद आ रही है। एक दिन एक नेता जी चाकू लेकर अपनी गर्दन काटने लगे। ऐसा करते हुए उन्हें उनके नौकर ने देख लिया। बोला मालिक यह आप क्या कर रहे हैं अपने ही हाथों से अपनी गर्दन काट रहे हैं इतना सुनते ही नेता जी आक्रोशपूर्ण मुद्रा में बोले, जिस गर्दन पर सात दिनों से कोई

माला न पड़ी हो, उस गर्दन की यह मजाल कि वह हमारे धड़ से जुड़ी रहे। एक बार मुझे भी एक शिक्षक सम्मान समारोह में शिरकत करने का अवसर मिला, जिसमें क्षेत्र के सेवानिवृत शिक्षको को सम्मान किया जाना था। मैं सही समय के पूर्व वहां पहुंच गया। सम्मान समारोह की तैयारियां चल रही थी शिक्षक समुदाय मंच संवारने में व्यस्थ थे। मंत्री जी के आने की सूचना थी। इसी समय सम्मानित होने वाले शिक्षकगण भी उपस्थित होने लगे। वह बड़े उत्साह और स्फूर्ति के साथ मंच की ओर बढ़ते लेकिन तभी उन्हें आयोजक द्वारा मंच से हटकर लगाई गई कुर्सियों पर बिठा दिया जाता। सम्मानित शिक्षकों को बैठाने के लिए मंच के सामने बगल में कुर्सियां लगाई गई थी। शेष आगंतुको के बैठने की व्यवस्था फर्श पर दरी बिछाकार की गई थी।

पूर्णतः सुसज्जित मंच मंत्री जी के आने की बाट जोह रहा था तभी मंत्री की जय की जय का शोर उभरा। मंत्री जी तेज कदमों सें चलते हुए मंच पर पहुँच गए। सभी ने खड़े होकर उनका स्वागत किया। मंच पर मंत्री जी बैठ गए। उनके साथ के प्रसंसको के लिए कुर्सियां खाली करवाकर मंच पर पहुंचाई गई। पुष्पा हार से मंत्री जी का स्वागत हुआ। इसके पश्चात सम्मानित होने वाले शिक्षकों का नाम पुकारते हुए मंत्री महोदय से अनुरोध कर उनसे कुर्सियां खाली करवाकर मंच पर पहुंचाई गई। पुष्पा हार से मंत्री जी का स्वागत हुआ। इसके पश्चात सम्मानित होने वाले शिक्षकों का नाम पुकारते हुए मंत्री महोदय से अनुरोध किया गया कि वह शॉल, श्रीफल और कटोरा भेंटकर शिक्षकों का सम्मान करें। तभी मेरे आसपास बैठे लोगों में कुछ खुसुर-फुसुर हुई। किसी ने कहा यार यह पीताम्बारी ओढ़ाकर कटोरा क्यों थमा रहे है?

इससे तो अच्छा होता कि सबको एक माला दे देते। कम से कम भगवत भजन करते, शेष जिंदगी आराम से राम का नाम लेते हुए कट जाती। तभी उसके दोस्त ने कहा तुझे कटोरा थमाने का मतलब भी नहीं मालूम तो तू शिक्षकों के बीच में क्यों चला आया। एक एक करके सभी सम्मानित शिक्षक नाम पुकारने पर मंच पर जाते। मंत्री जी उन्हें शॉल ओढ़ाकर कटोरा थमाते, हाथ जोड़ते और वह नतमस्तक हो आकर अपनी जगह में बैठ जाते। इस अवसर पर वह इस बात को लेकर अपने आप को गौरान्वित महसूस कर रहे थे कि जिन मंत्रियों को वह उम्र भर माला पहनाते रहे वही मंत्री आज खुद यहां आकर उन्हें अपने हाथों से माला पहना रहे हैं।

मुख्य अतिथीय उद् बोधन के सम्मानित होने वाले शिक्षकों में से किसी एक को अपने सम्मानित होने के सन्दर्भ में दो शब्द कहने के लिए आमंत्रित किया गया। उनमें से एक वरिष्ठ शिक्षक आंगे आये और दो शब्द बोलते हुये कहा 'आज शिक्षक दिवस

के इस पुनीत अवसर पर सम्मानित करते हुए माननीय मंत्री महोदय ने हमें जो यह कटोरा थमाया है हम वचन देते है कि हम उसकी लाज रखेंगे धन्यवाद।

अपना मुख्य अतिथीय उद् बोधन देते हुये मंत्री जी ने कहां कि शिक्षक आदर्श के प्रतीक हैं। न तो ये बिकते है न ही खरीदें जा सकते। समाज की सारी नैतिकता इन्हीं के पास सुरक्षित है अन्य कर्मचारियों की तरह शिक्षक घूंस लेकर अपनी बीबी बच्चों की फरमाइशें पूरी नहीं करते, वह तनख्वा से ही अपना गुजर बसर करते हैं। हम आभारी हैं डाँ. राधाकृष्णन के, जिन्होंने शिक्षकों को अपने जन्म दिन का नाम देकर कम से कम वर्ष में एक दिन उन्हें सम्मानित करने का अवसर प्रदान किया जय हिन्दी जय भारत।

राम-रावण और उनकी लीला

नव दुर्गोत्सव के प्रारम्भ होते ही जगह-जगह ब्रहनास्त्ररूपिणी महिषासुरमर्दिनी चिच्छक्तिज्ञानिरूपा माता दुर्गा की भव्य प्रतिमाओं की स्थापना का सिलसिला प्रारंभ हो जाता है। इन प्रखर प्रतिमाओं की परछाई के पीछे चारों ओर चंदे का जाल फैलना भी प्रारंभ हो जाता है। चंदा लोलुप श्रद्धलू भक्तगण हाथ में चंदावसूलनी लिए काक्रोच की तरह सक्रिय हो जाते हैं। इससे प्राप्त पवित्र राशि से उनके रात्रिकालीन मूलभूत आवश्कताओं की पूर्ती सहज ही हो जाती है। चंदा वसूलना हमारी सियासती परमपरा का अनुपम उदाहरण है। यह हर्रा लगे न फिटकरी रंग चोखा ही आवें वाली कहावत को चरितार्थ करता धन्धा हैं चंदा की राशि से चुनाव जीत कर कई नेता रंक से कुबेरपति बन गए है उनकी शाइकाए नोटो से भरी रहती है।

नवदुर्गोत्सव के साथ-साथ नगर, गांव और कस्बों में मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्रीराम की लीलाओं का मंचन भी प्रारंभ हो जाता है। जो नारद-मोह से प्रारंभ होकर रावण वध से होता हुआ राम के राज्यभिषेक तक चलता है। रामायण में वर्णित विविध प्रसंगो का भावप्रवण मंचन होता है। जिसे श्रद्धलू जन बड़ी निष्ठ से देखते है। वैसे तो रामायण के सभी प्रसंग अनुकरणीय हैं केवल सूपर्णखा के नाक-कान काटने, सीता हरण, और धोबी वाले सीता निर्वाषन के प्रसंग को छोंड़त्रकर इन सभी प्रसंगों में धनुष जग्य का प्रसंग सबसे ज्यादा लोकप्रिय है। आज भी यह उतना ही लोकप्रिय है जितना की सैकड़ो साल पहले था। धनुष यज्ञ के दिन समूचा रामलीला मैदान जन समुदाय से खचाखच भर जाता है। धनुष भंग होते ही जय श्रीराम के नारों से समूचा गगन मंठल गूंज उठता है यह हमारी तोड़क-फोड़क संस्कृति पर निष्ठा का बेजोड़ उदाहरण है।

दूसरा सबसे महत्वपूर्ण और जनप्रिय क्षमा कीजिएगा। जनाना प्रिय प्रसंग सीता हरण का है। मैंने इसे जनाना प्रिय इसलिए कहा क्यों कि धनुषजग्य में पुरूषों का और सीता हरण में महिलाएं इस प्रतीक्षा में जमी रहती हैं। कब सोने का मृग सामने से गुजरे,

कब सीता मइया राम से उसे मारकर उसकी खाल

((नोटः- ये आगे के पन्नो पर टाईप हो चुका हैं 'शीर्षक - नेता के पुतले का रावणाभिषेख))

चले मुरारी नेता बनने

मुरारीलाल जी अति महत्वाकांक्षी, जुगाड़ू, बहुआयामी, प्रतिभा सम्पन्न, भड़मड़िया किस्म के जीव हैं। वह हर वक्त कुछ नया कर गुजरने के फिराक में रहते हैं। जब भी उनके मस्तिष्क में किसी नई समस्या के कीड़े कुगुलाते हैं तो उसका समाधान खोजने मेरे यहाँ चले आते हैं। उन्हें देखते ही मेरा तंत्रिकातंत्र चैतन्य हो जाता है। वह जब भी आते कुछ बड़बडाते हुए आते। पर आज का उनका आना अन्य दिनों की अपेक्षा भिन्न था। आज वह आए और चुप-चाप सोफे पर स्थापित हो गए। उनकी इस दशा को देखकर मैंने पूछा क्या बात है मुरारीलाल जी ए क्या चुनाव में हारे हुए नेता की तरह मुह लटकाए बैठे हैं।

इतना सुनते ही मुरारीलाल जी खुशी से उछलपड़े उनकी बांछे खिलगई। बोले वाह भाई वाह क्या खूब पहचाना है। आप तो टी.वी. चैनल में भविष्य बाँचने वाले ज्योतिषाचार्यो के भी फोरफादर निकले। आज मैं इसी बारे में आप से गंभीर परामर्श लेने आया हूँ।

किस बारे में मैंने पूछा। मैं एक सफल नेता बनना चाहता हूँ मुरारी लाल जी बोले। मैंने कहा इस परमोत्तम कार्य की ओर आपको बहुत-पहले सोचना चाहिए था।

अगर नेता बनने की कोशिश आप पहले किए होते है, तो आज किसी मंत्री की कुर्सी पर बैठ कर ऐश कर रहे होते। खैर देर आए दुरूस्त आए। अब आप यह बतलाइए कि किस रंग के झंडे के नीचे के नेता बनना चाहते है। हरे,नीले,लाल,पीले,केसरिया, दो रंगे या तिरंगे। हर रंग के झंडे के अपनी-अपनी विचारधारा है, आजकल इन दल-दलीय नेताओं के अनेक ब्रांड है। बताइए आप किस ब्रांड के नेता बनना चाहते है। इतना सुनते ही मुरारी लाल जी बोले, रंग और दल का चुनाव तो बाद में कर लूंगा। आप तो मुझे एक अच्छे हुनरमंद नेता बनने के सारे हुनर बता दीजिए।

मैंने मुरारी लाल जी की पीठ थपथपाते हुए कहा शाबांश मुरारी लाल जी आपके

अन्दर का नेता तत्व सक्रिय हो गया, लगता है निश्चय ही आप भारतीय लोकतंत्र के सफल नेता बन सकते हैं। आपके अन्दर नेता बनने की अतीव संभावनाएं विद्यमान है।

अच्छा यह तो बताइए कि आजकल आप कर क्या हैं इस समय में गहन अध्ययन में जुटा हूँ। देश-प्रदेश की श्रेष्ठ पत्रिकाएं पढ़ता हूं। उत्कृष्ट साहित्य का अध्ययन मनन करता हूं आखिर नेता बनने के लिए पढ़ा लिखा होना भी तो जरूरी हैं।

मैंने मुरारी लाल जी की इस नेतानगी पर अंकुश लगाते हुए कहा। भाई मुरारी लाल जी यहां पर आप मूर्खता कर रहे हैं।यह सब तो बुद्धि जीवी बनने के लक्षण हैं नेता बनने के लिए पढ़ा लिखा या डिग्री होना कत्तई आवश्यक नहीं हैं। पढ़ने-लिखने से समझ का विकास होता हैं जो राजनीति में निषेध है, बड़ा नेता बनना है, तो पहले चमचई सीखों। हर नेता किसी न किसी बड़े नेता का चमचा होता है।

अच्छा आप अपनी दिनचर्या के बारे में बतलाइए। इस पर मुरालीलाल जी तपाक से बोले। प्रातः सुर्योदय के समय उठता हूं। स्नान करता हूं। स्नान करने के पश्चात् योगा करता हूं मैने कहा वहीं योगाचार्य बाबा रामदेव वाला योग,वह बोले हां, फिर योगा के बाद गाय का दूध पीकर अध्ययन करने के लिए बैठ जाता हूं फिर उसके बाद........

बस-बस अब ज्यादा बताने की जरूरत नहीं है। मैं समझ गया। आप सफल नेता कतई नहीं बन सकते। ए सब जो आप कर रहे हैं। वह एक उत्कृष्ट बुद्धिजीवी बनने के लक्षण है नेता बनने के लिए तुम्हें अपनी दिनचर्या में परिवर्तन करना होगा।

सो कैसे मुरारी लाल जी बोले। सो ऐसे कि सर्व प्रथम तो आप सूर्योदय कब होता है। कोई भी बड़ा नेता को यह भी पता नहीं होना चाहिए। कि सूर्योदय कब होता है। कोई भी बड़ा नेता नौ-दस बजे से पहले सोकर नही उठता है जो जितनी देर से उठता है। वह उतना ही बड़ा नेता होता है।

जब प्रातः लोग मिलने के लिए आते हैं और उन्हें यह सूचना दी जाती है कि नेता जी अभी बाथरूम में हैं। तो इससे नेता की गरिमा और अधिक बढ़ जाती है, और यह दूध पीने का चक्कर भी छोड़िये दूध तो छोटे बच्चे पीते है, नेताओं का दूध पीना उनकी परम्परागत गरिमां के खिलाफ हैं इन के पेय पदार्थ तो कुछ और ही जब बड़े नेता बन जांएगे, तब यह सब खुद बखुद सीख जांएगें

अच्छा नेता बनने के लिए थोड़ा होलिया भी बदलना होगा, यह जो बुद्धिजीवी की तरह दाढ़ी बढ़ाए, पैंट के ऊपर कुर्ता पहने, आँखों में काले फ्रेम का चश्मा लगाए। कंधे में 10-15 साहित्यिक,पत्रिकाओं से भरा झोला लटकाए रहते है। यह बिलकुल

नहीं चलेगा। इसके लिए क्लीन सेव होकर लम्बा सफेद कुर्ता, पायजामा, धारण करना होगी। दस पन्द्रह शहीदों और कुछ बड़े नेताओं के नाम या रखने होंगे। याद रखे विरोधी पार्टी के नेता की आलोचना करना और उनके द्वारा किये गये अच्छे से अच्छे जनहित के कार्यो में नुक्स निकालना, तुम्हारा ध्येय होना चाहिए। हर बड़ा नेता यहीय करता है। इसके साथ ही साथ झूठ बोलने की कला में महारत हासिल होना, अवसरानुकूल गिरगिट की तरह रंग बदलने में प्रवीण होना और झांसा देना चाहिए। एक बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए। कभी भी किसी रंग विशेष के झंडे से चिपक कर मत रहना। परिवर्तन ही प्रकृति का नियम कर मत रहना। परिवर्तन की प्रकृति का नियम है। हस युक्ति को ध्यान में रखते हुए। अपने स्वार्थनुसार रंग बदलने रहना बड़े -बड़े नामी- गिरामी नेतागण ऐसा ही करते है, लोकतंत्र में कोई भी रंग सदैव एक जैसा नहीं रहता। जो आज गाढ़ा है सिरमौर है वह कल धूमिल होकर धूल-धूसरित हो सकता है। मीडिया में बने रहने के लिए समय समय पर भड़काऊ बयान देते रहना। सदैव बहती गंगा में हाथ धोने की नियत रखना। सदैव बहती गंगा में हाथ धोने की नियत रखना। भ्रष्टाचार में लिप्त होते हुए भी भ्रष्टाचार विरोधी भाषण देना। बात बात में जनता के ऊपर हो रहे जुल्म ज्यादती का ढ़िढ़ोरा पीटना, वर्तमान लोकतांत्रिक नेताओं के प्रमुख गुण हैं। इनका अनुशरण करना

चलने-चलते एक बात का ध्यान अवश्य रखना नेता बनने के पश्चात अगर कभी विधायक, सांसद या मंत्री बनने का सौभाग्य प्राप्त हो जाए, तो भूलकर भी जनता की सेवा और कल्याण का भाव अपने मन में मत लानाा क्योंकि वर्तमान लोकतंत्र में जनता की सेवा के दिन लद चुके है। अब तो जो जनता को जितनी ज्यादा यातना दें, वह उतना ही बड़ा और सफल नेता है।

महलों से मुर्दा घाट तक,
फैले हुए हैं आप।
मखमल से ले के टाट तक,
फैले हूए हैं आप।
जनता का शोर खूब है,
जनता कहीं नहीं
महलों से राजघाट तक,
फैले हुए हैं आप।

झूठ का सौंदर्य

सच बोलना एक तपस्या है। कहा भी गया है, " साँच बराबर तप नहीं" और आप सब जानते हैं कि तपस्या एक कठोर कर्म है। सच बोलने वाले को अनेकानेक शारीरिक मानशिक यातनाँए झेलनी पड़ती हैं। जब की झूठ बोलना एक कला है। जो आपको तत्काल अनेक झमेलों से बचाती है। राट्रपिता गाँधी सत्य के परम उपासक थे उन्हे सीने में गोलियाँ खानी पड़ी। महान दार्शनिक शुकरात को सच बोलने पर जहर पीना पड़ा। देखा आपने श्रीमान् की सच-बोलने का परिणाम कितना कड्ुवा होता है। इस दुनियाँ पे ना जाने कितने लोग झूठ के सहारे स्वर्गिक सुख का भोग करते हैं।

जब आप देर से घर पहुचते हैं और आपकी पत्नी आप से विलम्ब का कारण पूछती है, तो आप तुरन्त एक प्यारा सा झूठ गढ़कर उसके सामने प्रगट कर देते हैं जिसे सुनकर वह हथेली में रखी बर्फ के समान द्रवी भूत होकर आपकी सेवा में जुट जाती है। और आप उसके कोप से बच जाते हैं।

अगर आप नौकरी-पेशा वाले हैं और आपका अधिकारी भ्रष्टाचार में लिप्त हैं, अगर कहीं आपने सच बोलकर उसकी भ्रष्टता का बखान उसके सामने कर दिया कि - साहब, आप निहायत बेईमान, भ्रष्ट पाखण्डी, ढ़ोगी और दोगले चरित्र वाले हैं, आपकी प्रकृति मुख में राम बगल में छूरी वाली है तो आपका अनिष्ट निश्चित है। इसके विपरीत अगर आप उसका अलंकरण झूठ से कर दें कि - साहब आप अत्यन्त ईमानदार, धर्मनिष्ठ, परोपकारी, कर्तव्यपरायण परम कृपालु हैं। तो समझिए आप की पाँचो उंगलियाँ घी में।

झूठ की महिमा अजब है, गजब है, निराली है। झूठे वादे और आश्वासन बाँट कर नेता गण बड़े-बड़े चुनाव जीत जाते है। विधायक, सांसद और मंत्री बन कर परिजन पुरजन सहित परम सुख का भोग करते हैं। जनता बेचारी खादी के उजले वस्त्रों में छिपी व्यालों के सफेद झूठ यथा अगर हम जीत गए तो, हम भूखों को रोटी देंगे। नंगो को

लगोटी देंगे। जो बेरोजगार हैं उनके हाथ में काम आएगा। जिनके पास घर नहीं हैं, उन्हे मकान दिलांएगे। जो गरीबी के कारण पढ़ लिख नहीं सकते, उन्हे पढ़ाई के साधन उपलबध कराएंगे। जो भूख और गरीबी के कारण बीमार रहते हैं, उनके लिए स्वास्थ लाभ की योंजनाँए चलाएंगे। में आकर इन्हें विजय श्री दिलाती है। तोरण द्वार सजाकर उनका शुभागमन करती है। अगर यही नेता गण झूठ की जगह सच बोलकर हम पाँच साल कि लिए आपसे दूर हो जाएंगे। विकास कार्य के लिए स्वीकृत राशि में मनचाहा कमीशन खाएंगे। सरकारी नौकरियों में अपने भाई-भतीजों को भरेंगे। विकास कार्य के लिए स्वीकृत राशि में मनचाहा कमीशन खाएंगे। सरकारी नौकरियों में अपने भाई-भतीजों को भरेंगे। बाढ़ और सूखा राहत राशि को आत्मसात कर अपना संचित कोटा बढ़ायेगे। तो जनता उन्हें एक पल भी अपने बीच का ठहरने नहीं देगी। तो देखा आपने झूठ का सौन्दर्य शास्त्र कितना आकर्षक, और मनोहरी है।

इतना ही नही श्रीमान् झूंठ आपको अनेक पाप कर्मो से भी बचाता है। मान लिया आपने किसी व्यक्ति को किसी व्यक्ति का मर्डर करते हुये देख लिया अदालत में गवाही के दौरान आपने सच बोल दिया तो उसको मिलने वाले मृत्यु दंड के भागी आप होंगे और अगर आपने झूठ बोलकर उसे बचा लिया तो उसके प्राण रक्षा का पुण्यफल आपको मिलेगा।

संत महात्माओं ने भी झूठ के महत्व को प्रतिपादित किया है। किसी नगर में एक महाज्ञानी गुरू रहते थे उनके आश्रम में देश-विदेश के सैकड़ो शिष्य शिक्षा ग्रहण करने आते थे। उनका आश्रम घने जंगल में हरे-भरे पेड़ो के बीच बना था।

एक दिन वह वट वृक्ष के सघन छॉव तले शिक्षा प्रदान करते हुये कह रहे थे,- 'मानव को अपने जीवन में सदा सत्य बोलना चाहिये, क्याकि सत्य बोलने वालों का सभी आदर-सम्मान करते है। तभी एक शिकारी दौड़ता हुआ आकर बोला-'गुरूजी! मेरे प्राण संकट में है। मेरी रक्षा कीजिये यदि मै मर गया, तो मेरे अंधे मॉ-बाप बेसहारा हो जायेगें।

गुरूजी ने कहा आखिर बात क्या है? तुम इतने भयभीत क्यों हो? वह आंसू बहाते हुये बोला- मैं इस जंगल में शिकार करने के उद्देश्य से आया था। मुझे देखते ही आदिवारी लोग मुझ पर तीर चलाने लगे। जैसे-जैसे अपनी जान बचाकर आपकी शरण में आया हूॅं। वह मेरा पीछा करते हुये आ रहे है। निश्चय ही मुझे मार डालेगें। मेरी रक्षा कीजिये। गुरूजी बोले बेटा घबराओ मत। तु आश्रम में जाकर कोने में छिप जाओ। शिकारी आश्रम में जाकर छिप गया।

थोड़ी देर में कुछ आदिवासी तीर और भाले लेकर गुरूजी के पास आये और पूछा-महात्मा जी क्या इधर से कोई आदमी गुजरा है? ''गुरूजी बोले इधर तो कोई आदमी नहीं आया। गुरूजी की बात सुनकर आदिवासी दूसरे रास्ते चले गये। तभी शिष्य ने पूछा-गुरूजी आप तो कह रहे थे कि मनुष्य को सदा सत्य बोलना चाहये, फिर अभी-अभी झूठ क्यों बोले?

अगर झूठ बोलने से किसी व्यक्ति कें प्राण बच जायें तो वह झूठ सौ सत्य से भी बढ़कर है। यह सुनकर सभी शिष्य एक दूसरे की तरफ देखने लगे। तब गुरूजी ने समझाते हुये कहा-झूठ का भी अपना महत्व है,अस्तित्व है। जीवन के सफर में जब किसी विपत्ति में फँसे इन्सान का सहारा बन जाता है, तो इसका सौन्दर्य सचमुच खिल उठता है सभी परम प्रसन्न थे। क्योंकि वे झूठ का महत्व और उसकी वास्तविकता को समझ चुके थे।

चौराहों के चौकीदार

महानगरों के भीड़-भाड़ वाले चौराहों पर होने वाले अनियंत्रित यातायात को नियंत्रित करने के लिए दुग्ध धवल वर्दी से लैश कुछ यातायात नियंत्रकों की व्यवस्था रहती है, जिन्हें अंग्रजी में ट्राफिक पुलिस और ठेठ हिन्दी में चौराहों के चौकीदार कहा जाता है। पहले ए अपना काम पूरी निष्ठा से करते थे। किन्तु जब से इलेक्ट्रानिक सिंगनल का प्रयोग होने लगा है तब से इनके कार्यों में सिथिलता आ गई है। अब बिजली गोल होने या सिस्टम फेल होने पर ही ये चौराहों के चौकीदार अपना हाथ हिलाते हैं दीगर समय में ए रास्ते के दांए बांए खड़े होकर धननिष्ठा के लिए अपने दायित्वों का निर्वहन करते हैं।

एक दिन नगर के सिविल लाइन चौराहे पर खड़े-खड़े मैं बस के आने की प्रतीक्षा कर रहा था। मेरे पास ही एक डंडाधारी चौराहे का चौकीदार खड़ा था। उसकी चाकचौबन्ध नजरों और हरकतों से लग रहा था कि वह अपनी धननिष्ठ को अंजाम देने के लिए किसी शिकार की तलाश में है तभी एक ओल्डमाडल की खड़खड़िया राजदूत मोटर साइकिल वाला वहां से गुजरा। चौराहे के चौकीदार के चेहरे की मूछें हिली, डंडा फड़का उसने फुर्ती से शीटी बजाकर उसे रोका और गाड़ी के कागज मांगा। सायद मोटर साइकिल वाला चौराहे के इन चौकीदार की कागजी कार्यवाही से भली भांति वाकिफ था। सो उसने बीस का नोट उसकी ओर बढ़ाया, उसने उसे जेब की हवालात में कैद किया और उसे जाने का सिंगनल दिया। इसी प्रकार वह वहां से गुजरने वाले हर लोडेड ट्रक को रोकता उनसे गाड़ी के कागजात मागता। ट्रक वाले अपनी मुट्ठी को उसकी मुट्ठी से मिलाते ओर चल देते। में उनके इस मुट्ठी मिलन संस्कार का तमासा देख रहा था। कितनी निष्ठा और प्रतिष्ठा के साथ वह अपने चौकीदार के दायित्व का निर्वहन कर रहा था। इसी समय एक मोटरसाइकिल वाला फिर निमला उसकी मोटर साइकिल बिल्कुल नई थी चौकीदार ने उसे भी रोककर गाड़ी के कागज मांगे।

उसने गाड़ी का रजिस्ट्रेशन कार्ड निकाल कर उसे दे दिया। उसे अपने पास रखते हुए वह बोला यह तो ठीक है पर गाड़ी के कागज कहां हैं? ऊसने निवेदन करते हुए कहा श्रीमान जी गाड़ी के जितने कागज होते हैं वह तो सब मैने आप को दे दिए अब कौन सा कागज चाहिए अब फिर बोला वह तो ठीक है पर कागज कहां है। साहब मेरी समझ में तो कुछ नहीं आ रहा आप कौन से कागज मांग रहे हैं साहब मैने गाड़ी नगद खरीदी है फाइनेंस नहीं करवाया पुलिस वाला भी खीझते हुए बोला साहब कैसे गाड़ी चालक हो गाड़ी के कागजातों के बारे में जानकारी नहीं रखते। मोटर साइकिल वाला इन चौराहों के चौंकीदार की कागजी कार्यवाही से वाकिफ नहीं था। पास ही खड़ा था पुलिस का एक सिपाही उसने उसे समझाते हुये कहा गाड़ी के कागज का मतलब होता है पैसा 10-50 थम्हाओ और आगे बढ़ जाओ। उसने अपनी जेब 20 का नोट निकाला और चौराहे के चौकीदार को पकड़ा दिया। उसने उसे अपने जेब की जेल में कैप करते हुए कहा जाओ और भविष्य में गाड़ी के कागजातों का ध्यान रखना वह जमाने को कोशता हुआ चला गया। इसी समय एक चमचमाती हुई मारूतिकार वाले ने पैदल चल रही 60-70 वर्षीय बुढ़िया को ठोकर मार कर गिरा दिया चौकीदार ने फर्राटा के साथ फलांग मार कर कारवाले को रोक लिया। चालक ने कार का शीशा खोलकर पूछा क्या है? साहब आपकी गाड़ी से टकराकर एक बुढ़िया घायल हो गईं है। कारवाले ने अपने काले चश्में को सर पर खिसकाते हुआ बोला तो.... ओ....। वह गिर गई है। तो ..... क्या आपको थाने चलना पड़ेगा। एफ.आई.आर. लिखी जाएगी। चालान होगा। और इलाज में हजारों रूपये खर्च होंगे। कोर्ट कचहरी के चक्कर लगाने पड़ेगे सो अलग तो..... ओ....... कहते हुए कारवाले ने 100 रू. का नोट उसकी ओर बढ़ा दिया नोट को अपनी जेब के हवाले करते हुए चौराहे के चौकीदारी ने कहा तो..... कुछ नहीं साहब अपका कोई दोष नहीं है। सारा दोष इन पैदल चलने वालों का है।जिन्हें चलने की तमीज नहीं है।जैसे सड़क इनके बाप दादा की हो भला बताइये इसकी गतली के कारण उसका इसारा बुढ़िया की ओर था। उसे भले आदमी की कार का साइड मिरर टूट गया हजारों रूपये का नुकसान हो गया। वह तो हमने उसे समझा बुझा कर रफा-दफा कर दिया नहीं तो अभी हजारो रूपये की चपत लग जाती । बुढ़िया सम्हलते हुए बोली जुग जुग जिओ बेटा अच्छा किया भगवान तुम्हारे बालबच्चों को सलामत रखें

मेरे पास तो इलाज के लिए 100 रूपये नहीं है। हजार रूपये कहां से लाती। ठीक है ठीक है चल अपना रास्खा नाम यहां सड़क पर बैठकर ट्रफिक जाम मत कर फिर घटना के कारण इकट्ठा हुई भीड़ को हड़काते हुए बोला यहां रंडी का नाच तो हो रहा है क्या? चलो अपना -अपना रास्ता लो, और फिर मुस्तैदी के साथ निष्टपूर्वक अपने कार्य में पूर्ववत संलग्न हो गया।

दरोगा जी की चुनावी डियूटी

हमारा देश दुनिया के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देशों में से एक है। इस लोकतांत्रिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए हर पांच साल में आमचुनाव कराए जाते है।चुनाव लड़ने वालों के लिए किसी प्रकार की शैक्षणिक योग्यता और सम्र का बंधन नहीं है। 18 वर्ष के अनपढ़ अंगूठा छाप लंठ नेताओ से लेकर 70-80 वर्गीय वयोवृद्ध शिथलेंद्रिय नेता भी स्वच्छंदता पूर्वक चुनाव लड़ चुनाव की घोषणा होते ही आचार संहिता लागू हो जाती है।

आचार संहिता लगते ही कर्मचारियों के अवकाश पर प्रतिबंध लग जाता है। डॉक्टरों का चिकित्सा प्रमाणपत्र भी इन्हें डियुटी से नहीं बचा पाता। हाँ कुछ जुगाड़ किस्म के तिकड़मी कर्मचारी उच्च अधिकारियों से सांठ-गांठ कर अपनी डियूटी कटाने में अवश्य सकल हो जाते हैं। चुनाव की घोषणा के साथ ही मतदान दलों का गठन और उनके प्रशिक्षण का कार्य प्रारम्भ हो जाता है। मतदान केन्द्रों में मतदान दल की सुरक्षा के लिए, सुरक्षा सैनिक तैनात किए जाते है। जिसमें गांव के डंडौतिया चौकीदार से लेकर पुलिस के उच्चअधिकारी और सशस्त्र सैनिक भी सामिल रहते है। चुनाव की डियूटी लगते ही गांव के चौकीदार के अन्दर भी कोतवाल के पावर आ जाते हैं। जब वह मतदान केन्द्र के सामने डंडालेकर खड़ा हो जाता है तो वह सारे प्रभुता सम्पन्न लोग पैरों की जूती सर पर रखनी पड़ती है, चौकीदार के डंडे के एक इसारे सब लाइन में खड़े नजर आते है। चुनाव के समय जब इतना पावर गांव के चौकीदार में आ जाता है, तो फिर भला दरोगा जी की बात ही क्या हैं? वह तो वैसे भी सदैव अपने पुलिसिया पावर में रहते है। चुनाव के समय इनके अंदर भी विशेष पावर का संचार हो जाता है। यह किसी भी मतदान केन्द्र के अन्दर वे रोक-टोक, आ जा सकते हैं। किसी भी समय किसी भी कारण से किसी के भी ऊपर इनकी भृकुटी टेंडी हो सकती है। इनके साथ चलने वाले दल-बल की बात तो और भी निराली है। वह अपने गालियों के संचित

कोश से ऐसी ऐसी सुसंस्कृति गालियों को छांट कर अपने बात की शुरूवात करते है, कि-सुनने वाले लज्जाशील लोग अपना सिर छिपाने के लिए मजबूर हो जाते है। इनके लिए राजाभोग और गंगूतेली सब एक भाव होते हैं। ऐसे ही मतदान के दौरान एक नवनियुक्त दरोगा जी दनदनाते हुए एक मतदान केन्द्र में पहुंचे। पंहुचते ही पुलिसिया अंदाज में बोले ये। यहां क्या हो रहा है? ए लोग अन्दर क्या कर रहे हैं? सब बोट डाल रहे है। वह तो मैं भी देख रहा हूं। पर ए अन्दर इतने लोग क्यों बैठे है? पीओ ने कहा कि सर ए एजेन्ट हैं बोटरों की पहचान करने के लिए बैठे है बोटरों की पहचान के लिए तो पहचान पत्र होते है, फिर ए क्यों पहचान कर रहे है। तभी एक महिला का (पोलिंग अफसर क्रं. एक से कुछ विवाद हो गया। विवाद का कारण यह था कि उसके पास बोटर आईडी कार्ड तो था पर बोटर लिस्ट में उसका नाम नहीं था इस लिए उसे वोट डालने से मना कर रहा था। दरोगा जी का ध्यान उधर गया,उन्होने कहा जब उसके पास वोटर आई.डी कार्ड है तो तुम वोट डालने से कैसे रोक सकते हो। क्या तुम्हे इलेक्शन कमीशन के रूल रेगूलेशन पता नहीं है? वोटर आई डी कार्ड की मान्यता नेशनल होती है पोलिंग अफसर ने कहा सर मैं वोटर आई डी. कार्ड की मान्यता को चेलेन्ज नही कर रहा। जिसका नाम वोटरलिस्ट में है मैं उसी से बोट डलवाने का अधिकारी हूँ दरोगा जी अपनी दरोगाई बुद्धि चलाते हुए बोले, तो कार्ड देखकर उसका नाम वोटर लिस्ट में दर्ज करेगा अफर बोला यह काम बोटर लिस्ट बनाने वालों का है। यह बोटर लिस्ट कौन बनाता है। सर यह तो बोटर लिस्ट बनवाने वाले जाने। तो फिर वोटरलिस्ट कौन बनवाता है? पीओ ने कहा सर यह तो बोटर लिस्ट बनाने वाले ही बता सकते है। दरोगा जी अपना सर पीटते हुए बोले अजीब कनफ्यूजन है। वह अपने दरोगाई रूतबे में मतदान केन्द्र के अन्दर ऐसी भागदौड़ कर रहे थे जैसे -कोई चुहा चुहेदानी में फसने के बाद पिजरे के अन्दर धमाचौकड़ी मचाता है। सहसा वह पीओ की ओर मुखातिब होते हुए बोले बैलेट पेपर को इसू करने में इतनी देरी क्यों लगा रहे हो। फाड़ो, मोड़ो और दो कर बोला सर हस्ताक्षर करवाने में थोड़ा टाइम तो लगता ही है। तो हस्ताक्षर क्यों करवाते हो फटा-फट अंगूठा लगवाओं और आगे बढ़ाओ। सर पढ़े लिखे लोग अंगूठा छापलोग चुनाव लड़ सकते हैं तो उनको चुनने वाले लोग अंगूठा क्यों नही लगा सकते। कल को कोई लफड़ा हुआ, लफड़े की जांच हुई तो ए कह सकते हैं कि यह हस्ताक्षर मेरे नहीं हैं। अंगूठे को तो काटकर फेंक नही सकते, अंगूठा पुख्ता निशानी होती है समझे दरोगा जी की इन सब शुतुमुर्गी वहसों में मतदान का समय जाया हो रहा था। सो पीठासीन अधिकारी

विनम्र निवेदन करते हुये कहा सर आपनी सुरक्षा व्यवस्था का कार्य सम्हालिए मुझे मतदान प्रक्रिया आगे बढ़ाने दीजिए अन्यथा हमारे बाहर बज जाएंगें। दरोगा जी अपने दल-बल के साथ तेजी से बाहर निकलते हुए हड़काऊ आवाज मे बोले सभी लोग लाइन में आओ और एक-एक कर अन्दर जाओ। जब की सभी लोग पहले से ही लाइन में लगे थे।

जेबकतरों की आपातकालीन बैठक

देश भक्ति जन सेवा याने पुलिस जिसके ऊपर जनता के जान माल के सुरक्षा की जिम्मेदारी है। वह इधर कुछ समय से जनता से मैत्री सम्बन्ध बनाने में तुली है। इसके लिए पुलिस द्वारा थाने-थाने में जनता पुलिस-मेत्री सम्वाद कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा हैं। जिसमें गांव के संभ्रांत नागरिकों को आमंत्रित कर उन्हें यह समझाने का प्रयास किया जा रहा है कि-हम पुलिस वाले आप सब जनता जनार्दन के रक्षक हैं भक्षक नहीं हमारे ऊपर आपके जान-माल के सुरक्षा की जिम्मेदारी है। हमारे ऊपर विश्वास करों अब तक जो कुछ भी हुआ, उसे भूल जाइएं अब हम बदल रहे है। हमसे डरने की जरूरत नहीं है। हम अपने आचरण और व्यवहार में परिर्वतन लाने की नैतिक कोशिश कर रहे हैं।

हम आपको विश्वास दिलाते हैं कि अब कोई भी पुलिस वाला पैसा ऐंठने के लिए किसी बेकसूर को कसूरवार बनाने की कोशिश नहीं करेगा। थाने में रपट लिखवाने के लिए आने वाले किसी भी व्यक्ति से किसी प्रकार की वसूली नहीं की जाएगी। एफ.आई.आर. दर्ज करवाने के लिए आने वाले हर छोटे-बंड़े, ऊच नीच अमीर-गरीब, आम और खास के साथ समानता का व्यवहार किया जाएगा। अब कोई भी पुलिस कर्मचारी थाना आने वाले किसी भी व्यक्ति से गुंडों की तरह पेश नहीं आएगा, अपितु चुनाव में खड़े नेता की तरह नम्रता से पेश आएगा।

अभी तक जो जनता, अपराधी और पुलिस की यातना भोग रही थी। अब ऐसा हरगिज नहीं होने दिया जाएगा। अपराधी तत्वों से सांठ-गांठ कर हफ्ता वसूलने वाले किसी भी पुलिस कर्मचारी को बक्सा नहीं जाएगा। साथ ही उन्हें किसी अपराधी गिरोह के मुखिया द्वारा दी जाने वाली किसी भी थानेदार पार्टी में सम्मिलित होने की छूट नहीं होगी।

पुलिस के आला अफसरों द्वारा यह विश्वास भी दिलाया जा रहा है कि अभी तक

जो गुंडो के गिरोह वलात पैसे वसूल कर उनके दुकानों की रखवाली का दंभ भरते थे, अब वह काम हमारी पुलिस करेगी। हम जनता को यह भी विश्वास दिलाते हैं कि रात में पुलिस गश्त के दौरान चोरियां नहीं होगी। अगर पुलिस को गच्चा देकर चोरी करने में सफल हो भी गए, तो चोरों को पकड़ कर चोरी का माल, माल मालिक को ससम्मान तत्काल वापस सौंप दिया जायेगा। अब हम पुलिस वाले पूरीनिष्ठा और ईमानदारी के साथ जनता की सेवा में समर्पित है। जनता को चाहिए कि वह भी हमारी ओर मैत्री और सद्भावाना का हाथ बढ़ाए। हम चाहते है कि जो तत्परता चोर पाकिटमार और असमाजिक तत्व पुलिस से मधुर सम्बन्ध बनाने में दिखाते हैं, वैसी ही तत्परता जनता को भी दिखानी चाहिए। जब अपराधी तत्व पुलिस से भय नहीं खाते, तो फिर निरपराध जनता को हमसे डरने की क्या जरूरत है। हम चाहते हैं कि अब अपराधी और असामाजिक तत्वों की जगह पुलिस तनता के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चलें अगर बजरंगबली ने चाहा, तो हम पुलिस वाले भी एक दिन दिखा देंगे। इसके लिए अगर हमें गैर कानूनी काम करवाने वाले नेताओं का कोय भाजन बनना पड़े, तो वही भी मंजूर है।

अब पुलिस अपनी छवि ऐसे सुधारेगी कि कोई भी व्यक्ति पीठ पीछे पुलिस की बुराई नहीं करेगा।

गांव की जनता जो पुलिस को देख कर शंकाग्रस्त हो जाती है, भयभीत होकर इधर उधर छिप जाती है। उसे भी अपने विश् वास में लेकर यह समझाने की जरूरत है कि अब उसे पुलिस से कोई खतरा नहीं है। अब वह अपने बात की शुरूवात गालियों से नहीं अपितु सम्माननीय शब्दों से करेगी।

यह सब देख-सुनकर बेचारी जनता भौचक्की है। वह सोच रही है कि यह अचानक पुलिस को क्या हो गया है, जो यह नैतिक बनने की धमकी दे रही है। बिना कुछ आदान-प्रदान के रपट लिखने की बात कह रही हैं। क्या यह सचमुच ऐसा कर पाएगी। कहीं यह भी तो हमारे देश के नेताओं की तरह अपने वादों से मुकर तो नहीं जाएगी।

इधर जब से जेबकतरों, दहशतगर्दो, चोरों अपराधिक तत्वों और गैर कानूनी धंधा करने वालों को इस बात की जानकारी हुई है कि पुलिस जनता से मैत्री सम्बन्ध स्थापित करने जा रही है, तब से उनमें खलबली मच गई है। इस गम्भीर समस्या पर विचार-विमर्श करने के लिए उन्होंने एक आपात कालीन बैठक बुलाई। जिस पर कई दृष्टिकोण से विचार किया गया कि अगर सचमुच पुलिस जनता से मैत्री सम्बन्ध बनाने में सफल हो गई, तो हम विफल हो जायेगें। एक जेबकतरे ने अफसोस व्यक्त करते हुए बोला

कि - मेरा तो धंधा ही चौपट हो जाएगा।

अभी भीड़-भाड़ वाले इलाके में जहां पुलिस मौजूद रहती है, वहां हम बेखटके लोगों की जेब काट लेते थे, क्योंकि पुलिस की उपस्थिति उन्हें असावधान बना देती है। और अगर ऐसा करते हुए कभी पकड़े भी गए, तो यही पुलिस हमें जनता कि पिटाई से बचा भी लेती थी। एक चोर ने अपनी चिंता व्यक्त करते हुए बोला- अभी तक गश्ती के दौरान पुलिस की सीटी और सायरन की आवाज सुनकर जनता बेचारी घोड़े बेचकर सो जाती थी। और हम बेखटके अपना कार्य सम्पन्न कर लेते थे। अब अगर सचमुच पुलिस जनता से वफादारी पर उतर आई, हमारा क्या होगा।

इतना सुनते ही बैठक में सम्मिलित तीसरे सदस्य ने सांत्वना देते हुए कहा कि पहली बात तो यह है कि पुलिस और जनता में 36 का आंकड़ा है, इनके बीच मैत्री सम्बन्धी स्थापित हो भी गए, तो ये दोनों उसे निभा भी पाएंगे। इसमें भी दाउट है। इसलिए इस पर अभी से ज्यादा सोचना अकलमंदी नहीं है, क्योंकि

'अभी तो इफ्तदाए इश्क है रोता है क्या
आगे- आगे देखिए होता है क्या?

मार्डेन भिखारी

एक कहावत है 'उत्तम खेती, मध्यम बान निकृष्ट चाकरी भीख निदान' कभी यह कहावत अक्षर सह सत्य थी। किन्तु नेताओं के चरित्र की तरह इनकी मान्यताओं में भी परिवर्तन आया है। कभी निकृष्ट कही जाने वाली चाकरी आज उत्तम मानी जाती है। इसको प्राप्त करने के लिए उत्तम खेती योग्य जमीन को माटी के भाव बेचकर' सुविधा शुल्क' जुटाते हैं। यह सुविधा शुल्क पूर्व में प्रचलित 'घूंस' का संशोधित संस्करण हैं। जिसका लघु संस्थानों से लेकर उच्च प्रतिष्ठनों तक अच्छा बोलबाला है। यह काम दाता-और ग्रहीता द्वारा निष्ठा पूर्वक किया जाता है। पहले भीख मांगने का कार्य जाति विशेष द्वारा किया जाता था, उनकी भीख पर गहरी निष्ठा थी। अब यह काम अर्न्तजातीय हो गया है। जिन्हें निकृष्ट चाकरी नसीब नहीं होती। वह 'भीख निदान' का दामन थाम लेते है। इसमें किसी प्रकार का जोखिम नहीं है। न पुलिस का डर न कमीशन का चक्कर। यह डकैती और अपहरण के बाद धनपति बनने का निरपराद तरीका है।

वर्तमान समय में इन भिखारियों का अपना एक प्रतिष्ठिान है। और इन्होंने बकायदा 'अखिल भारतीय भिखारी कल्याण परिषद् का गठन कर रखा है। इनका अपना 'अखिल भारतीय भिखारी कल्याण कोष है 'बड़े-बड़े डिग्रीधारी बेरोजगार युवक इसके सदस्य हैं। बढ़ती हुई बेरोजगारी की समस्या ने इस धन्धे को काफी सम्बन्ध बनाया है। स्तर के अनुसार इनके भीख मांगने के तरीके जरूर भिन्न हैं। यह अपने भिखारी कल्याण कोष से बिना व्याज के ऋण उपलब्ध कराकर ऐसे नौकरी-पेशा लोगों को खर्च चलाते हैं। जिन्हें पांच-पांच,छः-छः महीने वेतन नसीब नहीं होती। यह अपने इस भीख मांगने के धंधे को शीघ्रातिशीघ्र पेटेन्ट करा लेना चाहते हैं कि कहीं अमरीका इसे पेटेन्ट न करवा लें। इन्होंने भीख मांगने के अपने कुछ स्थान नियत कर रखे हैं। जैसे-चिकित्सालय, देवालय, प्रतीक्षालय आदि। इन्होंने शिक्षालय को छोड़ रखा हैं क्यों कि

महीने के अंतिम दिनों में कुछ लोगों के सब्जी इत्यादि की व्यवस्था इन्हें अपने कोष से करनी पड़ती है। कुछ विशेष स्थानों में ये इसलिए नहीं जाते, क्योंकि वहां पहले से ही इनमें भी बड़े भिखारी मौजूद हैं। इनकी सबसे अधिक संख्या रेलवे प्लेटफार्म पर देखने को मिलती है। क्योंकि वहां समय की नजाकत को देखते हुए धनार्जन की दूसरी सुविधांए भी उपलब्ध हैं एक दिन मैं रेलवे स्टेशन पर खड़े-खड़े राजधानी जाने वाली गाड़ी की प्रतीक्षा कर रहा था। मेरे बगल से एक धवल वस्त्रधारी कंधे में पीताम्बरी डाले जनसेवक खड़े हुए थे। निश्चय वह भी राजधानी जाने के लिए ही पधारे थे। वे काफी प्रतिष्ठिा जनसेवक थे, इसका पता उन्हें छोड़ने के लिए आए महानुभावों के द्वारा सहज ही चल रहा था। वह अपने समर्थकों से घिरे लोक कल्याण की बातें कर रहे थे। तभी वहां एक भिखारी आ गया। इससे पहले की श्रीमान् अपनी जेब में हाथ डालते, जन कल्याण की भावना से प्रेरित होकर कुछ सिक्के भिखारी की ओर उछालते, उनके एक समर्थक ने उसे डांटते हुए कहा- इतने हट्टे-कट्टे होकर भीख मांगते हो, शर्म नहीं आती। इतना सुनते ही भिखारी को भी आवेश आ गया। वह तमतमाते हुए नेताजी की ओर इशारा करते हुए तपाक से बोला- जब हमारे देश के बड़े-बड़े नेता विदेशियों के आगे अपनी झोली फैलाते हैं, एक एक वोट की भीख मांगने द्वार-द्वार जाते हैं। तब क्या वह शर्माते हैं। श्रीमान यह हिन्दुस्तान हैं। यहां हर कोई किसी न किसी से कुछ न कुछ मांगता ही रहता है। कोई राम के नाम पर मांगता है, कोई अल्लाह के नाम पर मांगता है, कोई मुल्क के नाम पर मांगता है, तो कोई सुविधा शुल्क के नाम पर मांगता है क्या आपको मालूम नहीं भीख मांगना हमारी प्राचीनतम परम्परा है। जब हमारे देश के बड़े -बड़े ऋषि-मुनि भीख मांगर अपनी जीविका चलाते थे, क्या वह शर्माते थे। इसलिए श्रीमान् जो कुछ भी आपको देना है, शीघ्र दीजिए। भाषण की जुगाली कर व्यर्थ में हमारा समय नष्ट मत कीजिए अब तक प्लेटफार्म में भीख मांग रहे लगभग आधा दर्जन भिखारी और जमा हो गये थे। इनकी हठधर्मिता को देखते हुए श्वेतधारी जी बोले-'अमायार यह भीख मांगने का तुम्हारा कौन आइडिया है। क्या पुलिस वालों की तरह तुम भिखारियों ने भी भीख मांगने का अपना स्टाइल बदल लिया है। इतना सुनते ही सभी भिखारी एक साथ बोले -जी हां!'आपने बिलकुल ठीक पहचाना है हम भारतीय वे रोजगार मार्डेन भिखारी हैं हमें इसी स्टाइल से भीख मांगते हुए इक्कीसवीं सदी तक जाना है।

सावधान हम सुधर रहे हैं

देशभक्ति और जनसेवा याने पुलिस इन दिनों बड़े जोर शोर से प्रदेश के पुलिस की विगड़ैल छवि को जनता के बीच सुधार कर प्रस्तुत करने की कबायत कर रही है। पुलिस के आला अफसरों द्वारा पुलिस को मानवीय, सभ्य और शिष्ट बनाने की कोशिशें लगातार जारी हैं। लेकिन पुलिस है कि अंग्रेजो के जमाने वाले प्रभाव से उबर नहीं पा रही है। चाहे वह बिहार हो चाहे उत्तर प्रदेश या मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र अखिल भारतीय स्तर पर इनका करेक्टर एक जैसा है। वर्तमान समय में चल रहे जनसुनवाई के दौरान पुलिस के खिलाफ मामलों की संख्या ने सरकार और पुलिस मुख्यालयों की नींद उड़ा दी है। दृश्य -श्रव्य और पिंट मीडिया में भ्रष्टाचार को लेकर पुलिस पर बहुत अरोप प्रकाशित और प्रसारित किए जा रहे हैं। फिल्मों ने भी अपने स्तर पर पुलिस के कारनामें परोसे हैं।

नेताओं की तरह पुलिस में भर्ती होने के लिए किसी विशेष अतिरिक्त योग्यता की जरूरत नहीं होती इसमें मुख्यरूप से दौड़-कूद सीना फुल-अप, नेताओं की तरह नाटकीय संवाद शैली और लुच्चस्तरीय, अशिष्ट गालियों का धारा प्रवाह निस्पादन आना चाहिए। आज जन सुनवाई के तर्ज पर पुलिस और आम आदमी के बीच मैत्री सम्बन्ध बनाने की मुहिम चलाई जा रही हैं। पुलिस को देखते ही सभ्य, शिष्ट अच्छे लोगों की तो घिग्गी बंध जाती है। अब ऐसा नहीं होना चाहिए। पुलिस अब अपनी छवि ऐसे सुधारे की जनता उसे देखकर खुश हो। पीठ पीछे भद्दी-भद्दी अश्रवणीय गलियां ना दे। वह सही तरीके से अपनी डियुटी करे और सहीसमय पर घटना स्थलपर पहंच कर जनता के जान माल के हिफाजत करने की आदत डालें

एक दिन हमने एक उच्च पुलिस अधिकारी से पूछा कि श्रीमान एक बात हमारे समझ में आज तक नहीं आई वह यह कि कहीं कोई बारदात हो जाने के बाद ही पुलिस घटना स्थल पर क्यों पहुचती है। इस तरह के घटना क्रम वाले प्रकरण हमारी फिल्मों

में भी भरे पड़े है सही समय पर क्यों नहीं पंहुचती। हमारे इस प्रश्न पर पहले वह चकराए फिर बड़े धैर्य के साथ बोले-देखिए अगर हम सही समय पर घटना स्थल पर पहुचं जांएगे तो दंगे और फसाद नहीं हो पाएगे तो फिर आप खुद बतालाइए हम अपने बीबी बच्चों की फरमाइदस कैसे पूरी कर पाएंगे। इसलिए पहले हम प्रतिद्वद्धियों को आपस में लड़ने की पूरी छूट देते हैं। फिर बड़े प्रेम से दोनों पक्षों से सांठ-गांठ कर अपना वित्त साधन करते हैं। हमने कहा श्री मान यह तो जनता के साथ सरासर अन्याय है एहसान फरामोशी हैं। वह तपाक बोले कि यह तो हमारी मजबूरी हैं। खैर छोड़िए यह तो पुरानी व्यवस्था थी अब हम सुधार रहे हैं ऐसे ही एक बार जेब कतरों के सरगना के बास ने सभी जेब कतरों की डिय़्टी विभिन्न सार्वजनिक स्थानों यथा, सब्जीमंडी, गल्लामंडी, बसस्टैंड आदि में लगाई। शास के बख्त सभी ने अपना हिसाब दिया। किसने कितने पाकिट मारे उनसे कितनी आमदनी हुई। लेकिन स्टेशन में ड्यृटी करने वाले ने मायूस होते हुए बोला बस आज मैं एक भी जेब नहीं काट सका क्यों बास ने पूछा इस पर जेब कतरे ने जवाब दिया इसलिए की आज वहां आस-पास कोई पुलिस वाला नजर नहीं आ रहा था। बास सीधे थाने में ड्युटी आफिस के पास पहुंच कर बोला आज रेलवे स्टेशन के प्लेटफार्म पर किसी पुलिस वाले की ड्युटि क्यों नहीं लगाई गई, इससे कितना नुकसान हुआ आखिर इसकी भरपाई कौन करेगा।

देखिए इस समय चरित्र में सुधार लाने के लिए युद्धस्तर पर प्रयास किए जा रहे है। इसके लिए प्रदेश के प्रत्येक थाने में शरीफों का सम्मेलन आयोजित करने की योजना बनाई जा रही है। जिसके तहत वकील डॉक्टर शिक्षक व अन्य नागरिकों को बुलाकर सिपाहियों को शराफत, ईमानदारी, कर्तव्यनिष्ठ और सच्ची जन सेवा का पाठ पढ़ाया जाएगा यह सम्मेलन प्रत्येक थाने में कम से कम दो माह में एक बार आयोजित किया जाएगा। हांलाकि पुलिस को सुधारने का काम काफी जटिल हैं। लेकिन उच्च अधिकारियों ने विश्वास दिलाया है कि लगातार सरीफों के सम्पर्क में रहने से इनमें सुधार अवश्य आएगा। पारस परम कुधातु सुहाई पुलिस के सुधर जाने से फरियादियों को किसी प्रकार की प्रताड़ना नहीं झेलनी पड़ेगी। अब सरीफ लोग पुलिस से दूर नहीं भागें हों।

धूम्रपान निषेध है

मैं कलिंग उत्कल एक्सप्रेस से पुरी जा रहा था। ट्रेन जैसे ही राउरकेला नामक स्टेशन पर आकर रूकी वैसे ही सभ्रांत से दिखने वाले एक सज्जन ए.सी. कोच से नीचे उतरे और प्लेटफार्म पर एक खम्भे के नीचे खड़े होकर सिगरेट सुलगाई और खम्भें में टंगे धुम्रपान निषेध है के पोस्टर को धुएँ में उड़ाने लगे तभी उसके ऊपर प्लेटफार्म पर तैनात देशभक्त जन सेवकों की नजर पड़ी। उन्होने उसे घेर लिया बोले देखते नहीं यहाँ धुम्रपान निषेध का बोर्ड लगा हैं। और आप आम भारतियों की तरह उसी के नीचे खड़े होकर सिगरेट पी रहे हैं। यह कानूनन आप को 500 रू. जुरमाना और सजा दोनो भुगतानी पड़ेगी निकालिए जुरमाना 500 रू. और सजा के लिए पुलिस सहायता केन्द्र चलना पड़ेगा समझे। सभ्रांत यात्री ने उन्हें समझाते हुए कहा। देखिए हर आधा-एक घण्टे में मुझे सिगरेट पीने की आदत है। पिछले 12 घंटे से ट्रेन में सवार हूं, एक भी सिगरेट नहीं पी अब जब की बेचैनी हद से ज्यादा बढ़ गई तो एक सिगरेट जला ली तो कौन सा इतना बड़ा गुनाह कर दिया। लोग तो न जाने क्या-क्या? जला रहे हैं पुलिस वाले अपने पुलिसिया रूतवा बघारते हुए बोले, लोगों से हमें क्या लेना देना। आप रंगे हाथ पकड़े गए हैं। जुरमाना तो आपको देना ही पड़ेगो समझे रूल इज रूल निकालिए जुरमाना और चलिए थाना। पॉच रूपये की सिगरेट के लिए 500 रू. जुरमाना यह कहा का इंसाफ हैं। वह बोले यह स्वास्थ्य संरक्षण अधिनियम 1996 के आधीन है। सभ्रांत यात्री थोड़ा नरम होते हुए बोले नियम अधिनियम को छोड़िये साहब सौ पचास लेकर मामला रफा-दफा करिए,पुलिस वालों के भी तेवर थोड़ा नरम पड़े- हम तीन है श्रीमान आपके सौ पचास से क्या होगा? एक के हिस्से में सौ भी न आए तो यहां झक मारने से क्या फायदा ले दे के मामला 300 में निपट गया। यह है हमारे देश के पुलिस की देश भक्ति और जन सेवा हमारे देश की पुलिस का चरित्र अन्धदेशों की पुलिस से हट कर है। अन्य देशों की पुलिस का ले-देकर प्रकरण

को निपटाने के चक्कर में नहीं रहती वह अपराधी को उसके वास्तविक अन्जाम तक पहुंचाती है। हमारे देश की पुलिस कहीं कोई बारदात हो जाने के घंटो बाद घटना स्थल पर पहुंचती है। चलान काटने की जगह 50- 60 रूपये खसोट कर अपनी जेब गरम करती है। यदि कोई रिसपांसविल व्यक्ति किसी महत्वपूर्ण दुर्घटना की जानकारी पुलिस को देता है। तो यह हाथ धोके उसके ही पीछे पड़ जाती है। हमारे देश के पुलिस की लीला अपार है। तभी लोग कहते हैं कि-न इनकी दोस्ती अच्छी न इनकी दुश्मनी अच्छी, इन पुलिस वालों की तो दूर की बंदगी अच्छी।

दूसरे देश की पुलिस यहाँ की अपेक्षा अधिक ईमानदार और कर्तव्यपरायण होती है। वह वायर लेस के एक मैसेज में ही तुरन्त घटना स्थल पर पहुंच जाती है। सरकार के द्वारा बनाए नियम, कानून का शक्ति के साथ पालन करती करवाती है। धूम्रपान निषेघ तो क्या भारत में ना जाने कितने कानून बनाए गए और भूला दिए गए। ए है इंडिया मेरी जॉ, यहॉ

तो कानू बनते ही तोडने के लिए हैं। पूर्व रेलमंत्री लालूजी को ले अपने समय में प्लास्टिक के डिस्पोजल की जगह मिट्टी के कुल्लढ़ में चाय बेंचने का फरमान जारी किया। इसके भी पूर्व एक रेलमंत्री ने पान और गुटके पर प्रतिबंध लगाया था। लेकिन डिस्पोसल आज भी मौजूद हैं और बेचारे मिट्टी के कुल्लढ़ मिट्टी में मिल गए रही गुटको की बात तो वह आज भी धड़ल्ले के साथ वे रोक टोक चलती ट्रेनों में बिक रहे हैं। जिन्हें पेट्रोलिंग के नाम पर चलने वाली पुलिस मुफ्त में चबाकर ट्रेन के बासवेसिल खराब करती हैं। देश में सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान को रोकने के लिए एक अधिनियम बनाया गया जिसके तहत ऐसा करने वालो पर 1000 रू. का जुरमाना या तीन माह की कैद या दोनो भी एक साथ हो सकते हैं फिर भी लोग बाज नहीं आते, सिगरेट के पैकेट पर स्पष्ट रूप से लिखा रहता है सिगरेट स्मोकिंग इज इन्जूरियम फार हेल्थ फिर भी लोग पीते हैं और मस्ती से जीते हैं। एक शोध के अनुसार 2010 तक यहां हर शाम सिगरेट पी कर मरने वालों की संख्या 10 लाख तक पहुंच जाएगी। इसके बावजूद सिगरेट स्मोंकरों पर कोई प्रभाव नजर नहीं आता। एक अस्ट्रेलियाई विशेषज्ञ के अनुसार सिगरेट बनाने के लिए सुअर के खून के हीमोंग्लोबीन का प्रयोग किया जाता है। इसकी प्रमाणिकता के लिए अन्वेशन कार्य जारी है। सिद्ध हो जाने पर शायद कुछ कमी आए। पैसा हमारे देश के लोगों की बहुत बड़ी कमजोरी हैं।

पैसे के लिए लोग बाग अपने सगे सम्बंधियों को तो क्या माँ-बाप को भी मौत के घाट उतार देते हैं। बड़े-बड़े ज्ञानी साधू संत, महंत आचरणहीन हो जाते है। पैसे

की इस महिमा को देखते हुए बंगलौर की एक कम्पनी फोकस इन्जीनिरिंग सर्विसेज ने अपने कर्मचारियों को धुम्रपान छोड़ने पर 10 प्रतिशत वेतन बढ़ाने का वादा किया है। देखिए इसका अंजाम क्या होता है।

अब चोर पुलिस की ओर भागते हैं

समय परिवर्तन सील है। यह पल-प्रतिपल बदलता रहता है। इसके बदलने के साथ-साथ मूल्यों में भी बदलाव आता है। लोगों के कार्यव्यवहार और मानसिकता में भी परिर्वतन आता है। जैसा की पुलिस वालों को ही ले लीजिए। पहले जब हम पुलिस कहते थे तो हमारे सामने लोगों के जान माल की हिफाजत करने वाले खाखी वर्दी से लैस ईमानदार सिपाहियों के चेहरे उभर आते थें। पुलिस की उपस्थिति लोगों को अश्वस्त करती थी। कि पुलिस आ गई हैं अब कोई जान माल का नुकसान नहीं होगा। चोर उचक्के और अपराधी तत्व दुभदबाकर भाग जाते थे कि भागो पुलिस आ गई कहीं कोई लफड़ा न हो जाय। तब अपराधी कोई गलत काम छुप- छुप के ही करते थे। उनके अन्दर पुलिस कानून और सजा का भय बना रहता था कि अगर पकड़े गये तो हवालात की हवा खानी पड़ेगी।

कुछ घटनाओं में अगर कुछ पुलिस वाले अपराधियों से मिले भी होते थे लो उन्हें भी लोक-लज्जा, नौकरी, वर्दी और अपने बाल बच्चों का भय बना रहता था। वह अपराधियों की मदद अप्रत्यक्ष रूप से करते थे। क्यों कि राज खुलने पर उन्हें राजकीय दण्ड का भय बना रहता था। इधर पिछले कुछ समय से देश के विभिन्न भागों में पुलिस की भूमिका में काफी बदलाव आया है। उसका चरित्र संदिग्ध हो गया है। आज शासन सत्ता पुलिस सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे नजर आते हैं। इन सब की भूमिकांए संकास्पद हैं आज से सब भ्रष्टाचार के प्रतिरूप नजर आते हैं। अब अपराधी और असमाजिक तत्व पुलिस से बिल्कुल भी भय नहीं खाते हैं। अब आम नागरिक सम्मानीय और प्रतिष्ठित लोग पुलिस से भय खाते है। आज सभ्य भारतीयों के मन में पुलिस को देखते ही, भय विस्मय,शोक हास जुगुत्सा, घृणा इत्यादि भाव उभरते हैं। इनके मुख से सदैव दुर्वचन और निर्वचन प्रस्फुटित होते रहते हैं। इनके क्रोध की माया अपरमपार है। ए अपने वामांगनी के अलावा किसी से नहीं डरते पुलिस की नौकरी एक ऐसी नौकरी है जिसमें सलाद से लेकर सब्जी तक और रसगुल्ला से लेकर

रसमलाई तक मुफ्त में उपलब्ध हो जाती है। इनकी सारी यात्राएं चाहे वह बस की हों ट्रक की हों या ट्रेन की फ्री में सम्पन्न होती है। ए अपने वाहनों में पुलिस लिखवा कर कहीं भी बेखौफ बिना रोक-टोक के आ जा सकते हैं।

पहले चोरी-चपाटी, जेबकतरी होने या अपराधीयों से सताए जाने पर लोग पुलिस के पास जाते थे। अब ऐसा नहीं होता अब चोर, उचक्के, जेबकतरे और अपराधी तत्व पुलिस की उपस्थित से काफी आश्वस्त रहते हैं,निर्भय होकर अपने कार्य को अंजाम देते हैं। पकड़े जाने पर ए पुलिस की ओर भागते हैं। क्यों कि उन्हें पता है कि पुलिस उन्हें जनता के कहर से बचा लेगी। पुलिस वाले इन्हें सरण और संरक्षण प्रदान करते है। ये तत्व पुलिस की अतिरिक्त आय का प्रमुख स्रोत होते हैं। एक दिन मै गल्ला मंण्डी में गल्ला खरीद रहा था। वहां एक जेबकतरा एक किसान की जेब काट कर भागने लगा। लोगों ने उसे पकड़ लिया पैसे छुड़ाकर किसान को वापस करते हुए जेब कतरे की धुलाई शुरू कर दी। जो भी आता वही अपना हाथ साफ करता। मार खाते-खाते जेबकतरे को चक्कर आने लगे। तभी उसकी नजर गुमटी में चाय पी रहे एक पुलिस वाले पर पड़ी वह उसकी ओर तेजी से भागा, जेब कतरा पुलिस वाले के पास पहुंच कर बोला भाई बाप मुझे बचा लिजिए नहीं तो ए लोग मार डालेंगे। पुलिस वाला उसे अपने पीछे छिपाते हुए बोला आप लोग इसे इतनी बेरहमी से क्यों पीट रहे हैं। इसने अभी-अभी एक किसान के जेब काटी है तो थाने जाकर रिर्पोट करो। इस तरह पीटने का आपको कोई अधिकार नहीं है। ऐसा करना कानून को हपने हाथ में लेना है चोर को सजा देना पुलिस की जिम्मेदारी है जनता की नहीं। कितने की जेब काटी है पुलिस वाले ने अपना पुलिसिया रूतबा बघारते हूए कहा 10 हजार की जिसे छुड़ाकर किसान को वापस दे देए पुलिस वाला बोला यह कानून अपराध है पैसे लाकर वापस जेब कतरे को दो फिर थाने में एफ.आई. लिखवाओं। पुलिस उन रूपयों की जप्ती बनायेगी। कोर्ट में चलान पेश किया जायेगा। गवाही होगी। पैसे किसान के ही हैं। यह सिद्ध हो जाने पर ही पैसे किसान को सौंपे जाएंगे। समझे इतना सुनते ही बेचारा किसान वहां से रफुचक्कर हो गया। आज समय इतना बदल गया है। कि पुलिस जनता के जान माल की हिफाजत करने के बजाय उल्टे अपराधियों को संरक्षण प्रदान करती है। अब चोर-चोर मौसेरे भाई की जगह चोर पुलिस मौसेरे भाई का जमाना आ गया हैं।

चोर-चोर मौसेरे भाई की
हवा हुई बातें।
अब कोतवाल चोर से मिलकर करता है घातें।।

एक अंगरेजी स्कूल का हिंदी दिवस

इन दिनों अखबारों और संचार चैनलों मे दो के खूब चर्चे हैं, एक तो हिंदी दिवस के दूसरे माननीय मोदी जी के पड़ोसी देशों से मैत्री संबंध स्थापित करने के सद प्रयाशों के । दोनों ही प्रयास राष्ट्र हित के हैं, होने ही चाहिए। इन कार्यो में किसी भी विपक्षी के आड़ंगा लगाने की गुजांइस नहीं है। सितम्बर का महीना प्रारम्भ होती ही हिंदी प्रेमियों के अतः करण में हिंदी के प्रति अगाध प्रेम उमड़ने लगता है। जगह-जगह हिंदी पखवाड़े मनाये जाते हैं। गोष्ठिया आयोजित की जाती हैं। हिंदी का यशोगान होता है, और सितम्बर समाप्त होते ही फिर साल भर के लिए अंग्रेजियत की चादर ओढ़कर सो जाते हैं। यही हमारी नियति है।

ऐसे ही एक दिन सुबह-सुबह अंग्रजी माध्यम स्कूल के एक डायरेक्टर साहब मेरे घर आये। गुड मॉर्निंग सर कहते हुए मेरा अभिवादन किया। मैंने उनसे पधारने का कारण पूछा। वह मुस्कुराते हुए बोले सर आज हमारे इंस्टीटयूट में हिंदी डे मनाने का कार्यक्रम हैं। इसमें हम आप की प्रजेंट चीफगेस्ट के रूप में चाहते हैं। प्लीज हमारे इस रिक्वेस्ट को स्वीकार कीजिए मुझे उनके इस रिक्वेस्ट पर हंसी भी आ रही थी। और तरस भी। मना तो श्रीमान हिंदी दिवस रहे हैं और बोल इंगलिश रहे हैं। इस इंगलिश का आज कल बहुत प्रचलन है लोग ऐसी भाषा बोलने को स्टेट्स सिंबल बना लिया हैं। मैंने इस हिंगलिश की ओर उनका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा। अगर आप हिंदीडे को, हिंदी दिवस कहते, प्रजेंट की जगह उपस्थित कहते, चीफगेस्ट की जगह मुख्यातिथि बोलते, रिक्वेस्ट की जगह निवेदन कहते तो मुझे अति प्रसन्नता होती और हिंदी के प्रति आपका प्रगाढ़ प्रेम प्रगट होता।

इस पर वह मुस्कुराते हुए बोले आप ठीक कह रहे हैं सर लेकिन हमारा विद्यालय चूँकि इंग्लिश मीडियम का है इसलिए अंग्रजी का ध्यान तो रखना ही पड़ता है। यह कहते हुए एक आमंत्रण कार्ड पकड़ाया जो अंग्रेजी में ही लिखा था और प्रमाण कर

चले गए। मैं नियत, समय पर विद्यालय पहुंच गया। गेट के दोनों तरफ छोटे-छोटे बच्चे हाथ में गुलाब के फूल लिए खड़े थे। मुझे देखते ही फूल मेरी ओर बढ़ाते हुये बोले गुड मॉर्निंग सर मैंने कहा यह मार्निंग नहीं दोपहर है। डायरेक्टर साहब स्पष्टीकरण देते हुये बोले सर इनका स्कूल मॉर्निंग का है इसलिए ये वही रटे हुए हैं। मैंने कहा यही रटना तो इंगलिश मीडियम की विशेषता है। कार्यक्रम शुरू हुआ। आमंत्रितों ने अपने अपने विचार व्यक्त करते हुए हिंदी के संबध में खूब कशीदे पड़े। ततपश्चात विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपस्थित एक भारी भरकम व्यक्तिव के धनी जो बकायदे शूट-बूट और टाई धारण किये हुए थे हिंदी पर बोलने के लिए आये। बोलना शुरू किया माइडियर स्टूडेंट, चीफगेष्ट, और पैरेंट्स आज हम सब हिंदी डे मना रहे हैं। हिंदी इस अवर नेशनल लैंग्वेज हमें इस पर प्राउड है, हिंदी आदर कंट्रीजस में हमारे इंडियन होने की पहचान है। कुछ लोग हिंदी जानते हुए भी अपने बोल चाल में अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग करते हैं, मुझे ऐसे लोगों से सख्त हेट है। हिंदी राष्ट्रभाषा होगी और जरूर होगी पर थोड़ा सा वेट है। थैंक्यू बेस्टोफ ऑल। उनका यह हिंदी प्रेम देखकर मैं हतप्रभ था। राम जाने हिंदी का क्या होने वाला है।

अब बोलने की बारी मेरी थी। मैंने बस इतना कहते हुए अपना पल्ला झाड़ लिया की अभी जिन सज्जन ने हिंदी पर बोला है वह आज के तथा कथित हिंदी प्रेमियों की सच्चाई हैं। इमें ऐसे हिंदी प्रेमियों से हिंदी के अस्मिता की रक्षा करना होगा। एक अंग्रेजी मीडियम के स्कूल ने हिंदी दिवस मनाया उसके लिए बहुत-बहुत बधाई।

दिल मिले न मिले हाथ मिलाते रहिये

एक दिन के अखबार में छपा की काठमांडू में आयोजित सार्क देशों के शिखर सम्मेलन में भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और पाकिस्तान के पीयम नवाज सरीफ घंटो एक ही मंच पर मंचामीन रहे। लेकिन दोनों मेसे किसी नें हाथ मिलाना तो दूर नजर मिलानें तक की जहमत नहीं उठाई। दोनों तरफ आन की कमान चढ़ी थी कहते है कि बहर हाल पहले भी कुछ ऐसा ही नजारा तत्कालीन भारतीय पी.एम अटल बिहारी बाजपेयी और पाकी राष्ट्रपति परवेज मुसर्रफ के बीच देखने को मिला था। याने की यह परंम्परा दोनो देशों को विरासत में मिली है। ठीक दूसरे दिन उन्हीं अखबारो में छपा की -एक दुसरे से नजरें चुराने वाले नमो-नवाज ने बड़े ही गर्म जोशी से ठहाका लगाते हुए हाथ मिलाया। अब यह ठहाका उपहास्यात्मक था या उत्सहात्मक यह तो वही जाने। इन बड़े-बड़े नेताओं का चरित्र भी बड़ा अजीबो-गरीब होता है। इनकी माया का पार पाना बहुत ही मुश्किल है। ऐसे में मुझे फिल्म का नाम तो याद नहीं पर उसके गाने की कुछ पंक्तियाँ जरूर याद आ रही हैं। तेरी माया का न पाया कोई पार की माया तेरी तू ही जानें सो भइया इन उच्च स्तरीय नेताओं की माया अपरम्पार है। ये सभी क्षण-क्षण में रंग बदलने की कला में परम प्रवीण हैं इन्हें गिरगिट का वंशधर ऐसे थोड़े ही कहा जाता है। कुछ भी हो नमो-नवाज की यह हाथ मिलते रहिये वाली स्थिति है और एसी संवेदनशील स्थिति में हाथ मिलते हुए सावधान रहना भी बहुत जरूरी है क्यों कि पाकिस्तान की तासीर पीठ में छूरा नहीं मिशाइल दागने की है। यह एक ऐसा जिन्न है जिसे दुनिया का कोई आका कभी किसी बोतल में बंद नहीं कर सकता। हमारा देश अभिनय प्रधान देश है। यहाँ बड़े-बड़े नेता मंत्री जिस चीज का अभिनय कर देते है वह अभियान बन जाता है मोदी जी ने झांडू लगाई तो यह पूरे देश के लिए अभियान बन गया। अच्छे-अच्छे ओहदेदार नेता, मंत्री हाकिम -ऑफसर यत्र-तत्र-सर्वत्र झाडू मटकाते दिखाई देने लगे जो काम कभी इनकी नजर में निखिद्द समझा जाता था वह

सहसा गरिमा मय हो गया। लोग-बाग झाडू लगवाते हुए फोटो खिंचवा कर अखबारों में छपवा रहे है। बड़े-बड़े मीडिया वाले उसका कवरेज लेते है। फिर इनका दृश्यांकन पूरे दिन प्रशारित किया जाता है। यह पी.एम. जी का प्रिंय काम है। यह कार्य भारत की राजधानी दिल्ली से होता हुआ पूरे देश में फैल गया। झाडू लगने के इस कार्यक्रम के जनक आम आदमी पार्टी। के नेत अरविंद केजरीवाल और प्रचारक- प्रशासक माननीय मोदी जी को माना जा रहा है। इतिहास के पन्नो में इनका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। हमारे देश में गंदगी का भी लोग कितना बेहतरीन उपयोग कर लेते है। यह अनुकरणीय है। ऐसी पावन गंदगी को शत् शत् प्रणाम है ओम गंदगी आय नमः जब से इस अनोखे कार्यक्रम का जन्म हुआ है झाडू बनाने वाली कंपनियां माला माल हो रही है, कोई स्वप्न में भी नहीं सोच सकता था कि यह झाडू लगाना और बनाना मुनाफे का सौदा हो सकता है। अभी कुद दिनों पूर्व बनारस में सिने तारिका हेमा मालिनी को झाडू लेकर हाथ मटकाते देखा गया यह झाडू लगाने का प्रकरण सुर्खियों में रहा, की हेमा जी ने बनारस की गलियों में झाडू लगाया। मीडिया वालों ने इसे फिल्माया और दिखाया की हेमा जी के हाथ में झाडू जरूर था। लेकिन वह लगा नहीं रहीं थी उनका झाडू जमीन में नहीं हवा में था। जिसे स्वीकारते हुये हेमा जी ने कहा कि मैं झाडूं लगा कहां रही थी मैं तो यह बता रही थी। की झाडूं पकड़ने की भी शहूर नहीं आई बड़ी खेद की बात है। जब से आदरणीय मोदी जी ने सफाई को राष्ट्रीय मुद्दा बनाया है तब से उनके गुड फेम में आने के लिए देश के बड़े-बड़े नेता मंत्री हाकिम ऑफसर झाडू लगाने पर आमादा हैं। इस मिशन की फोटोग्राफी कराकर अल्बम तैयार कराये जा रहे हैं जिसे दिखा कर ये मोदी जी के चहेते बन सके। उच्च पदासीन अफसर भी इस कार्य में पीछे नहीं हैं वह जहां भी जाते है, सबसे पहले युरिनल और टॉयलेट देखते है,गंदे हुए तो वहां के मुखियां की खैर नहीं। जहां उन्हें नाक में रुमाल रखकर जाने में तकलीफ महसूस होती थी वहां मुस्कुराते हुए जाते हैं और स्थिति उगलत-निगलत विपत घनेरी वाली हो जाती है। कोई कुछ भी कहे सफाई राष्ट्रीय समस्या है इसका समाधान होना ही चाहिए इस संबध में मुझे अरुण कमल के कविता की कुछ पंक्तियाँ याद आ रही है।

जो है उससे बेहतर चाहिए, सारी दुनिया के लिए एक मेहतर चाहिए।

लो फिर हो गया एक और घोटाला

हमारा देश घोटाला प्रधान देश है, यहाँ अक्सर ही समय-समय पर तरह-तरह के घोटाले होते रहते है। इनमें से कुछ छोटे होते हैं। कुछ बड़े तो कुछ मझोले,घोटालों के मामले हमारा देश दुनिया में सबसे महान है विशिष्ठ है। यहां घोटाला करने और कराने वालों की अच्छी खासी फेहरिस्त है। जो घोटाला करके निगल रहे है बैंक पर बैंक पता नहीं इन घोटाले बाज नेताओं का पेट है या सेप्टिक टैंक, एक बात और मार्क करने लायक है वह यह की देश में घोटालों की कई श्रेणियां है, यथा ... राजनैतिक घोटाले, औद्योगिक घोटाले, व्यापारिक घोटाले, सेंसेक्स घोटाला शैक्षिक घोटाला ही रहा है। दरअसल घोटाला या काण्ड या स्कैण्डिल, ऐसी घटनाओं को कहते हैं, जो बहुत ही चर्चित हो जाती है, जिसमें कोई गलत आपराधिक अथवा अनैतिक कार्य करने का आरोप होता है या जो किसी प्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा अपमानजनक कार्य करने से संबधित होता है हमारे देश में घोटाले की परम्परा काफी प्राचीन है, भारत मे इसकी शुरूवात सन् 1948 में जीप घोटाले से मानी जाती है इसके बाद यह सिल सिला ऐसा चला की आज तक थमने का नाम नहीं ले रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति से लेकर अब तक लगभग चालीस रिकार्ड तोड़ घोटाले हो चुके है। जैसे..1951 में साइकिल घोटाला, 1958 में मुध्र भैंस घोटाला,1960 में तेज ऋण घोटाला,1965 में पटनायक घोटाला, 1981 में अतुले ट्रस्ट घोटाला, 1987 में बहु-चर्चित बोफोर्स घोटाला, 1992 में हर्षद मेहता काण्ड, 1995 में जूता घोटाला, 1996 मे चारा घोटाला, 2008 में सत्यम घोटाला, व्यापम घोटाला, और जाने ऐसे कितने ही घोटालों से भरा पड़ा है देश का इतिहास, किस-किस के याद करें किस-किस को भूलें। देश के इन घोटालेबाजों को कितना ही समझाओं की भइये यह घोटाला करना राष्ट्रीय अपराध है देश के अर्थशास्त्रीओ के अनुसार इससे देश की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। समाजशास्त्रियों के अनुसार इसका समाज में बुरा प्रभाव पड़ता है। देश दुनियां मे

बदनामी होती है, लेकिन उनके समझ में यह बात आती ही नहीं धरम-करम से जोड़कर समझाओं की घोटाला करना घोर पाप है,अधर्म है, ऐसे लोग रौ-रौ नरक में जाते हैं। तो भी इन पर कोई फर्क नहीं पड़ता। घोटाला करना ये अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानते है। घोटाला दुनिया में भारतीय नेता होने की पहचान बनती जा रही है। घोटला करना हमारे देश के नेताओं की चारित्रिक विशेषता है। अगर ये ऐसा नहीं करेंगे तो चरित्र से गिर जायेंगे अभी हमारा देश पूर्व में किये गए घोटालों की मार से ही नहीं उबर पाया की यह ढाई हजार करोड़ का शारदा चिटफण्ड नाम का एक नया घोटाला प्रगट हो गया। कहा जाता है की इसमें लगभग बीस लाख लोग इसके ठगी की चपेट में आये हैं तथा 26 एजेंट अब तक शहीद हो चुके हैं। इसमें भी किसी मंत्री का हाथ होना बताया जा रहा है। हमारे देश में यह लोकतंत्र भी अजीब तंत्र है। यहाँ के नेताओं द्वारा लोकतंत्र से लोक प्याज के छिलके की तरह निकाल कर फेंक दिया जाता है फिर खालिस तंत्र को घोटाले का नमक और कमीशन की चटनी मिलाकर स्वाद के साथ खाया जाता है इसे खाने में हमारे देश के नेताओं को बड़ा मजा आता है। यहाँ घोटालेबाजों को पकड़ना अलोकतांत्रिक माना जाता हैं। अभी हाल ही प्रकाशवान हुए शारदा चिटफंड घोटाले से सरोकार रखने वाले एक मंत्री की गिरफ्तारी हुई, जिसे वहां की सत्ता साधिका द्वारा अलोकतांत्रिक बताया गया। हम यहाँ की लोकतांत्रिक व्यवस्था भी बड़ी अजीबोगरीब है, यहाँ जितने भी प्रदेश हैं उन सब का अपना-अपना लोकतंत्र हैं। केंद्र का प्रजातंत्र अलग हैं, अब चूँकी मामला राज्य के प्रजातंत्र का है, इसलिए वहां के प्रजातंत्र की दृष्टि में प्रभावित मंत्री की गिरफ्तारी अलोकतांत्रिक है। गिरफ्तारी के बावजूद भी उन्हें उनके मंत्री पद से हटाया नहीं जायेगा। इसके लिए संसद में हंगामा खड़ा करने की धमकी भी दी जा चुकी है, इस संबध में बी बस इतना ही कहा जा सकता हैं कि............

वाह रे न्याय वाले तेरा फैसला
बस गरीबों के सर से गुजार गया
जिसने की गल्तियाँ वह हिफाजत में है
जो था निर्दोष बे मौत मारा गया।

भ्रष्टाचार पर वाद-विवाद

एक अशासकीय शाला में बाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन था, जिसमें बुद्धि जीवी मान कर मुझे भी ससम्मान आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगी दो पंक्षो में बटे थे। एक पक्ष को देश से भ्रष्टाचार समाप्त किया जा सकता है पर बोलना था और दूसरे को देश-से भ्रष्टाचार समाप्त नहीं किया सकता है पर तर्क सहित अपने विचार व्यक्त करने थे। जब मैं पहुचा तब भ्रष्टाचार समाप्त किया जा सकता है, पर बोलने वाले बोल चुके थे। और अब भ्रष्टाचार समाप्त नहीं किया जा सकता है, पर बोलने वालों की बारी थीं।

निर्णायक मंडल अपने कान खड़े किए विपक्ष के विचार सुनने और अपना निर्णय देने के लिए तैयार थे। एक प्रतियोगी पहली पहली बार विधायक से मंत्री बने नेता की तरह नेताई चाल से चलता हुआ मंच पर आया माईक के सामने खड़े होकर निर्णायक मंडल सहित मुख्य अतिथी, जो एक स्थापित राजनैतिक पार्टी के ख्यातिलब्ध नेता थे को प्रणाम किया और फिर देश से भ्रष्टाचार समाप्त नहीं किया जा सकता है, बोलना प्रारम्भ किया। उसी के कुछ संम्पादित अंश यहां प्रस्तुत है।

जिस प्रकार मनसा बाचा कर्मणा अर्थात मन से बचन से और कर्म से किसी को कष्ट पहुंचाना हिंसा है,उसी प्रकार न्याय नियम नीति और संविधान विरूद्ध आचारण करना भ्रष्टाचार हैं। आज हमारे देश में भ्रष्टाचार विषवेल की तरह हर क्षेत्र मे तेजी से फैल रहा है। अगर यह कहा जाय कि हमारा देश भ्रष्टाचार प्रधान देश है तो कोई अतिसयोक्ति नहीं होगी। आज कोई एक प्रांत नही अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र भ्रष्टाचार रूपी तक्षक का दंश क्षेल रहा है। ऐसा कोई क्षेत्र शेष नहीं हैं जहां इस भ्रष्टाचार ने अपने अंगद पांव न जमा रखे हों चाहे वह ब्यूरोकेट हो या राजनेता व्यापारी कर्मचारी उद्योगपति सभी के सभी भ्रष्टाचार के दल दल में आकंठ डूबे हुए हैं। जिस देश में पीने के पानी के नाम पर शहर का पानी बोतलो में पैक कर बेंचा जाता हो, दूध के नाम पर लाखों लीटर केमिकल युक्त सेंथेटिक दूध अबोध बच्चों से लेकर बड़े बूढ़ो तक के पेट में

पहुचाया जाता हो, दूध की थैलियों से दूध निकाल कर सफेद पानी भर कर बेंचा जाता हो। जिस देश में नकली सरसों के तेल और सेंथेटिक देशी घी के कारखाने चलते हो। वहां से हम भ्रष्टाचार समाप्त करने की बात करते है? जिस सेंथेटिंक मिठाइंया और बच्चों की जहरीली टाफियां सरे आम बेटी बेंची जाती हो जिस देश के डॉक्टर मुर्दे, गुर्दे के व्यापारी और व्यभिचारी हों, जहां दबाइयों के बदले घातक जहर बेंचा जाता हों वहां से भ्रष्टाचार समाप्त करना दिवास्वप्न हैं। एक सर्वे समाचार के अनुसार छः हजार में से मात्र ढाई सौ दबाइयां असली पाई गई हैं। जिस देश में लौंकी को इंजेक्शन लगाकर रातों रात बड़ा कर दिया जाता हो, फलों और सब्जियों को ताजा बनाए रखने के लिए हानिकारक केमिकल का प्रयोग किया जाता हो, जिस देश में नकली बीज, नकली सीमेंट, नकली स्टील नकली कलपुर्जे बनाने के कारखाने संचालित हों, सम्पूर्ण बाजार नकली नोटों से अटा हो वहां से भ्रष्टाचार को कैसे समाप्त किया जा सकता है। आज सारे देश का उपभोक्त भष्टाचार की बलि चढ़ रहा है। जिस देश के मंत्री, सांसद विधायक नेता नोटों के विस्तार पर सोते हों, गायों के खाने का चारा हजम कर जाते है, जिस देश के नेताओं के स्वीस बैंको में करोड़ो रूपए के गुप्त खाते हों, देश की अधिकांश छोटी बड़ी फैक्टरियों जिनके सेयर हों, जिस देश के नेता मंत्री जन हित के कार्यो के लिए जारी राशि में से कमीशन खाते हों, जिस देश के जन प्रतिनिधि में अरबो खरबों के मासिक बन जाते हों उस देश से क्या भ्रष्टाचार को समाप्त करना संभव है?

जिस देश में डाकिया पार्सल से समान गायब कर खाली या भूसा भरे पारसल की डिलेबरी कराते हों जिस देश में टिकट लेकर यात्रा करने पर टी.टी नाराज हो जाता हों, जिस देश में प्राथमिक एफ.आई.आर. लिखाने के लिए पैसे मांगे जाते हों, जिस देश में सेना के हथियार खरीदी में कमीशन खाए जाते हों वहां से भ्रष्टाचार को कतई समाव्त नहीं किया जा सकता है। इस राष्ट्र में ऐसा कोई विभाग नहीं है जहां भ्रष्टाचार ने अपने पैर न पसार रखे हों। भ्रष्टाचार हिंदुस्तान की सारस्वत सच्चाई है। इन तमाम, उदाहरणों तत्थों को हाजिर नाजिर करते हुये हम यह बात पूरी ताकत से कहते हैं कि इस देश से भ्रष्टाचार समाप्त नहीं किया जा सकता है। जय हिन्द, जय भारत। भाषण समाप्ति पर निर्णायक मंडल ने इनके पक्ष में अपना निर्णय सुनाते हुए विजयी घोषित किया, उपस्थित समुदाय में तालियां बजाई भ्रष्टाचार तो अब शिष्टाचार बन गया है इसे कौन समाप्त कर सकता है। कहा और चले गए।

शेर साहब स्वर्ग में

किसी जंगल में एक शेर साहब रहते थे। अब आप सोचेंगे कि शेर को यह 'सम्बोधन क्यों दिया गया। इस सम्बन्ध में आमधारणा है कि जो अपने से ज्यादा ताकतवर, प्रभावशाली आक्रामक और शक्तिशाली होता है। जिनसे किसी न किसी अनिष्ठ की संभावनाएं बनी रहती हैं। उनको उनकी आक्रमकता और प्रभावशीलता के लिए 'साइब' से सम्बोधिरा करते है। शेर साहब बहुत ही हिंसक आक्रमण और खुंखार प्रकृति के थे। सारा जंगल उनकी दहशत में था। इसलिये उन्हें साहब कहा गया है

तो शेर साहब जिधर से गुजरते सन्नाटा छा जाता पक्षी गण शांत हो जाते खरगोश जैसे छोटे-मोटे जीव अपने दबड़ो में दुबक जाते शेर साहब के निकलते ही जंगल के जीवों की चलती-फिरती दुनियां ठहर जाती। जो सामने आता, समझो , उसकी खैर नहीं। शेर साहब उसे तुरन्त मारकर खा जाते, एक दिन ऐसा आया जब शेर जी चल बसे। मृत्यू के बाद यम के दूत उन्हें स्वर्ग ले गए, जहां का ठाठ-बाट बहुत ही अदभुत् था। रन्तजड़ित दैदीप्तमान सिंहासन पर इन्द्रदेव तिष्ठायमान थे। स्वर्ग का ताम-झाम देखकर शेर साहब हतप्रभ रह गए। यमदूत से गुर्राते हुए पूछा ऐ यह तुम मुझे कहां ले आए यमदूत ने कहा स्वर्गलोक। लेकिन तुम मुझे स्वर्ग लोक क्यों लाए हो। इतना सुनते ही इन्द्रदेव अपने रक्तधरों पर मृदुल मुस्कान बिखेरते हुए बोले- जो भी जीव पृथ्वी लोक में रहकर अच्छा कार्य करता है, उसे उसके अच्छे कर्मो के लिए स्वर्ग दिया जाता है। शेर साहब बोले- मैंने तो ऐसा कोई काम किया नहीं, जिसके लिए मुझे स्वर्ग मिले, मैंने तो हमेशा दुसरे जीवों की हत्या की है। उन्हें मारकर खाया है। मुझे तो नर्क मिलना चाहिए तभी इन्द्रदेव बोले- हे पशु श्रेष्ठ पृथ्वी लोक में विचरण करते हुए तुमने एक नेक काम किया हैं उसी नेक काम के बदले तुम्हे स्वर्ग दिया गया है। तुम्हारे इसी एक अच्छे कार्य के बदौलत सम्पूर्ण पाप धुल गए। जरा स्मृति पर जोर डालकर सोचिए-शायद ध्यान आ जाए। क्यों कि हमारे यहां कर्मो के लेखे जोखे में कभी कोई गड़बड़ी नहीं

होती। तभी शेर साहब बोले- हां मुझे ध्यान आ रहा है, एक बार मैंने एक नेता को खाया था। इन्द्रदेव प्रसन्न होते हुए बोले-बस इसी एक नेक काम के कारण तुम्हें स्वर्ग मिला है। जाओ और खुशी-खुशी स्वर्ग के सुख का भोग करों।

जुगाड़ की संस्कृति

हमारा देश संस्कृति प्रधान देश है। सस्कृतियों के मामलों में मामले में यह दुनिया में सबसे महान है, विशिष्ट है। यहां संस्कृतियों की एक लम्बी सूची है। जुगाड़ की संस्कृतियां तो युगों पुरानी हैं द्वापर में शकुनि ने अपने भानजों को राज्य दिलाने के लिये नकली पासे गढ़वा कर ऐसा जुगाड़ लगाया कि पाण्डव बेचारे जंगल की खाक छानने लगे। आज यह जुगाड़ की संस्कृति भारत का नाम विदेशों में भी रोशन कर रही है। एक बार कुछ विदेशी पर्यटक अपने सर्वसुविधा युक्त वाहन के साथ भारत आयें। खाने की अधिकांश सामग्री वे खुद अपने साथ लाते हैं उन्हें पता है कि भारत के राष्ट्र भक्षको ने इसे इतना खाया है कि अब वहां खाने लायक कुछ अच्छा बचा ही नहीं। एक दिन वे खजुराहो गयें। रास्ते में उनके वाहन में कुछ खराबी आ गईं। काफी प्रयास के बाद भी वे उसे ठीक नहीं कर पाये। थक-हार कर वे उसे पास के छोटे से टुटपुंजिये मिस्त्री के पास ले गये। उससे अपने ज्ञान के अनुसार कुछ जोड़-तोड़ की और वाहन स्टार्ट हो गया। उन्होंने जानना चाहा कि क्या गड़बड़ी थी। मिस्त्री को गड़बड़ी का पता होता तो बताता, उसने कहा बस जुगाड़ लगा दिया है। अब आपका वाहन बंद नहीं होगा। भारत भ्रमण के बाद जब वे अपने देश वापस पहुंचे तो वहां पर अपने यहां के सभी कुशल इंजीनियरों को आमंत्रित किया और आदेश दिया कि हमारा वाहन इंडिया में खराब हो गया था, वहां के मिस्त्री ने जुगाड़ लगा दिया, उसके बाद कोई टेकिनकल प्राब्लम नहीं आई। आप इसमें से वह जुगाड़ निकालिये और उसे डिजाइनर कर देश के सभी कहनो में लगा दीजिये ताकि भविष्य में किसी को ऐसी परेशानी का सामना न करना पड़े। इंजीनियरों ने वाहन का पुर्जा-पुर्जा खोल डाला लेकिन जुगाड़ नहीं मिला। एक प्रस्ताव भारत को भेजा गया कि आपके यहां जुगाड़ नाम की एक चीज है जिससे बड़ी से बड़ी समस्याओं का निदान हो जाता है। हम आपके यहां वर्तमान समय में उपलब्ध समस्त जुगाड़ आयात करना चाहते है। प्रत्युत्तर में जवाब दिया गया कि अभी

हम किसी भी कीमत पर जुगाड़ निर्यात करने कि स्थिति में नहीं है क्योंकि अभी हमारी सरकार खुद जुगाड़ पर चल रही है। कौन काबिल है, कौन नाकाबिल यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है, जितना महत्वपूर्ण है जुगाड़ जिसका लग गया तो लग गया। यहां न किसी को जन की चिंता है और न जनतंत्र की चिंता है तो कुर्सीतंत्र की। आज हर कोई किसी न किसी जुगाड़ में है। नौकरी चाहिये तो जुगाड़, मंत्री से मिलना है तो जुगाड़ ऋण लेना है तो जुगाड़ इस जुगाड़ की संस्कृति ने आज पूरे देश में अपने अंगद पांव जमा लिये है।

इस अवसर पर मुझे दुशयंत की गजल का एक शेर याद आ रहा है।

हो गई है पीर पर्वत सी पिघलनी चाहिए, इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिये।

मात्र हगांमा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं है, मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिये।

यहौ काम सरकारी वहौ काम सरकारी

हमारे एक परम मित्र है मा. रामरतन जी, देखने में एकदम भोले-भाले (बाहर से भोले अन्दरन से भाले) एक दिन उनसे किसी सज्जन ने पूछा रामरतन जी एक बार हमारे समझ में नहीं आई आप सरकारी मास्टर है तनख्वाह भी आपको भरपूर मिलती है, फिर आपके यहां का शिक्षा का स्तर अशासकीय विद्यालयों के छात्रों की तुलना में कम क्यों है। इतना सुनते ही मा. रामरतन बोले करके जतन इन सबका कारण है सरकारी काम. समझ में आया की नहीं सज्जन कुछ अचकचाते हुए बोले भाई आपकी यह सरकारी काम वाली बात मेरे पल्ले नहीं पड़ी, जरा खुलकर समझाईये।

ठीक है आप इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझिये हमारे जैसे ही एक शिक्षक थे प्यारेलाल जो बहुत ही समय पावन्द और अपने दायित्व निर्वहन में निष्ठवान थे। उनके घर और विद्यालय के सुगन पथ में वहां के थानेदार का बंगला पड़ता था। प्यारे लाल जी कर्मवीर होने के साथ-साथ वर्दी भीरू भी थे। याने सिपाही और दरोगा को देखकर सकपका जाते थे। जब वे विद्यालय के लिए उनके बंगले सामने से गुजरते तो थानेदार साहब उन्हें बुला लेते और अपने बगिया की कटाई सिंचाई कराते। तब थानेदार साहब यह नहीं जानते थे कि यह महासय शिक्षक हैं एक दिन जब वह वहां से बिना थानेदार के बंगले में प्रवेश किए गुजरेने लगे तो थानेदार ने पुकारा बोले आज बिनाकाम किए कहां भागे जा रहे हो।

इतना सुनते ही प्यारेलाल थोड़ा से ठिठके फिर गिड़गिड़ाते हुए बोले साहब आज जाने दीजिये विद्यालय में बड़े अधिकारी आने वाले हैं। सुनकर थानेदार बोले आप शिक्षक हैं यह पहले क्यों नहीं बताया चुपचाप आकर काम करते रहे।

इतना सुनते ही प्यारेलाल जी बड़े ही सहज भाव से बोले कहता क्या साहब- यहौ काम सरकारी वहौ काम सरकारी सो भइया हमारा भी हाल प्यारेलाल जैसा ही हैं हमे साल भर शैक्षणिक कार्य के अलावा गैर शैक्षणिक कार्यों में, जैसे-जनगडना,

पशुगड़ना, बोटर लिस्ट निर्माण करना, उनके प्रकाशन के पश्चात दावा आपत्ति आमंत्रितकर निरसन संशोधन परिवर्धन करना, परिचय पत्र निर्माण करना, गरीब रेखा का सर्वेक्षण करना चुनाव कराना जैसे काम भी करने पड़ते हैं। यह सब काम भी सरकारी है। इन्हें करना भी जरूरी। अशासकीय शिक्षक इन सारे गैर शैक्षणिक कार्यो से मुक्त रहते हैं

वर्ष गुजर जाता है
यही काम करने में
वक्त दे नहीं पाते
छात्रों को पढ़ाने में

इतना सुनने के पश्चात वह महोदय एक गहरी निःस्वास छोंड़ते हुए बोले क्या? ऐसा कोई नियम नहीं बनाया जा सकता जिसमे शिक्षकों से गैर शैक्षणिक कार्य न करना पड़े नियम बनते तो है पर अमल में नहीं आते। अमल में लाने के लिए आपलोंगों को पहल करनी चाहिए। इतना सुनते ही रामरतन थोड़ा सा झुंझालाते हुये बोले कैसे अमल में लाएं श्रीमान यहौ आदेश सरकारी वहौ आदेश सरकारी इन सब के बीच हमारी स्थिति यह है कि ''हम चाकर रघुबीर के'' सो भइया हमतो वही करेंगे जो हमसे कराया जायेगा। यही हमारी नियति हैं

त्वदीयम् वस्तु गोविन्दं...!

वर्तमान समय में हमारा देश बीमारियों का अजायब घर बन रहा हैं। देश में महामारी तेजी से अपने पैर-पसार रही इन बिमारियों में प्रमुख हैं- हार्ट अटैक, एड्स, टी.बी. ब्लड प्रेसर और सुगर। जिस देश में इतनी सारी असाध्य बीमारियां किलोल कर रही हो, वह बीमारियों का अजायबघर ही तो कहा जायेगा नामाजादी बीमारियों में से एक बीमारी डायबिटीज मुझे भी है। लोकमत के अनुसार यह राजरोग की श्रेणी में आता हैं। जो बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं को हुआ करती थी। अब जब कि राजे रजवाड़े रहे नहीं इसलिए इसके आम-आदमी को अपना शिकार बनाना प्रारम्भ कर दिया है। आज विश्व की अधिकांश आबादी इस रोग की चपेट में है। यह रोग प्रभावित व्यक्ति को बहुत ही निरीह और बेचारा बना देता है।

जब भी किसी के यहां घूमने-घामने जाओ, तो वह अपने प्रेम का इजहार पर्वतों उत्पादित दुग्ध शर्करा मिश्रित पर्णाक से करते हैं। अंग्रेजों की यह बहुमूल्य देन हमारे अतिथि सत्कार का अभिन्न हिस्सा बन गई हैं। अब अतिथेय को स्टेटफार्वड मना तो कर नहीं सकते। कि भाईसाइब हम चाय नहीं पियेगें। क्योंकि हमें डायबिटीज है,सो संकोच प्रदर्शित करते हुये कहना पड़ता है कि भाई साहब चाय-वाय मत बनवाइएगा। अभी घर से पीकर ही चले है। वाह! ऐसा कैसे हो सकता है कि इतने दिन बाद आए हैं। चाय तो पीना ही पडेग़ा उनके इस कठोर आग्रह को स्वीकार करते हुए कहना पड़ता है कि-अच्छा तो आधा कप बनवा लीजिए। वह भी बिना शक्कर की। इतना सुनते ही वह तपाक से कहते हैं कि आपको भोज्य बाही है कि नुक्सा बताने का सिलसिला प्रारम्भ हो जाता है कोई कहेगा बेल और नीम की पत्ती चबाइए। कोई कहेगा करेले का जूस और सब्जी खाइए। कोई मैथी का पाउडर फँकवाएगा। तो कोई चिरांयता का काढ़ा पिलाएगा। इस प्रकार के नुक्सों से एक पूरी डायरी भरी पड़ी हैं।

आजकल सर्दी जुकाम, खांसी-खुर्रा, दमा-श्वास, भगन्दर और बवासीर का इलाज

करने वाले नीम-हकीम भी डायबिटीज विशषज्ञ होने का साइनबोर्ड लगाए बैठे है। एक दिन सब्जी मंडी में करैला खरीदते हुए हमें हमारे एक मित्र प्यारेलाल ने देख लिया। तपाक से बोले-क्या बात है? बरखुरदार करैला, खरीद रहे हो। सुगर हो गई है क्या? यह बहुत ही चोर बीमारी है। यह अंदर ही अंदर शरीर को ऐसे खोखला कर देती है, जैसे देश के नेता देश को कर रहे है। किडनी,हार्ट लीवर, कव काम करना बन्द कर दें कोई ठिकाना नहीं। लोग बैठे-बैठे टन्न बोल जाते हैं।, ज्योति प्रभावित होती है।

इस तरह से डायबिटीज की विभिशिका का बखान करते हुए किसी अच्छे अस्पताल में जाकर डायबिटीज विशेषज्ञ से इलाज करवाने की सलाह दी। प्यारे लाल जी के परामर्श पर अमल करते हुये हम एक नगर के ख्यातनाम उच्चवर्गीय अस्पताल एवं रिसर्च केन्द्र में जा पहुँचें जहां के प्रवेश द्वार पर मोटे-मोटे अक्षरों में लिखा था- त्वदीयम् वस्तु गोविन्दम् तुभ्यमेव समर्पये अस्पताल के अन्दर प्रवेश कर रजिस्ट्रेशन काउन्टर पर पहुंचा जहां रोगियों की इतनी लम्बी लाइन लगी थी, जैसे कि रेलवे के आरक्षण काउन्टर में लगती है नवम्बर आने पर रजिस्ट्रेशन के पचास रुपये चुकाए। त्वदीयम् वस्तु गोंविंद कहा,पर्चा लिया और सुगर रोग विशेषज्ञ डॉक्टर के कक्ष में तैनात यमदूत (दरबान) के पास जाकर अपने क्रम की प्रतीक्षा करने लगा। तभी वहां से हाफ आस्तीन का सफेद कोट पहने हुये एक मैडम जिसको देखकर दरवान खड़ा हो गया बोला। आपको भी खड़े हो जाना चाहिए था। थोड़ी देर बाद सफेद वर्दी से लैश एक सज्जन वहां से गुजरे, मैं खड़ा हो गया। दरबान बोला- आप क्यों खड़े हो गए मैंने समझा यह कोई बड़े डाक्टर साहब होंगे। इसलिए खड़ा हो गया। दरबान बोला- मुझे आपकी समझ पर तरस आती है। जिसे देखकर आप खड़े हुए वह स्वीपर था। यह सफेद रंग और खादी का वस्त्र बहुत ही कन्फ्यूजन क्रियेट करता है। मुझे सचमुच अपनी समझ पर तरस आ रहा था। लगभग एक घंटे की प्रतीक्षा के बाद मेरा नम्बर आया। मैं अन्दर प्रवेश कर डाक्टर साहब की बगल से रखी स्टूल पर बैठ गया। डाक्टर के चेहरे पर डायबीटीज स्पेशलिस्ट होने के भाव स्पष्ट नजर आ रहे थे। मरीज का चेकप करते हुए डाक्टर का दिमाक कम्प्यूटर की मानिन्द, बल्कि उससे भी तेज चलता है। कई बातों पर एक साथ विचार करना पड़ता है। रोग की गंभीरता, रोगी की सम्पन्नता आदि को देखते हुए कौन-कौन सी जांच करवाई जाय. जिस ब्रांड की दवा लिखी जाय, जिसमें अधिक से अधिक कमीशन मिल सकें। इन तीन जांचो में दो ब्ल्ड सुगर की और एक ई.सी.जी. थीं मै ई.सी.जी. कक्ष के काउन्टर पर गया ई.सी.जी. टेस्ट के 100 रुपये जमा किए। त्वदीयम वस्तु गोविन्दम् कहा ई.सी.जी. करवाई, रिपोर्ट ली।

फिर ब्लड टेस्ट के 80 रुपये चुकाए। लदीयम वस्तु गोविन्दम कहा और पुनः डाक्टर से मिलने के लिए गया जहाँ एक दाम्पत्ति बैठा हुआ था। उसे भी सुगर थी। वह बार-बार यही दोहरा रहा था कि-अब मैं नहीं बच सकता, कब सिधार जांऊ कोई भरोसा नहीं, पत्नी समझाती ऐसा अशुभ नहीं कहते। अभी आपको परिवार की अनेक जिम्मेदारियां निभानी है। सुगर से ऐसे जल्दी कोई नहीं मरता। फिर वह मेरी तरफ मुखातिब होते हुए बोली- भाई साहब आपकी कितनी है मैंने कहा फास्टिंग की. 247 और खाने के बाद 336 वह खुश होते हुए पति से बोली, देखिए इनकी सुगर तो आप से दोगुनी-तिगुनी है। जब यह जिन्दा हैं तो आप कैसे मर सकते हैं।

मैंने अस्पताल की व्यवस्था पर संतोष व्यक्त करते हुए दरवान से कहा सारी जांच यही हो जाती हैं। जिस से मरीज कमीशन खोरी से बच जाता है। मेरी इस बात से असहमत होते हुए वह बोला-ऐसा नहीं। जांच का डाक्टरी कमीशन यहां भी निर्धारित हैं पर वह सब कम्पयूटराइज होने के कारण मरीज को पता नहीं चलता मैनें कहा भाई साहब जितने रुपये जांच के लिए लिए जाते हैं इतने ही कम्प्युटराइज रसीद दी जाती हैं फिर डॉक्टर को कमीशन कैसे मिल जाता है। मैंने कहा ना कि सारा सिस्टम कम्पयूराइज्ड है। जिस डॉक्टर के नाम की जांच पर्ची होती है कम्प्यूटर उसके नाम का कमीशन अपने आप उसके खाते में ट्रांसफर कर देता है।

डॉक्टर साहब रिर्पोट देखते हुए बोले- लेबल तो सुगर का बहुत ज्यादा है। अभी तक क्या कर रहे थे? मैंने कहा-नेचुरोपैथी। योगाचार्य बाबा रामदेव का योंगा करता था। प्रतिदिन 6 किलोमीटर घूमने जाता हूं लौकी और करेले की सब्जी खाता हूं फिर मेरी समझ मं यह नहीं आता। कि यह सुगर का लेबल इतना ज्यादा बढ़ कैसे हो गया। डाक्टर साहब इत्मीनान से बोले- होता है, कभी-कभी ऐसा भी होता हैं, कि रोग के प्रम्यक्ष लक्षण और कारण पता नहीं चलते। मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यो-ज्यों दबा हुई। के तर्ज पर मर्ज बढ़ता जाता है। हो सकता है आपके जीन्स से यह रोग आप को हो गया हो। यह भी हो सकता है कि आप का स्वभाव हरी या बरी (शीघ्रता) चिंता व चिंतन का हो।

मर्ज की गम्भीरता को देखते हुए डॉक्टर साहब ने पूरे पर्चे भर दवाइंया लिखी, मेडिकल स्टोर का नाम बताया और एक माह बाद आने को कहा। गूंगा बोले- बहरा सुने, मानें डॉक्टर लिखे और मेडिकल स्टोर वाले पढ़े पर्चा लेकर मैं सुझाए गए मेडिकल स्टोर पर गया। दवाइंया खरीदी। 1600 सौ रूपए का बिल चुका कर जेब खाली की। त्वदीयम वस्तु गोविंद, त्वामामंव समर्पये को प्रणाम किया और घर लौट आया।

स्वप्न समीक्षा संगोष्टि

जानवरों के बारे में तो मुझे पता नहीं किन्तु नर तन धारी मनुस्यों में स्वप्न देखने की प्रवृत्ति होती है। ए रात-दिन स्वप्न देखते रहते हैं। दिन में दिखने वाले स्वप्नों को दिवा स्वप्न और रात मे दिखाई देने वाले स्वपनो को निशा स्वप्न कहते है। स्वप्नों समुद्रिका नाम की पुस्तक में मैनें पढ़ा था कि समय कुसमय देखे गये स्वप्नों का शुभ-अशुभ फल प्राप्त होता है। तुलसी कृत रामचरितमानस में इस तरह चतुर्थ पहर में देखे गए स्वपनों के सच होने के दृष्टांत भरे पड़े हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए नगर के कुछ साहित्यकारों द्वारा एक स्वप्न समीक्षा संगोष्ठी का आयोजन किया, गया कि सप्ताह में एकबार सभी साहित्यकार मिलकर एक निश्चित स्थान में बैठकर सार्वजनिक तौर पर क्रमशः रात्रि के चतुर्थ पहर में देखे गए अपने-अपने स्वप्नों का बखान करेंगे। और शेष लोग स्वप्नों को सुन कर उनके शुभ अशुभ फलों पर परिचर्चा करेंगे और इस पर अपने सुझाव देंगे।

इस क्रम में सर्वप्रथम कृष्णवर्णी काया के धनी बघेली बोली के एक सुविख्यात कवि ने अपना स्वप्न सुनाते हुए कहा कि-इन दिनों मुझे अक्सर गौरवर्णी कमनीय काया वाली अनुपम सुन्दरियों के स्वप्न दिखाई देते हैं एक खूबसूरत सुन्दर सी युवती मेरे सामने आकर मुस्कुराई और बोली हाय। आप पे वारी जाऊ अगर बुरा न मानो तो आप को एक बात बतलाऊं, आप अपना एक प्यारा सा फोटो ग्राफ मुझे दे दीजिए। मैने कहा मेरा फोटो ग्राफ आप क्या करेंगी? वह बोली इसे घर लेजाकर अपने बेड रूम में लगाऊंगी और जब आप की याद सताएगी तब उसे सीने से लगाकर सो जाउंगी, यह कहते हुए वह मेरे सीने से लिपट गई। इससे आगे और कुछ देख पाता कि पत्नी ने आकर जगा दिया। स्वप्न शुभ फल दायी नहीं है। शायद देश के एक वयोवृद्ध नेता ने चौथेपन में रात्रि के चतुर्थ पहर में इस तरह के स्वप्न देखे होंगे जिससे उनका उज्जवल व्यक्तित्व कंलकित हो गया और उनकी अपकीर्ति पूरे देश में फैल गई ऐसे सपनो से बचने के लिए आप अपने शयन कक्ष में ताड़का जैसे रूप रंग वाली कुछ कुंद कुरूप महिलाओं के चित्र लगाएं और

उन्हीं का ध्यान करते हुए सो जाएं कमनीय कंचन कायावाली युवतियों के स्वप्न से छुटकारा मिल जायेगा। अगले क्रम में निरन्तर गहन चिंतन में व्यस्त रहने वाले एक वरिष्ठ साहित्यकार जो वर्तमान में नेताओ जैसा आचरण करने लगे हैं ने अपना स्वप्न सुनाते हुए कहा कि है। बीती रात मैंने स्वप्न देखा की मै चमचे से प्रमोट होकर नेता बन गया हूं पिछली रात मुंख्यमंत्री का ख्वाब देखते हुए पलंग से नीचे गिर गया था। सर में चोंट आई और एक्स-रे करवाने पर दिमांग अपनी जगह से खिसका हुआ निकला। इस नेता स्वप्न के बारे में आप सभी बुद्धि जीवियों की क्या राय है।

सभी उपस्थियों ने सवप्न की अतल गहराई तक जा कर गहन चिंतन किया फिर अपना समेकिल निपकर्ष प्रस्तुत किया। खिसके हुए दिमांग वालों का राजनीति में प्रवेश आज के दौर में आम बात हैं। आप तो पलंग से ही गिरे हैं जब कि आज के नेता चरित्र से गिरने के बाद भी राजनीति में उच्चस्तरीय पद और प्रतिष्ठा प्राप्त की है। फिलहाल आप अपने दिमांग का सी.टी स्केन करा कर यह सुनिष्चित कर लें की अवसर वादिता, मौकापरस्ती और पदलोलूपता की नशे तो प्रभावित नहीं हुई।

अगर सभी नशे चुस्त-चुरूस्त है तो आपका स्वप्न परम शुभ कारी है और आपके अन्दर एक सफल नेता बनने की अपार संभावनाएं है। अगले क्रम में भारीभरकम व्यक्तिव के धनी गौर वर्णी काया वाले एक वयोवृद्ध साहित्यकार जो अक्सर ही समय-समय पर तरह-तरह की नई-नई साहित्य संस्थाओ को जन्म देते रहते है, और स्वयं उसके अध्यक्षपद पर कुण्डली मार कर बैठ जाते है अपने स्वप्न का सिलसिलेवार वर्णन करते हुए कहा कि-मैं स्वप्न में एक 70 वर्षीय एक किंटल वजन का थोक व्यापारी बन गया हूं और कालाबाजारी तथा जमाखोरी का धंधा करने लगा हूं सरकार मेरे इस कार्य को नजर अंदाज कर रही है जिससे मुझे इस कार्य में प्रोत्साहन मिल रहा है। मैने देश के नए और युवा व्यापारियों के लिए कालाबाजारी अकादमी की स्थापना की है। अब उसके कार्यालय हेतु जमीन तलाश रहा हूं। मेरे इस अनोखे स्वप्न के बारे में आप सभी विधवत जनो के क्या विचार है। समिति ने इनके इस स्वप्न पर कई दृष्टि से विचार किया फिर अपना मनतव्य दिया-आपका यह स्वप्न आपके व्यक्तित्व से काफी मेल खाता है। आप एक स्पष्ट वादी और ईमानदारी से बेईमानी करने वाले लोगों में से है। आपने व्यापारियों से संबन्धित जो स्वप्न देखा है उससे यह निष्कर्ष निकला है कि आप जैसे जमाखोर व्यापारियों के कारण ही देश की अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो रही है। किसी क्षेत्र में अनुभव प्राप्त करने के बाद अकादमी खोलने की परम्परा आजकल जोरों पर है। नेक काम में देर मत कीजिए कहीं भी सरकारी भूमि हथिया कर अपनी अकादमी खोल लीजिए और उसका उद्घाटन कीजिए उन्यति के योग हैं। अगली गोष्टी की तिथि निश्चित कर इस गोष्ठी को पूर्णता प्रदान की गई।

बिन पानी सब सून

पानी को लेकर हमारे विद्वान लेखक कवियों और चिन्तकों ने अनेकानेक मुहावरे गढ़े है। जैसे पानी पानी होना, बे पानी आदि। ये सभी मुहावरे तभी तक सार्थक है, जब तक पानी है। हमारे सन्त कवि रहीमदास जी एतिहात के तौर पर पहले ही कह गए है, रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून, तो सो भइया जिस तरह से दिनोंदिन पानी का संकट गहराता जा रहा है, उसे देखते हुए वह दिन दूर नहीं जब बिन पानी सब सून की स्थिति निर्मित हो जाऐगी।

एक दिन मैं अपने बारांडे में बैठा गरूण पुराण पढ़ रहा था। दरअसल मैं यह जानना चाहता था कि आखिर इस पुराण में ऐसा क्या है, जिसे मृतक के परिजन पुरजन बड़े ध्यान, धैर्य और शान्ति के साथ सुनते हैं तभी एक सज्जन का सुभागमन हुआ, आजकल लोगों का शुभागमन ही होता है और जब तक एक-दो कप चाय का हर्जाना नहीं ठोंक देते, तब तक उनका दुरागमन नहीं होता। उनके चेहरे का पानी उतरा हुआ था। उनकी आंखों में उदासी का मरूस्थल किलोल कर रहा था। उनके होंठ सूखे हुए थे, जिसे वह बार-बार जीभ से चाट कर गीला कर रहे थे। उन्हें ऐसा करते देखकर मैं मन ही मन डर गया कि कहीं ये पीने के लिए पानी न मांग ले मैंने तुरन्त पत्नी को चाय बनाने के लिए कहा। आजकल एक गिलास पानी एक कप चाय से ज्यादा महत्वपूर्ण है। सोलह रुपये किलो वाला पानीदार दूध मांगने लगा हूं, जिससे चाय बनाते समय घर का पानी इस्तेमाल न करना पड़े। अब मै आगन्तुओं को पानी की जगह चाय पिलाता हूं आगन्तुक महानुभाव हाव-भाव देखकर ऐसा लग रहा था, मानों वह भी पानी की समस्या के समाधान के लिए भटक रहे हैं, मेरा अनुमान सही निकला, जब उन्होंने आते ही हाथ जोड़कर विनम्रता की मुद्रा में नमस्कार करते हुए पूछा क्यों भाई साहब आपके आसपास कोई पानीदार मकान खाली है क्या? वैसे उनकी अक्खड़ काया को देखकर ऐसा नहीं लगता था।कि विनम्रता उनकी स्वभावगत विशेषता है। मैंने

तपाक से कहा श्रीमान् यहां जितने भी मकान है। वे सब पानीदार लोगो के ही है। इनकी पानीदारी देखनी है। तो सुबह जब नरक पालिका क्षमा करियेगा, नगर पालिका के नल आते है, तो आकर देख लिजिए ऐसी गरदा-मुरदी मचती है, कि पानी भरने के चक्कर में परम आत्मीय लोग भी एक दूसरे का पानी उतारने से बाज नहीं आते। नल घर के खाली बरतनों से अट जाते हैं जिनके नलों में पानी नहीं आता, तो वह गड्ढे की रखवाली करते है महत्वपूर्ण चीजों की गहन रखवाली करना हमारी सांस्कृतिक परम्परा है। उनके अनुरोध को तबज्जों देते हुए मैंने उनसे कहा भाई साहब आप स्वंम एक आलीशान मकान के मालिक हैं। मकान में बोर भी है फिर पानीदार मकान की जरूरत कहां से आ पड़ी?

वह अपनी नाक में बैठे मच्छर को दोनों हथेली की चपत से मारते हुए बड़बड़ाए- लोगों को पीने के लिए पानी के लाले पड़ रहे हैं और यह कमीने खून पी रहे हैं और मैने कहा ये राष्ट्रीय शोषक हैं। इन्हें ऐसा करने से कौन रोक सकता है? इनका चरित्र नेताओं के चरित्र से काफी मेल खाता है। ये नेताओं की तरह उन्मुक्त होकर अपना काम करते हैं। इन पर कोई बंदिश नहीं है। वह मेरी बात से सहमत होते हुए अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोले साहब मकान भी है, बोर भी है पर बोर में पानी ही नहीं है। सारे बोर बेपानी हो गए हैं। बिना मकान के तो रहा जा सकता है पर बिना पानी के पल भर भी रह पाना ना मुमकिन है। अच्छा तो आप ना मुमकिन को मुमकिन करने के लिए पानीदार मकान खोज रहे है।

इसी बीच हमारे एक परम मित्र प्यारेलाल जी आ धमके। घर में प्यारेलाल जी का आना नगर में नए दरोगा के आगमन की तरह होता है। वह जब भी आते है, हड़काते हुए आते हैं। बोले अरे ओ कलम घिस्सू, किताबों के पिस्सू जल्दी से तैयार हो जाओ, मुक्तिधाम चलना है। क्यों किसका रामनाम सत्य हो गया क्या? किसी का सत्य नहीं हुआ वहां भंडारा है। मैने कहा मुक्तिधाम में भंडारा! किस खुशी में कोई मुर्दा जी उठा क्या? वह बोले नहीं

पानी की समस्या के समाधान के लिए वहां अखंड मानस पाठ का आयोजन किया गया था, उसी के समापन समारोह के अवसर पर भंडारा है। पानी की समस्या के समाधान के लिए श्मशान में भंडारा वाली बात मेरी समझ में नहीं आई। मैंने कहा भाई प्यारेलाल जी ये देवी देवताओं का अस्तित्व कहीं खो गया है? जो यहां भूत-प्रेतों को मानस सुनाकर पानी की समस्या का समाधान खोजा जा रहा है। यह तो हमारे अंधविश्वास की पराकाष्ठा है। अभी तक तो पानी के संकट से निपटने के लिए शंकर

जी को पानी में डुबाकर गौरी शंकर सीताराम, पार्वती शिव सीताराम का संकीर्तन करते थे या फिर बजरंग बली के मंन्दिर में जाकर जय हनुमान जय-जय हनुमान, संकट मोचन कृपा निधान की धुन छेड़ते थे, पर ये मुक्तिधाम में मानस पाठ का सुझाव किस महापंडित ने दिया है? इस पर प्यारेलाल जी अपना मौन मुखर करते हुए बोले, देखिये अधिकांश देवी देवता तो आजकल राजनीतिज्ञों के चंगुल में फंसे है। उन्हें उन्हीं की समस्या के समाधान से फुरसत नहीं है। वह आम आदमी की समस्याओं से क्या जूझेंगे। मुख्य मुद्दा है पेयजल संकट का निवारण। वह चाहे देवों से हो, दूत से हो या भूत से हो, होना चाहिए। वरना अगला विश्वयुद्ध यहां पानी के लिए होगा। वह दिन दूर नहीं जब लोग चांदी, सोना,हीरे,जवाहरात लेकर सुरक्षित सफर तय कर लेंगे, उनका कुछ नहीं होगा लेकिन यदि किसी को यह पता चल जाए कि इसके पास एक गिलास पानी है तो उसका मर्डर तक हो सकता है। इसलिए यदि जीवन चाहना है तो रहीम दास जी की अर्द्धाली रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून के मर्म को समझिए पानी जीवन का पर्याय है, इसे व्यर्थ मत गंवाइए, पानी के आसन्न संकट से बचने के लिए एक निवर्तमान विधायक अपने हर भाषण में पानी के संकट से उबरने का जिक्र करते हुए ये चार पंक्तियां जरूर पढ़ा करते थे, जो आज भी प्रासंगिक है।

जीवन का पर्याय है पानी, पानी पानी धार चाहिए।
हमें नर्मदा और सोन के, पानी पर अधिकार चाहिए।।

पागल नेता और डॉक्टर

दाल में तड़का लगा रही पत्नी की चौके से झन्नाटेदार आवाज आयी क्या खोज रहे हैं? आवाज सुनकर मैं गुजरती रेल के पुल सा थरथरा गया। बोला कुछ पुराने चुटकुलों की किताब ढूढ़ रहा हूं। वह बोली क्या कही कोई चुटकुला प्रतियोगिता हैं। यही समझ लो भाग्यवान। अभी आगरा से एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आमंत्रण मिला है उसी कि तैयारी करना है पर उसमें तो सभी लुच्च स्तरीय चुटकुले हैं। मैंने उत्साह पूर्वक कहा आजकल मंचो में इन्हीं की धूम है। अखिल भारतीय कवि का पोस्टर चिपकाये अधिकांश कवि मचों से एक से बढ़कर एक अश्रवणीय, अतिअशिष्ठ, लुच्च स्तरीय चुटकुले सुनाकर अपनी प्रखर प्रतिभा का प्रमाण देते हैं। वह आक्रामक मुद्रा अखितियार करते हुए बोलीं यह नेताओं की तरह जनता को बेवकूफ बनाने की कला आप लोगों ने कहां से सीखी है?

कवि और साहित्यकार तो समाज का सजग प्रहरी है, उसे सामाजिक व्यवस्था से जुड़ी सारगर्भित रचनाएं सुनानी चाहिए, जिससे जनता में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना का प्रसार हो सके। मैनें पत्नी की नसीहत को आत्मसात करते हुये कहा,फिलहाल मुझे तुम्हारा सामाजिक समरसता नहीं चुटकुलों के किताब की जरूरत है। उच्च स्तरीय सारगर्भित कविताएं सुनाकर मुझे अपना और आयोजक का भट्ठा थोड़े ही बैठाना है। वह चुटकुलों की दो-तीन पुस्तकें जो मैंने रेल्वे स्टेशन के बुक स्टाल से टाइम पास करने के लिए यह सोचकर खरीदी थी कि इनमें के कुछ चुटकुलों कों छांटकर उन्हें कविताओं में ढ़ालेंगे जैसा की आजकल के चुटकुलेबाज कवि करते हैं फिर उन्हें मंचो में पढ़कर पैसा वसूलेंगे, लाकर मेरे मेज पर पटकते हुए बोलीं इस बार मैं भी आपके साथ आगरा चलूंगी। अब जब पत्नी का कहा स्वयं भगवान राम नहीं टाल सके और उनके आदेश पर स्वर्ण मृग का शिकार करने के लिए उनके पीछे दौड़ पड़ें थे। तो हम इन्सानों की क्या विसात जो उनके कहे को टाल सकें। कार्यक्रम के निण निर्धारित

समय से पूर्व हम सपत्नीक आगरा पहुंच गये। अब अगर कवि समय से पहले जाये तो वह आयोजक के लिए सिरदर्द बन जाता है और अगर समय पर न पहुंचे तो उसका बी पी हाई हो जाता है। आयोजक ने समय काटने के लिए ताजमहल घुमाने का प्रस्ताव रखा। हमने कहा वह तो कई बार का घूमा हैं, कोई नई जगह ले चलो जो मशहूर हो। वह बोले साहब यहां का पागलखाना बहुत मशहूर है मैंने कहा तो वहीं चलते हैं कवियों के लिए इस से बेहतर जगह और कौन सी हो सकती है। जब आगरा के पागलखाने पहुंचे तो वहां का नजारा बहुत ही अजीबोगरीब था। एक पागल, पागल खाने की उंची दीवार पर चढ़कर इधर से उधर दौड़ रहा था। व्यवस्थापकगण उसे नीचे उतारने के लिए तरह-तरह के उपक्रम कर रहे थे। कोई भरपेट मिठाई खिलाने की बात कर रहा था तो कोई ऐश्वर्याराय से शादी कराने का प्रस्ताव रख रहा था। पर उस पर इन बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। तभी एक दूसरा पागल आकर व्यवस्थापक जी से बोला साहब अगर आप कहें तो मैं इसे दो मिनट में नीचे उतार सकता हूं व्यवस्थापक ने उसे स्वीकृति प्रदान करते हुए कहा उतारो। दूसरा पागल दीवार के नीचे आ गया। और बोला जल्दी से नीचे उतरो नहीं तो दीवाल काट दूंगा। इतना सुनते ही वह तुरंत नीचे आ गया उसके नीचे आते ही लोगों ने कहा हम तुम्हें इतना प्रलोभन दे रहे थे। पर तुम नीचे नहीं उतरे और इसके एक बार करने पर ही धम्म से नीचे आ गये। पहला पागल बोला अरे! साहब इस पागल का क्या भरोसा कहीं सचमुच दीवार काट देता तो...? हम पागलखाने के अंदर पहंचे जहाँ सभी सफेद वस्त्र धारण किये हुए थे। तभी वहाँ एक नए डाक्टर साहब आए जिसे देखकर सभी पागल मुस्कुराए डॉक्टर ने कहा भाई मुझसे ऐसी कौन सी विशेष बात दिखाई दे रही है जो आप लोग हंस रहे हैं पागलों ने तपाक से कहा सच बात तो यह है कि डॉक्टर साहब कि आप हमसें से ही एक लग रहे हैं। अभी डॉक्टर और पगलो के बीच सम्वाद चल ही रहा था। कि अचानक वहा एक स्वेत वस्त्रधारी नेताजी पहुंच जाते हैं, जिन्हें देखकर सभी पागल चुप हो जाते हैं। नेता जी डॉक्टर साहब से अपने आने का सबब बतलाते है। बोले डॉक्टर साहब आज मैं पहली बार अपनी जिन्दगी का एक नेक काम करना चाहता हूं मरणोपरान्त अपना दिमाग किसी पागल को दान करना चाहता हूं इतना सुनते ही डॉक्टर साहब मुस्कुराते हुए बोले हुजूर माईबाप क्यों फालतू की चीज दान करना चाहते हैं आप? अगर आप का दिमाग किसी पागल के लगा दिया जाएगा तो वह भी आप ही की तरह नेता बन जाएगा। चंद सिक्कों के लिए देश को बेचकर खायेगा सत्ता सुन्दरी को वरने के लिए गुण्डों की बारात सजाएगा। देश को फुलझड़ी और मस्ताब कि तरह जलाएगा

फिर आप ही बतलाइए उसे कौन से पागलखाने में कैद किया जायेगा? अरे! यह नेता कहलाना भी क्या कोई गर्व की बात है। कम से कम इन पागलों की अपनी कुछ तो औकात है। ये अपने ही धुन में हंसते हैं इठलाते हैं, आप लोगों की तरह झूठे आश्वासन बांटकर व्यवस्था के गाल में तमाचे तो नहीं लगाते है पागल खाने में इनके रात-दिन एक साथ बीतते हैं लेकिन आप लोगों की तरह ये एक-दूसरे की चड्डी कभी नहीं खींचते है इंसलिए हे! राष्ट्रनंदन अगर दान करना ही है तो रूपये-पैसे दीजिए अन्यथा अपना रास्ता लीजिए इतना सुनते ही नेता जी को आवेश आ गया। वह डॉक्टर साहब को हड़काते हुये बोले तुम्हारी यह औकात हमसे करते हो दिमाग की बात। तुम्हारे तो जरा भी अक्ल नहीं हैं। अरे! जिस दिमाग से हम इतने बड़े देश की सरकार चलाते हैं, अंगूठा छाप होते हुए भी पढ़े-लिखे लोगों के लिए कानून बनाते हैं, उस दिमाग को आप बेकार की चीज बतलाते है। इसके लिए मैं तुम्हें सख्त से सख्त सजा दूंगा। जब सदन की कार्यवाही चल रही होगी तब मैं तुम्हें उसके बीचों-बीच खड़ा कर दूंगा। जहां शुरू होते ही जूतमपैजार खाओगे, वे सुमार लात-घूसों की मार सारी मस्ती उतर जाएगी। तब तुम्हें भारतीय नेताओं की औकात समझ में आयेगीं नेता जी की बात सुनकर डॉक्टर साहब हतप्रभ रह गये, उनके मुंह से अनायास ही निकल पड़ा

'बनाया हमने जिन्हें, रहनुमा जमाने में
उन्हीं ने छोड़ दिए सांप, आशियाने में

...और कलेक्टर साहब नहीं आए

खबर मिली कि विद्यालय में कलेक्टर साहब का दौरा है। खबर मिलते ही संबंधित विद्यालय के प्रधानाध्यापक द्वारा अपने सभी सहयोगियों को फोन से कलेक्टर साहब के आने की सूचना इस हिदायत के साथ दी गई कि कलेक्टर साहब बहुत ही पंचुअल हैं बिलकुल अंग्रजी टाइम से पहुंचते हैं। पांच मिनट की देरी भी नहीं बर्दाश्त करते। सूचना मिलते ही सभी शिक्षक सिर पर पैर रखकर विद्यालय की ओर भागें। जो हमेशा दो-तीन घंटे विलंब से पहुंचते थे वे प्रातः 8 बजे से ही विद्यालय पहुंचकर साफ सफाई में जुट गए।

रद्दी जलाई गई, मकड़ी के जाले साफ किए गए नल के आसपास पानी से भरे गंदे गड्ढे पुरवाए गए। वर्षो से गंदगी से अटे पड़े टायलेटों को 'हरपिक से साफ करवाकर फिनायल छिड़काया गया। किसी भी बच्चे को उसका उपयोग न करने की चेतावनी दी गई। भूलवश एक बच्चे ने ऐसा कर दिया। परिणाम स्वरूप उसे गुरूजी की डांट और मार दोनों सहनी पड़ी बोले अरे! जब तुझे बता दिया गया था कि आज कलेक्टर साहब आ रहे हैं। टायलेट का उपयोग मत करना फिर भी तू नहीं माना। जानते नहीं कलेक्टर साहब बहुत ही सफाईबन्द अधिकारी हैं दीवारों में आदर्श वाक्य लिखे गए नदी- नाले के चार्ट और नक्शे इत्यादि टांगे गए । जिन बच्चों को कभी टाट फट्टी तक नसीब नहीं हुई थी, उनके लिए नई दरी बिछाई गई। मेज में मेजपोस बिछाए गए। नया पेपर वेट रखकर उसके नीचे चार पांच खाली कागज दबाए गए। सूचना पट पर गांव वालों को संबोधित परिसर में गंदगी न करें। दीवारो पर अश्लील शब्द न लिखें, विद्यालय परिसर में शौच इत्यादि न करें। टिप्स दिये गये शिक्षकों को विशेष हिदायत दी गई कि जब तक कलेक्टर साहब आकर चले नहीं जाए सभी शिक्षक शुरू से अंत तक अपनी-अपनी कक्षाओं में रहें। श्यामपट पर कुछ न कुछ लिखकर मिटाते रहे हाथ और कपड़ो में लगी चाक की डस्ट न झाड़े। कलेक्टर साहब किसी भी समय आ

सकते है। माध्यान्ह भोजन में बंटने वाले दाल,चावल,रोटी, सब्जी के नाम अच्छी तरह से रटवा दें और लिखने का अभ्यास करवा दें। कलेक्टर साहब बच्चों से यही सब करवाते हैं। सभी शिक्षक गिनती पहाड़ा और वर्णमाला अच्छी तरह याद कर लें कलेक्टर साहब शिक्षकों से गिनती, पहाड़ व वर्णमाला भी पूछते हैं।

फिर स्वयं सब कक्षाओं में जाकर कलेक्टर साहब का नाम रटवाया और उसका रिहर्लसल करवाते हुए बोले देखो बच्चों जब कलेक्टर साहब आकर तुमसे पूछें कि बताओ में कौन हू? और मेरा नाम क्या है? तो तुम्हें निर्भय होकर जवाब देना है। थोड़ी देर के लिए मान लो मैं कलेक्टर हूं और तुमसे पूछता हूं फिर थोड़ी देर के लिए बाहर गए। फिर कक्षा में प्रवेश करते हुए बोले, बच्चों मुझे पहचानते हो मैं कौन हूं और मेरा नाम क्या है बच्चे बोले सर आप हेड मास्टर हैं और आपका नाम अवधकिशोर हैं उत्तर सुन कर प्रधानाध्यापक महोदय बच्चों पर झल्लाए बोले अरे मुर्खो मेरा नहीं कलेक्टर साहब का नाम बताना है। सबको भली भांति समझा बुझाकर कार्यालय में बैठकर कलेक्टर साहब के आने की प्रतीक्षा करने लगे। बीच-बीच में शिक्षकों को कुछ न कुछ पढ़ाते रहने की हिदायत दे आते। चूंकि विद्यालय मेन रोड का है, किसी भी वाहन के आने की आहट मिलती तो उनकी स्थिति 'हर आहट से समझा ओ आय गयो रे' जैसी हो जाती। कुर्सी से उठकर तुरन्त बाहर आते, आने वाले वाहनों का देखकर फिर शिक्षकों से कहते घबराने की जरूरत नहीं हैं कलेक्टर साहब की गाड़ी नहीं है। एक मैडम ने आकर पूछा सर दो बज गए हैं हाफ टाइम कर दें। वह उत्तेजित होते हुए बोले कोई हाफ वाफ टाइम नहीं होगा। कलेक्टर साहब आ गए तो मुश्किल हो जाएगी। फिर एक दूसरी मैडम आकर बोलीं चार बज रहे हैं सर दूध खराब हो जाएगा। चाय बना लें। वह बोले भैंस का प्योर दूध है। अपने सामने दुहवाकर ले आयां हूं कलेक्टर साहब के चाय के लिए फिर बोले अच्छा एक कप निकालकर शेष दूध की बना लो। चाय बनकर आ गई। एक घूंट पीते फिर कहते चार बज गए बताओ कलेक्टर साहब अभी तक नहीं आए। पूरा दिन ऐसे ही बीत गया।

एक मैडम ने दूसरे मैडम से कहा अच्छा हुआ कलेक्टर साहब के आने की सूचना से स्कूल की साफ सफाई हो गई। जब पांच बज गए कलेक्टर साहब नहीं आए तो हेडमास्टर साहब बोले चलो अंगूर, संतरा, रसगुल्ला बर्फी हमीं लोग खा लें, नहीं तो खराब हो जाएंगे एक शिक्षक ने चुटकी लेते हुए बोला काश! इसी तरह कलेक्टर साहब के आने की सूचना रोज आए और कलेक्टर साहब न आए तो कितना अच्छा हो।

तमीज, दुम और दुमदार अधिकारी

हमारे देश की कार्यालयीन व्यवस्था त्रिस्तरीय हैं। जिसमें साहब बाबू और चपरासी आते है। ये तीनों कार्यालय के प्राणतत्व हैं बिना इनके किसी भी कार्यालय की कल्पना अकल्पनीय है। कार्यालय में इन तीनों की अपनी-अपनी हैसियत है। इनमें से किसी एक को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। बिना चपरासी से मुलाकात किए बाबू के पास, बिना बाबू से मिले साहब के पास तक फटक पाना दिवास्वप्न है। इनसे मिलने के अपने तौर तरीके हैं। ये तरीके या तो आपको अनुभवी कर्मचारी जिसका अक्सर कार्यालय से साबका पड़ता रहता है, बता देगा या दो चार बार की अदमपैरवी से आप स्वतः सीख जायेगे,

इन तौर तरीकों में सबसे अहम भूमिका तमीज की होती है। अगर आपको तमीज के साथ मिलने की कला आ गई,तो समझो आपके सारे काम निर्विघ्न संपन्न हो जाएंगे। तमीज के साथ मिलते ही चपरासी आपको सलाम ठोकेगा। बाअदब बाबू के पास ले जाएगा। बाबू तमीज प्राप्त करते ही, आपकी फाइल यह कहते हुए साहब के समक्ष प्रस्तुत कर देगा, कि साहब यह बहुत ही उदारमना इंसान है। इनके पास मिलने की अच्छी तमीज है। साहब आपकी तमीज को अपनी जेब के हवाले करते हुए तत्काल आपके सारे काम संपन्न कर देंगे। आपकी कुशल क्षेम पूंछेगे। आपको पानी पिलवाएंगे। आपको आपकी दी गई तमीज के लिए धन्यवाद देंगे। हमेशा तमीज के साथ मिलते रहने की बात कहेंगे।

तमीज हिन्दुस्तान के कार्यालयों की मुख्य विशेषता है, मुझे भी इसका कटु अनुभव है। तमीज के साथ मिलने पर ये सारे अधिकारी ऐसी नम्रता, ऐसी शालीनता और गंभीरता बरतते है, कि बार-बार इनसे तमीज के साथ मिलने को जी चाहता है। ऐसे तमीज बाज अधिकारी, व्यभिचारी और शराबी परम मिलनसार और मृदभाषी होते हैं। आचरण की दृष्टि से लगभग सभी कार्यालय मार्क्सवादी होते है, सबके साथ

समानता का व्यवहार करते हैं। पुलिस वालों की तरह ए भी अपने बाप, भाइयों को नहीं बक्सते तमीज प्रत्येक कार्यालय की सास्वत सच्चाई है। इस मामले में ऐ सब आपस में मौसेरे भाई है। किसी भी आफिस कार्यालय में मुख्य रूप से दो स्पिसीज के अधिकारी पाए जाते हैं। एक दमदार अधिकारी और दूसरे दुमदार अधिकारी। पहले प्रकार के अधिकारीयों में ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठ के तत्व विशेष रूप से विद्यमान रहते है। ये अपने दम खम पर आपके काम की नजाकत को देखते हुए स्वतः संपन्न कर देते हैं। बाबू नाम का नागवंशी जीव अपना फन उठाने की जुर्रत नहीं कर सकता। किन्तु हवा पानी में आए बदलाव के कारण ऐसे अधिकारियों की प्रजाति लुप्त होती जा रही हैं ठीक वैसे ही जैसे भारतीय जंगलो में टाईगर की प्रजाति कभी-कभी प्रजाती में कुद रूढ़ि किस्म के ईमानदार कर्मचारी निकल आते है,जो नाम तो तमीज के तजब्बों देते हैं। न काम को। ये आज नहीं कल-कल नहीं परसों का पहाड़ा पड़ते हुए आपके राई जैसे जैसे काम को पहाड़ जैसा बना देते है। ये तो थी दमदार अधिकारियों की प्रभुता। अब आपका परिचय दमदार अधिकारियों की प्रजाति से करवाते है। वर्तमान समय मे लगभग इसी प्रजाति के अधिकारी अधिकांश कार्यालयों में पाए जाते हैं। तमीज इनकी प्रथम प्राथमिकता है। तमीज इनके जीवन का मोटो है। तमीज का आदान प्रदान इनका लक्ष्य हैं अगर कभी पकड़े गए तो तमीज देकर छूट जाते हैं कुछ विभाग ऐसे भी हैं जो तमीजबाज अधिकारियों को पकड़ने के लिए बनाए गए है। एन्टीकरेप्सन लेकिन ए भी उनसे तमीज प्राप्त कर उन्हें बक्स देते हैं। वैसे इन दुमदार अधिकारियों का तमीज लेन देन से कोई सीधा सरोकार नहीं होता। इनके आगे पीछे दलाली के बाइरस से संक्रमित कुछ मातहत, कर्मचारी ऐसे मड़राते रहते हैं। जैसे उच्च ओहदा प्राप्त नेता मंत्रियों के आगे पीछे चाटूकार चम्मचे। ये अधिकारियों के यश मैन होते हैं। ये अधिकारी के पीछे दुम की तरह लगे रहते है। अधिकारी जहां भी जाएगा ऐ उनके पीछे-पीछे लगे रहते है। ऐसे लोग ही अधिकारी की दुम की श्रेणी में आते हैं। ऐसे लोगों से सम्ब्ध अधिकारी ही दुमदार अधिकारी कहलाते है। यथा दुम हिलाना, दुम दबाकर भागना। ये दोनों की मुहापरे कार्यालयीन व्यवस्था में सटीक बैठते हैं। जो कर्मचारी तमीज के साथ मिलते हैं, उनके आगे अधिकारी दुम हिलाने लगते हैं। जो बिना तमीज के मिलने की कोशिश करते है, उसे उसे ऐसा हड़काया जाता है कि दुम दबाकर भागने में ही वह अपनी भलाई समझता है। दमदार अधिकारी के हर काम के लिए दुम पर निर्भर रहते हैं। तमीज के साथ अधिकारियों को मिलवाना दुम की जवाबदारी हैं अगर कोई बिना तमीज के अपना काम करके निकल गया, तो दुम के द्वारा अधिकारी को सावधान किया जाएगा कि साहब अमुख व्यक्ति बिना तमीज के अपना काम करा ले

गये। इसे तमीज की भाषा सिखलाना आवश्यक है। ऐसे दुमदार अधिकारियों को ध्यान काम और काम की गुणवक्ता पर कम और तमीज पर अधिक रहता है। इस सम्बन्ध में इनका कहना है कि—

जो तमीज के साथ नहीं मिलते
हम उनसे दोस्ती नहीं करते।

शिक्षक तेरे कितने नाम

जैसे-जैसे शिक्षक दिवस का समय नियराने लगता है, वैसे-वैसे शिक्षकों के प्रति समाज की कुम्भकरणी नींद में सोई आस्था जाग्रत होने लगती है वह सहसा शिक्षको के प्रति निष्ठावान हो उठते है। शिक्षकों को देखते ही समाज के जागरूक तपकों के प्राणी चेहरे पर बरबस मुस्कान लाते हुये दोनो हाथ जोड़कर शरीर को घुटनोतक मोड़कर अभिवादन करने लगते है। शिक्षक दिवस एक ऐसा दिवस है जो दुनिया में भारत को छोड़ कर और कहीं नहीं मनाया जाता।

भारत में इस पवित्र दिन को बहुधा समाज के वे महानुभाव सिरकत करते दिखाई देते हैं जिन्हें शिक्षकों की दुर्गति करने का श्रेय प्राप्त है। का श्रेय प्राप्त है। जो शिक्षको की आलोचना करने के पक्षधर है। बहुधा ऐसे समारोह में वह अपनी निकृष्ठ क्षमा की जिएगा श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए अवश्य पधारते हैं। संभवतह शिक्षक दिवस जैसे सम्मेलनों को समारोह के नाम से इसलिए पुकारा जाता है कि इस दिन वर्षों से सताए गए शिक्षकों की कराहती आत्मा को शांति मिल सके प्रतिपक्ष के राष्ट्रधीश्वर सत्ता पक्ष द्वारा शिक्षको के ऊपर हो रही ज्यादतियों का भूल जाते हैं। फिर भी मुझे यह देखकर खुशी होती है कि शिक्षकों की दुर्गति के लिए सबसे ज्यादा जिम्मेदार हस्तियां सहसा शिक्षकों के प्रति भाषणों में अविंसंवेदन शील हो जाती हैं। शिक्षकों की कमी पर पी.एच.डी. कर रहे एक शोधर्थी को शिक्षक दिवस समारोह में उपस्थित देखकर मैंने उनसे पूछा- क्यों भाई आप यहां कैसे आ पहुंचे इस पर वह तपाक से बोले मैं छिन्द्राजवेशी प्रकृति का जींव हूं मै यहां अपनी मर्जी से नहीं आया अपितु आज के समारोह की अध्यक्षता के लिए ससम्मान बुलाया गया हूं। कमोवेश शिक्षक के जीवन में ऐसे खुशनुमा पल वर्ष मे दो बार आते हैं एक तो 5 सितम्बर को जब इन्हे (गुरूर ब्रह्मा गुरू विष्णु गुरूर देवो महेश्वरा) की उपाधि से उपाधित किया जाता है दूसरे जब जब परीक्षा का मौसम आता है। जो छात्र वर्ष भर गुरू जी से सीधे मुह बात नहीं करते, कक्षा में पढ़ाई के समय पीछे से चाक के टुकड़े फेककर उनकी खिल्ली उड़ाते हैं।

वही छात्र परीक्षा के समय प्रणाम गुरू जी कह कर उन्हें अविभूत कर देते हैं। गुरू जी छात्र समुदाय के इस अप्रावसिव आचरण को देख कर हथेली में रखी वर्कके समान पिघल जाते हैं। उन्हें अपना जनम सार्थक लगने लगता है। उन्हें लगता है काश हर दिन पांच सितम्बर होता और परीक्षाऐं पूरे वर्ष भर चली तो कितना अच्छा होता। इस देश में कभी नेता दिवस अभिनेता दिवस डाक्टर दिवस, मंत्री और मनिष्टर दिवस नहीं मनाया जाता क्योंकि ए पैदायसी सबल माने जाते हैं। दिवस तो निर्बल का ही मनाया जाता है। जैसे- महिला दिवस शिक्षक दिवस भला हो डॉ. राधा कृष्णन का जिन्होने शिक्षक पद से राष्ट्रपति पद तक का सफर तय किया और अपनी सारी उपलब्धियां शिक्षक की झोली में डाल दी। अपने जन्म दिन को उनका नाम देकर उन्हें कृतकृत्य कर दिया।

शासन तंत्र नितप्रति नए-यथा-शिक्षक, शिक्षाकर्मी, संविदा शिक्षक और गुरूजी देकर शिक्षक के विराट स्वरूप को खंड-खंड करने में आमादा है। कभी राष्ट्रनिर्माता की संज्ञा दी जाती है तो कभी राष्ट्र ऋषि के नाम से सम्बोधित किया जाता है। शिक्षक इन नामों और उपाधियों के बीच त्रिशंकु की तरह सटक रहे है। शिक्षकों की इतनी प्रजातियां शायद ही कही और पाई जाती हों अगर डाँ राधाकृष्णन आज जीवित होते तो वह शिक्षकों की इस परमगति को देखकर कितना खुश होते।

खैर छोड़िये इस प्रकरण को यही पूर्ण करते हैं और शिक्षक दिवस की कार्ययोजना की ओर बढ़ते हैं तो साहब 5 सितम्बर को छात्र-छात्राओं की ओर से एक जलसा मनाया जाता है। मनाया क्या मनवाया जाता है। इसदिन वर्षो से धूल खाई डॉ. राधाकृष्णन की तस्वीर को दीवाल से उतारकर टेबिल में गुलदस्तो के बीच सजाकर माल्यार्पण किया जाता है फिर कुछ शिष्ठ-विशिष्ठ शिक्षकों को तलाश कर उन्हें माला पहनाकर शाल-श्री फल भेंट किया जाता है। सम्मानित किये जाने वाले शिक्षकों का चयन कार्यक्रम के आयोजक करते हैं इससे मधुर सम्बन्धों को योग्यता से ज्यादा महत्व दिया जाता है। मधुर सम्बन्ध ही ऐसे सम्मानो की जड़ होते है। सम्मानित शिक्षक सम्मानकर्ताओं का शूक्रियादा करते हैं। इसके पश्चात शुरू होता है उपस्थि आंगतुकों द्वारा उनकी मति अनुसार शिक्षकों के प्रति भावनाओं के अभिव्यक्ति का सिलसिला। शिक्षक को तरह-तरह की उपमाओं, संज्ञाओं और विशेषणों से नमाजा जाता है। सबसे अंत में कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे एक जननिष्ट महानुभाव ने अपना भाषण तालियों की गड़गड़ाहट के बीच पूरा किया। उसका भाषण टी.वी. सीरियल के प्रववनी संत के द्वारा दिये गये रामायाण के भावप्रवण प्रवचन से कम नहीं था। वह अपनी पूरी धुर्तता

के साथ लोगों की आंखों में धूल झोंक रहे थे। वह शिक्षकों के प्रति अपने उदगार उडेलते हुए बोले- भाइयों इस सृष्टि में अगर कोई महान है तो वह मात्र शिक्षक है वह दुनियां के सभी प्राणियों से श्रेष्ठ है, विशिष्ठ हैं इसमें विश्वामित्र सी दक्षता और वशिष्ट सा तेज होता है। इसका हमारे समाज से अत्यंत गहरा नाता हैं। यह हमारे बच्चों को पढ़ाता है। लिखवाता है, शून्य में ज्ञान भरने के काम आता है। अगर देश गुलशन है तो यह उसका माली है। इसने दुनिया में भगवान से भी उंची जगह पाली है। ठीक तभी सामने बैठे हुए एक सज्जन अकड़कर खड़े हो गए और तमतमाकर बोले श्रीमान आप का सारा भाषण जाली है क्योंकि हमारे देश में ऐसा नहीं होता। यहाँ राष्ट्र बनाने वाले से राष्ट्र लूटने वाला ज्यादा बड़ा होता है।

शिक्षक जीवन हाय तुम्हारा यही करिश्मा
हाथों में है चाक और आंखो में चश्मा।।

लक्ष्मी जी चपला हैं चंचला हैं

वैसे तो कमल आसनी उलूक वाहिनी अर्थात उल्लू जिनका वाहन है वह धन-वैभव ऐश्वर्य और श्री की देवी लक्ष्मी चपला है, चंचला है कहीं भी स्थिर होकर नहीं रहती। गति ही उनका जीवन स्वभाव है। कोई भी तीसमारखां उन्हें बंदी बनाकर नहीं रख सकता। भूत और वर्तमान इसके साथी हैं कि जब-जब जिस किसी ने इन्हें बांधने या अपनी तिजोरी में कैद करके रखने का प्रयास किया है, वह अधोगति को प्राप्त हुए हैं उनके सम्मुख मुख मण्डल पर पर कालिख पुती है उनका चरित्र कलंकित हुआ है।

कई नेता, मंत्री और उच्च पद प्रतिष्ठित, स्थापित कर्मचारी इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। जब इनके द्वारा लोककल्याण के लिए भावना में निकली कमल आसना कमला को काली कमाई के रूप में अर्जित कर अपनी तिजोरियों में कैद किया गया हैं। उनके यहां लोकायुक्त के छापे पड़े और इस छापामारी में करोड़ो रूपये की काली समपत्ति बरामद हुई। अभी हाल ही में बाणसागर घोटाले में फंसे अधिकारियों के यहां राज्य अर्थिक अपराध अन्वेषण व्यूरो ने छापा मारा करोड़ो की काली कमाई उजागर हुई। इसी प्रकार इंदौर विकास प्रधिकरण के सहायक संपदा अधिकारी के यहां से लोकायुक्त ने करोड़ो रूपये की चल अचल समपत्ति उजागर की । ऐसे कितने ही लक्ष्मी लोलुप लोग हैं। जिनके द्वारा चलायमान चंचला लक्ष्मी को बंधक बनाकर तिजोरी में कैद किया गया। पकड़े गए, कलंकित हुए सारा नाम मिट्टी में मिल गया। पकड़े जाने के भय से इधर-उधर गुप्त कंदराओं में सर छिपाने की जगह तलाश रहें हैं। देशव्यापी भ्रष्टाचार का आलम यह है कि लोक कल्याण कारी लक्ष्मी चंद सत्तापतियों के वंदनी बनी छींक रही हैं। और इसके बल पर लक्ष्मीपति बने सत्तेश्वर जनता दरबार में धौस जमा रहे हैं।

'बंदी बनी है लक्ष्मी, नीच-कपट के द्वार
भ्रष्टापतियों की यहां,महिमा अपरम्पार।।

जब -जब देश के जमाखोर, मुनाफाखोर, भ्रष्ट्राधीश्वरों द्वारा अपनी कलंकित काली-कमाई बढ़ाई गई है। तब-तब देश की अर्थवस्था लड़खड़ाई हैं जब तक लक्ष्मी स्वछंद

है, खुली है तब तक देश के प्रगति की रफ्तार बढ़ी है। खुली और स्वछंद चंचल लक्ष्मी ने देश और देशवासियों का पोषण किया है। संपदा बढ़ाई है। प्रतिभाओं का पलायन रुका है। तिजोरियों में कैद किए जाने पर अपने चंचला स्वरूप से उसकी सारी संचित संपदा नष्ट करकें उन्हें कांति हीन, श्री हीन करके पराभाव और कलंक के दल-दल में झोंका है। अनैतिकता, अपंगता और अशांति किलोल करती है। दोहरे चरित्र वाले इन दौलतखोरों ने देश को पतन और ह्रास के गहरे खड्डे में 'धकेला है। ये वेदना कहें भी तो किससे।

किससे करैं शिकायतें, बहरों का है गांव।
डटे हुए जल्लाद हैं, छाती पर धर पांव।।'

मेरे एक मित्र हैं पहले वह निहायत ईमानदार, परोपकारी, परसेवाभावी, दयालू और उदार थे। जब तक वह दो चार दीन-हीनों का उद्धार न कर लेते, तब तक उनका खाना हजम न होता। लेकिन इधर कुछ दिनों से वह नेताओं जैसा आचरण करने लगे हैं। लोगों को झांसा देना, लोगों को आपस में लड़ाकर अपना उल्लू सीधा करना उनका शगल है। पता नहीं किस असुंष्ट अतृप्त नेता की भटकती आत्मा उनके अंदर प्रवेश कर गई है। वह दौलत के पीछे लट्ठ लिए दौड़ते हैं ऐन-केन प्रकारेण लक्ष्मी प्राप्ति की कामना में दिन में कोल्हू के बैल की तरह जुटे रहते हैं और रात में उल्लू की तरह सक्रिय। उनकी इस हरकत को देख मैने कहा- भइए पैसों के लिए क्यों रात भर उल्लूओं की तरह जागते रहते हो,वह खींसे निपोरते हुए बोले- हां मै उल्लू हूं और निरा उल्लू ही बना रहना चाहता हूं। ताकि धन की देवी लक्ष्मी जी मेरे ऊपर सवारी करें और माला-माल हो जांऊ। एक दिन उनके यहां छापा पड़ा, लोकायुक्त वाले सरी जमा पूंजी जप्त कर ले गए। मैने कहा ऐ सब क्या हैं वह बोले लक्ष्मी जी चपला है चंचला है, मुझे छोड़कर चली गई। जाते-जाते कंगाल कर गई।

गांधी जयंती पर भाषण गोष्ठी

नगर की एक नवोदित राष्ट्र उत्थान-समिति द्वारा राष्ट्रपिता महात्मागांधी के जन्म दिवस पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया था विषय था गांधी जी की प्रसंगिकता गोष्ठी में भाषण देने के लिये विविध वर्गो के लोगो को आमंत्रित किया गया था। जिसमें उच्चपद प्राप्त सरकारी मोहकमों के अधिकारी कर्मचारी भी उपस्थित थे। जिस प्रकार राजनीति में नेता गण अपनी मदर पार्टी से असंतुष्ट होकर अपने लिए एक नई पार्टी गढ़ लेते है, उसी प्रकार कुछ अतिमहत्वाकांक्षी अपनी आत्म तुष्टि के लिये नया संगठन खड़ा कर लेते हैं।

इस आयोजन में मेरे छिद्राणवेषी मित्र भी आमंत्रित थे जिनका काम हर-भले-बुरे कार्याक्रमों की कमियाँ उजागर करना था। इनकी प्रकृति उन नेताओं की तरह होगी है जो पार्टी से निकाले जाने पर पार्टी की बुराइयों और कमियों का पहाड़ा पड़ते रहते हैं। उन्होने मुझसे भी चलने का अनुरोध किया। मैने कहा भइये ए आमंत्रितो का कार्यक्रम है। मुझ अनामंत्रितो का नहीं हैं। गांधी जी की छाया चित्र पर माला चढ़ाई हाथजोड़कर प्रणाम किया और अपने अध्क्षीय आंसदी पर आसीन हो गए तभी आयेजक की नजर मेरे ऊपर पड़ी उन्होने मुझे विशिष्ठ अतिथि बना दिया। किसी भी कार्यक्रम में विशिष्ठ अतिथि की स्थिति बिना बुलाए मेहमान की तरह होती है। प्रथम वक्ता के रूप में भारी-भरकम व्यक्तिव के धनी दीक्षित जी मल्टीपरपज वक्ता हैं। वह गांधी, नेहरू, विनोवा, शास्त्री टैगोर, तिलक अम्बेडकर और ज्योतिवा फुले पर समान रूप से धारा प्रवाह बोल लेते हैं। देश के सभी राष्ट्रीय व्यक्तियों और पार्टियों पर इनकी समान आस्था है। वह भाइप के सामने आए और गुरू-गंभीर-वाणी में भाषण देना प्रारम्भ किया सज्जनों और देवियों (हांलांकि वहां पर एक भी देवी नहीं थी। आज हम सब यहां ऐसे महापुरूष की जयंती मनाने के लिये इकटठे हुये हैं जो सच्चे अर्थो में महान थे। महान ही नहीं अपितु अतिमहान थे। अगर वह माहन न होने तो दुनिया वाले उनकी जयंती क्यों मनाते। मंत्री महोदय ने वर्तमान माह अक्टूबर 2009 को स्वच्छ माह घोषित

किया है क्यों कि गांधी जी सफाई पसंद महामानव थे वह हर चीज की सफाई स्वयं करते थे। मंत्री जी ने सफाई माह घोषित कर उनके प्रति अपनी निष्ठा जताई है। वर्षो की गंदगी को मात्र माह भर में दूर करने की बात कही है।

बहुत से लोग अपने-अपने देश में महान होते है। लेकिन गांधी जी उन महानों में से थे जो भारत के बाहर भी महान थे। दुनिंया में उनकी महानता का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि अपने देश से पहले विदेशियों ने उनपर फिल्म बनाई। यह काम भारतीयों के लिये गौरव की बात लगती। गांधी जी इसलिए भी महान थें क्योंकि उनकी आस्था नीची जातियों के प्रति भी थी। उनकी इस जाति गत आस्था ने उन्हें भगवान बना दिया वह नीची जातियों के लिए भगवान थे। हम रूढ़िग्रस्त परम्परा वादी, वर्णव्यवस्था पर आस्था रखने वाले लोग, जिन्हें आज भी नीच और अछूत समझते हैं, उन अपावनों को उन्होने हरिजनं की शुभ संज्ञा देकर पावन बनाया है। हमें ऐसी महान आत्मा को अंतरआत्मा से प्रमाण करना चाहिए अगर हम गांधी जी को याद करना चाहते है। तो हमें हरिजनों को हरिजन बना के रखना होगा। जब तक देश में हरिजन रहेंगे गांधी जी श्रद्धा के साथ याद किये जाते रहेंगे। यही उनके प्रति हमारी सच्ची श्रंद्धांजलि होगी। इस पर लोगों ने खूब तालियां बजाई। अगले वक्ता के रूप में बकुलवर्णी खादी का कुर्ता- पायजामा धारण किये एक उन्तोदर उदर वाले नेता जी आए गांधी जी की प्रतिमा को प्रणाम किया गांधी जी अमर रहें। का नारा लगाया फिर चेहरे पर गंभीर भाव लाते हुये बोले- आज हम सब गांधी जी का पावन स्मरण करने के लिए उपस्थित हुये है लेकिन हमें बेहद खेद है कि यहां उपस्थित सारे लोग अप्रसांशिक हैं। गांधी जी खादी पहनते थे। लेकिन मुझे छोड़कर कोई भी यहां खादी पहन कर नहीं आया। यह गांधी जी के सिद्धांतो की घोर अवमानना है। कम से कम उस सावरमती के संत के प्रति साल में एक दिन खादी पहन कर अपनी आस्था का प्रदर्शन तो कर ही सकते है। गांधीजी सात्विक आहार-विहार वाले राष्ट्रनेता थे, लेकिन मुझे यह कहते हुये शर्म आ रही है कि हमारे देश के वर्तमान अधिकांश नेता सुरा-सुन्दरी प्रेमी है। अगर गांधी जी यहां मौजूद होते तो हमारे इस परम असमाजिक कृत्यों को देखकर कितना रूष्ट होते आज महान हिंसा हो रही है। यह सब के लिये सामूहिक चिंता का विषय है। ऐसी हिंसात्मक फिजा में गांधी जी सबसे ज्यादा अप्रसांगिक हो जाते है। गांधी जी सत्य और अहिंसा के अनुयाई थे लेकिन आज दुनिया से सत्य नेताओं के अंदर से चरित्र की तरह दूर और भ्रष्टाचार की तरह हिंसा के करीब आता जा रहा हैं। आज अमेरिका सहित दुनिया का हर देश आंतकी हिंसा से भयभीत हैं। पहले अपने आपको दुनिया का दादा समझने वाला तानासाही मुल्क अमेरिका नहीं डरता था किंतु जब से उसके

ऊपर आंतकी हमला हुआ है तब से वह भी आंतकी हिंसा से डरने लगा है आज गांधी जी अमेरिका जैसे मुल्क के लिये भी अप्रसांगिक हो गए है। यह हमारे देश के लिए गौरव की बात है।

नेता जी के इस दार्शनिक व्कात्वय को सुनकर लोग हतप्रभ थे और मुझे हंसी आ रही थी। मुझे लग रहा था कि-इस कालिदास के बंसज, अल्क के तहसीलदार नेता को यातो अप्रसंगिकता का अर्थ नहीं मालूम या यह अतिभावुकता में आकर ऐसा बोल रहा है। क्यों कि अतिउत्साह, अतिक्रोध और अतिभावुकता मे आकर अक्सर व्यक्ति अपना विवेक खो देता है, और दीवाना होकर अनाप,सनाप बोलने लगता है। हमारे देश के नेता अति स्वार्थी विवेकहीन और बकवासी हैं,तभी तो वह जनता को भेड़-बकरी और पशुओं की संज्ञा दे डालते है। ये स्वतंत्र भारत के स्वतंत्रत नेता है इनका कोई क्या कर सकता है। अब भाषण देने की बारी एक पुलिस के अधिकारी की थी। उन्होने कड़कदार हड़काऊ,पुलिसिया अंदाज में बोलना शुरू किया गांधी जी परम देश भक्त और जुझारू आदमी थे। वह देश की आजादी और जनहित में कई बार जेल गए। जेल की कठोर यातनाएं सहीं भूखे रहे, उपवास किया। अंग्रजो की गलत नीतियों के खिलाफ सत्याग्रह छेड़ा लेकिन आजकल के नेता इतने निठल्ले है कि-देश और जनहित में तो क्या बड़े-बड़े गुनाह और रिकार्डतोड़ आर्थिक घोटाले करने के बाद रंगे हाथों पकड़े जाने के बाद भी जेल जाने से कतराते हैं। अगर जनता और विरोधी दलों के नेताओं की चिल्लापों के कारण जेल पहुंच भी गए तो वहां फाइफस्टार होटलों जैसी सुविधाओं की मांग करते है। मना करने पर सस्पेंड करवा देने, वरदी उतरवालेने की धमकी देते है। गांधी जी की कथनी-करनी में एका था। आज कल के नेता स्वांगी है। दिखते कुछ और कहते कुछ और एवं करते कुछ और है गांधी जी त्यागी पुरूष और थे। सत्य के पुजारी थे। लेकिन आज के नेता बिकाऊ हैं विकाऊ पन इनकी मूल प्रवृत्ति है। धन और स्वार्थ के वसीभूत होकर ए अपने आप को होल सेल बेंचने के लिए तैयार रहते हैं। बूढ़ी वेश्या की तरह अपनी सार्थकता खो चुके इन नेताओं की आस्था न जन से है न जनतंत्र से, सत्ता सुन्दरी के आगोश में किलोल करना ही इनकी नियति है। इनका अधम शरीर छल, कपट,झूठ फरेब और धूर्तता के पंच तत्व से रचित हैं

वयोवृद्ध सज्जन की कथा

मेरे मोहल्ले में एक वयोवृद्ध सज्जन रहते हैं। वह प्रतिदिन मेरे घर अखबार पढ़ने आते है। प्रातः जब मैं दरवाजा खोलता हूं। वह मुझे उपस्थित मिलते है। दरवाजा खोलते ही वह मुझे जोरदार नमस्कार ठोंकते है। अतःआप सोचेगे कि यह सज्जन वरिष्ठ होते हुये भी मुझ कनिष्ठ को नमस्कार क्यों ठोंकते हैं। इसकी वजह साफ है। कि इन्हें मेरा यहां मुफ्त की मीठी चाय और अखबार के ताजे समाचार दोनों मिल जाते है। नमस्कार के साथ ही मुस्कुराते हुए अन्दर प्रवेश कर यह कहते हुए सोफे में स्थापित हो जाते हैं कि कहिए साहब आज के मुख्य समाचार मैं चुपचाप उनकी ओर बढ़ा देता हूं जो हलकारा मेरे सोकर उठने के पूर्व दरवाजे की संघ से घर के अन्दर डाल जाता है। अखबार वाला अंझाकर जाय तो कर जाय पर यह वयोवृद्ध सज्जन एक दिन भी नागा नहीं करते।

अखबार लेकर वह उसे बड़े ध्यान से उलटते-पलटते हैं फिर विज्ञापन वाले पृष्ठ को स्थिति प्रज्ञ होकर देखने लगते हैं। इसी बीच श्रीमती जी चाय बनाकर लाती हैं एक कप मुझे और दूसरा उन वयोवृद्ध सज्जन को थमाती हैं इस प्रकार प्रतिदिन सुबह आना, अखबार में छपे विज्ञापनों को समाधिस्त होकर देखना और चाय पीकर यह कहते हुए चले जाना कि आजकल टी.वी चैनलों की तरह यह अखबार भी विज्ञापनधर्मी हो गए हैं। ऐसे-ऐसे विज्ञापन मुख्य पृष्ठ पर छाप देते हैं कि जिन्हें परिवार वालों के साथ पढ़ते हुए शर्म आती हैं।

हमेशा की तरह वह उस दिन भी आए। अखबार में छपे विज्ञापनों पर अपनी पैनी दृष्टि डाली, चाय पी और अखबार बन्द कर एक तरफ रख दिया। मैंने सोचा-चलो आज जल्दी ही इनके जाने का समय हो गया। किन्तु मेरा ख्याल गलत निकला। उनकी मुखमुद्रा चिंतनशील थी। आंखों में एक अजीब सी जिज्ञासा तैर रही थी। स्वांसों की गति तेज थी। कुछ समय तक हम-दोनों के बीच सन्नाटा रहा। जिसे उन्होंने यह कहते हुए तोड़ा कि आप की उम्र कितनी होगी। उनके इस अप्रत्याशित प्रश्न को सुनकर

में चौका। फिर सहज भाव से बोला-50-52 वर्ष और आपकी- मैंने भी प्रति उत्तर में पूछ लिया। वह बोले-यहीं कोई 60-65 वर्ष

बात के क्रम को आगे बढ़ाते हुए वह बोले-यह जो अखबारों में विविध विज्ञापन छपे रहते हैं। आप किस किस्म के विज्ञापन की बात करते हैं मेरे इस प्रश्न पर उन्होंने पहले दाएं-बाऐं देखा। फिर सकुचाते हुए बोले- यही मरदाना ताकत, शक्ति और स्फूर्ति प्रदान करने वाले औषधीय विज्ञापनों की, जैसे -पावर प्लस जिब्रोटोन, एग्रो एनर्जी कैपसूल, 2 मय कैपसूल, एनर्जी 31, पिस्टल-303 यूज मी, जे.पी.-007 टेबलेट और जापानी व आर.जी. तेल इत्यादि के विज्ञापन।

उनके इस संकल्पित कोष को सुन कर मैं दंग रह गया। मैंने कहा-जब अखबार वाले छापते हैं तो निश्चय ही उपयोगिता होते होंगे ऐसी उत्तेजक औषधियों का उपयोग अनादि काल से राजे-रजवाड़े और रईश लोग करते चले आ रहे हैं। यह सब उन्हीं का परिस्कृत रूप है। इस पर वह अपनी शंका व्यक्त करते हुए बोले-मुझे तो इसमें दुनिया के महान दादा और पूंजीपति सम्राट अमेरिका की साजिश नजर आती हैं। जो हमारी युवा-पीढ़ी को इन उत्तेजक मादक औषधियों के सेवन द्वारा मदांद कर उसके चरित्र,हमारी संस्कृति और राष्ट्रीयता अस्मिता को नष्ट करना चाहती है। ताकि ये कुसंगति होकर कुकृत्य करें और हमारा देश कुसंस्कृतियों का अजायब घर बन जाए। मैने उन्हें समझाते हुए कहा-इसके लिए किसी विदेशी पहल की जरूरत नहीं है।

यह काम हमारे देश के नेता बाखूबी कर रहे हैं विदेशी कम्पनियों का इससे ज्यादा कुछ लेना-देना नहीं है, वह तो ब्राउन सुगर, स्मैस ड्रग और चरस जैसी मादकता फैलाने वाले पदार्थो की स्मगंलिग करती है, जिससे उन्हें अच्छी-खासी आय भी हो जाती है। इस पर वह बोले तो फिर यह 'मरदाना' वाले विज्ञापन किसके लिए है। मैने कहा-यह 60-65 वर्ष की आयू वर्ग वाले वयोवृद्ध सज्जनों के लिए।

राजा की मलाई और मलाई अधिकारी

एक राजा था। वैसे तो राजा आज भी हैं, पर पहले राजतंत्रीय राजा थे, अब लोकतांत्रिक राजा हैं। नाम बस बदला है बाकी काम वही है। राजा को मलाई खाने की अजीब लत थी। खाने के मामले में हमारा देश वैसे भी बहुत ही अजीबो गरीब है। यहां के लोगो को यह बताने कि जरूरत नहीं है कि क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए।

यहां के लोगो के खाने की मीनू अतिविशिष्ट है। कुछ समय पूर्व समाचार आया था कि बंगलोर में एक नागराज नाम का आदमी है, जो नाश्ते में रेशम का कीड़ा लंच में छिपकली और डिनर में सांप खाता है। उसका कहना है कि सांप से ज्यादा स्वादिष्ट और लाजवाब व्यंजन कोई नहीं है। एक दिन एक संवाददाता ने एक नेता जी से पूछा हे! प्रजानाथ आप अपने मनपसंदीदा खाने का नाम बतलाइए वह तपाक से बोले जनतंत्र को खाइए, जैसा की हम खाते हैं। जनतंत्र से जन को निकाल कर फेंक देते है। और,खालिस तंत्र को घोटाले का नमक और कमीशन की चटनी मिलाकर मिला कर खाते हैं। बड़ा मजा आता है। जो नहीं खाता वह जीवन भर पछताता हैं आजकल के नेता राष्ट्रभक्षी हो गये हैं। फिर भी नरभक्षी से तो अच्छे ही हैं।अभी हाल ही में दिल्ली के नोएडा इलाके के निठारी नामक स्थान में सुरेन्द्र नाम के नरभक्षी जीव का पता चला है। जो बच्चों का अपहरण कर उनकी हत्या कर देता था। फिर उनकी कलेजी निकाल कर रुची के साथ खाता था। ऐसा वह अपनी कामेक्षा बनाए रखने के लिए करता था। यह बात मैं दूरदर्शन के खबरिया चैनलों में देखी सुनी है खैर छोड़िए इन नरभक्षी आदमखोर इंसानी भेड़ियों का जिक्र। अपने मलाई खोर राजा कि कथा आगे बढ़ाते हैं। उसकी विशेषता थी कि वह प्रतिदिन सोने से पहले एक किलो मलाई खाता था। एक दिन उनके मुंहलगे बीरबलीय दरबारी ने उनसे पूछा है! प्रजाबल्लभ यह प्रतिदिन एक किलो मलाई खाने का राज क्या है? विस्तार से बतलाइये। राजा ने अपने चेहरे पर

बादशाही मुस्कान बिखेरते हुए कहा कि मलाई खाने से स्वास्थ सुन्दर रहता है, उम्र बढ़ती है, यौवन स्थिर रहता है और कामेक्षा बनी रहती हैं जिस प्रकार आजकल के नेताओं को कुर्सी और कमीशन की चिंता सताती रहती है उसी प्रकार राजाओं और नवाबों को यौवन और काम की चिंता रहती थी। राजा मलाई सदैव शुभ (मदन) मूहूर्त में ही खाते थे। इसके लिए राजपुरोहित और ज्योतिषी हरदम उनके पास तैनात रहते थे। शुभ मुहुर्त देख कर ही वह मलाई का भोग लगाते थे। जैसा कि आज कल के नेतागण पंडितों, ज्योतिषियों और तांत्रिकों से शुभमुहर्त का निर्धारण कराकर चुनावी महासागर में विजयी श्री हासिल करने के लिए अपना पर्चा दाखिल करते हैं। उन्हें जनता से ज्यादा यंत्र-मंत्र-तंत्रधारी तांत्रिकों और ज्योतिषियों पर ज्यादा भरोसा है। तो साहब शुभ मुहुर्त देखकर मलाई का थाल लाया जाता। पंडितगण मंत्र पढ़कर थाल में जल छिड़कते फिर राजा उसे खाकर शयन कक्ष में प्रवेश कर जाते। मलाई लाने के लिए राजा ने बकायदा एक मलाई अधिकारी नियुक्त कर रखा था। जो राजा को प्रतिदिन एक किलो मलाई उपलब्ध कराता था। अब जिसके नाक के नीचे से प्रतिदिन मलाई का थाल गुजरता हो भला कब तक उसकी महक को बर्दाश्त करता। उसका भी मन मलाई खाने के लिए छटपटाने लगा। सो वह प्रतिदिन एक किलो मलाई में से एक पाव मलाई बतौर कमीशन अपने लिए निकाल लेता। मलाई कम होने से राजा का यौवन प्रभावित होने लगा। उसे शंका हुई सो उसने पहले मलाई अधिकारी की निगरानी के लिए दूसरा मलाई अधिकारी नियुक्त कर दिया। अब राजा के पास तीन-पाव मलाई कि जगह आधा किलो मलाई पहुंचने लगी। हुआ यह कि दुसरे मलाई अधिकारी एक पाव मलाई मार रहा है तो मैं तो उससे बड़ा अधिकारी हूं मेरा भी कुछ हक बनता है सो वह भी मलाई मारने लगा। आधा किलो मलाई मिलने पर राजा कुपित हुये। उनका यौवन ढलता जा रहा था। और कामेक्षा में कमी भी आती जा रही थीं उन्होंने दूसरे मलाई अधिकारी की निगरानी के लिए तीसरा मलाई अधिकारी नियुक्त कर दिया। तीसरा मलाई अधिकारी भला पीछे क्यों रहता। वह भी अपने लिए एक पाव मलाई कमीशन के रूप में निकाल लेता यह कमीशनखोरी का धंधा हमारी राष्ट्रीय पहचान बनता जा रहा है। जो थ्रू प्रॉपर चैनल चलता है। अब ले-दे कर राजा के पास एक पाव मलाई पहुंचने लगी।

राजा का यौवन जवाब देने लगा। अब लाजवंती भी उनके स्पर्श से प्रभावित नहीं होती थी पहले तीनों मलाई अधिकारी के ऊपर चौथा मलाई अधिकारी नियुक्त कर दिया। चौथा मलाई अधिकारी पहले तीनों मलाई अधिकारी का अनुगामी निकला। वह शेष एक पाव मलाई खुद हड़प गया, पर इसी समय उसका कर्तव्य बोध जागृत हुआ।

सो उसने मलाई का थाल पोंछने से निकली चुटकी भर मलाई ले जाकर राजा के मूंछ मे लगा दिया यह देखकर राजा आग बबूला हो गया। आंखो में अंगार भर कर बोला यह क्या बेवकूफी है।

चौथे मलाई अधिकारी ने अपने दोनों हाथ जोड़कर शरीर को घुटनों तक मोड़कर बोला हे! कृपानिधान यह बेवकूफी नहीं, यह तो मेरी ईमानदारी है। जो मैने अपने हिस्से की मलाई में से इतनी सी मलाई आपके लिए बचाई है राजा ने कहा तो तुमने इसे मेरी मूंछ में क्यों लगाई है, वह इसलिए प्रजाबल्लभ ताकि आपके मलाई खाने का एहसास जिंदा रहे। कमोवेश हमारे देश कि व्यवस्था भी कुछ इसी तरह की है। शासन द्वारा जनहित के कार्यों के लिए जारी की गई राशि की वरिष्ठ क्रम से ऐसी बंदरबांट होती है कि उसका 25 प्रतिशत भी जनता के पास नहीं पहुच पाता जनता बेचारी इसी एहसास से जी रही है कि हमारे देश के रहनुमाओं का इस बेइमानी के सौनदर्य शास्त्र से कम मोह भंग होगा। कब हमें हमारा हक मिलेगा और हम सुखी होंगे।

न जाने कौन सा सूरज हटाएगा आकर वो एक रात जो ठहरी है सब के चेहरे पर

समस्याओं का तानपुरा

हिन्दी के महान चिन्तकों और बुद्धि जीवियों का मानना है कि पढ़ने से समझ का विकास होता है, बुद्धि तेज होती है, बहुत सारी चीजें साफ हो जाती हैं, राजनीति से चरित्र की तरह नहीं विचारों से धुंध की तरह, सो भइया हम अपनी समझ को विकसित करने और अपनी कुंद बुद्धि को प्रखर करने के लिए अपने घर में बैठे अक्षरा 60 में प्रकाशित डा विजय अय्यर का आलेख सांसदो का वेतन ईमानदारी और चाय पढ़ रहे थे तभी हमारे एक किताब लपकू मित्र प्यारेलाल आवारा आते दिखाई दिए। वह इसलिए कि कुछ पुस्तकानुरागी साहित्यकारों की लत दूसरों की किताब मांग कर अपने घर में सजाने की होती है। फिर उसे लौटाने का नाम नहीं लेते। एक बार पढ़ लिया हैं। अब दोबारा पढ़ रहा हूं। जी चाहता है कि पढ़ता ही रहूं गोया किताब न हुई, किसी मंत्री की कुर्सी हो गई। एक बार बैठ गए तो जी चाहता है बैठे ही रहें। इनकी इसी प्रवृत्ति को देखकर देश के महान गीतकार गोपालदास नीरज ने लिखा था।

जिसको देखो वही हुआ है
यहां दीवाना कुर्सी का।
अपना प्यारा देश बना है
पगलखाना कुर्सी का

हमारे प्यारे लाल जी कुछ इसी मानसिकता के प्राणी हैं, मुझे किताब छिपाते देखकर बोले, क्या पढ़ रहे थे? कोई नई पुस्तक हाथ लग गई क्या?

मैंने मुस्कुराते हुए कहा हाथ तो आपके लगती है। हम तो खरीद कर पढ़ाते है।

यह वह अक्षरा पत्रिका है। जिसके कई अंक आप पढ़ने के लिए ले गए थे और अभी तक पढ़ रहे हैं। इस पर बत्तीसी चमकाते हुए बोले, बहुत ही पठनीय अंक थे, उसमें छपे कई लेख बड़े ही विचारोत्तेजक लगे उन्हीं पर विचार मंथन चल रहा हैं। मैंने कहा-ठीक है जब नवनीत निकल आए तो लौटा दीजिएगा। वे गंभीर होते हुए बोले

लौटा दूंगा।

हमने कहा अच्छा छोड़िये इन बातों को और बताइए आप आज इधर कैसे भटक पड़े। वे तपाक से बोले काफी दिनों से एक जिज्ञासा है हमारे मन में हमें निरन्तर व्याकुल किए रहती है। उसी की शांति के लिए मैं आप के पास आया हूं हमारे प्यारेलाल निहायत जिज्ञासु प्रकृति के जीव हैं। वे जब भी मेरे घर आते हैं तो किसी न किसी समस्या का तानपुरा अवश्य ही अपने साथ लाते हैं कि राह चलने वाले लोग तक ठिठक कर सुनने लगते हैं उस दिन भी वे ऐसी ही एक समस्या लेकर हमारे घर आये आते ही जोर से चिल्लाए, बोले अरे ओ! कलम घिस्सू वे प्रेम से मुझे इसी नाम से संबोधित करते हैं किताबों के पिस्सू, अपने किताबों के जंगल से बाहर आइए और हमें इण्डिया और भारत का अन्तर समझाइए। उन्हे इस आतुर मुद्रा में देखकर हमने कहा- पहले अन्दर आकर आराम से बैठ जाइये श्रीमान, फिर हम आपकों बतलाते हैं इण्यिा और भारत की पहचान।

वर्तमान समय में हमारा देश स्पष्ट रूप से दो भागों में बंट गया है, जिसमें से एक का नाम इण्डिया और दूसरे का भारत पड़ गया है।

इण्डिया में वे लोग रहते हैं जिनके पास अनेकानेक वातानुकूलित गगनचुम्बी अट्टालिकांए, दो तीन आयातित कारें और सेलूलर फोन रहते है। कालाबाजारी,स्मगलिंग, हत्या बलात्कार,घोटाला और कमीशनखोरी जहां की संस्कृति है जहां लोग अपने वंशजो के लिए अपार धन बटोर रहे हैं।ै जिनके विदेशी बैंको में करोड़ो रूपये के गुप्त खाते हैं। जो नोटों की रजाई, ओढ़ते-बिछाते हैं, अंग्रेजी शराब पीकर विदेशी कार से देशी लोगों को कुचलते चले जाते हैं। जिनके माफिया साम्राटों से गहरे नाते हैं। सारी नेमतें जिनके आधीन हैं जो व्यवस्था को अपने अनुकूल करने के लिए पूरी तरह स्वाधीन हैं। इनकी पहुंच इतनी उंची है कि वहां तक पहुंचने में हमारी सारी कानून व्यवस्था भी ओछी है। इनके साये में ऐसा आतंक पलता है कि इनके खिलाफ मुंह खोलते हुए हर भले आदमी का कलेजा हिलता है।

और भइया प्यारेलाल जहां तक भारत की बात है तो भुखमरी और गरीबी, बेवशी और लाचारी ही उसकी असली औकात हैं। यहां रहने वाले लोगों के सर से छत छिनती जा रही है। पेट से रोटी की दूरी लगातार बढ़ती जा रही है। अगर इसे दुष्यंत के शब्दों में कहना चाहें तो यों भी कह सकते हैं।

कल नुमाइस में मिला वह चीथड़े पहने हुए,
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्तान हैं।

आफरों का लालीपाप

आज एक परचून की दुकान पर मेरे ओल्ड इज गोल्ड मित्र प्यारेलाल जी बड़ी बेताबी के साथ खरीददारी करते हुए मिल गए। मैने समीप जाकर उनको प्रणाम निवेदत किया। प्यारेलाल जी सहउत्साह मेरे प्रणाम को स्वीकार करते हुए बोले आइए महासय कहिए क्या हाल-चाल मैंने कहा हाल-चाल तो ठीक हैं पर आपको ए क्या हो गया है जो इस तरह थोक के भाव खरीददारी कर रहे हैं। क्या घर से पूरी दुकान खरीदने का मन बनाकर चले थे? आज आपके सर पर इस तरह खरीददारी करने का जुनून किस बजह से सवार हो गया है प्यारेलाल जी उत्साहपूर्वक बोले आफर की बजह से आज एक के साथ दो, तीन चार और पांच-पांच चीजे मुफ्त में मिल रही हैं

मैने कहा अरे ओ मेरे भोले शंकर के सहोदर अक्ल के तहसीलदार, तुम्हें इतना तक नहीं मालूम कि जिस देश में पीने का पानी तक पैसों में मिलता हों वहां और वस्तुएं तो दूर उल्लू की खाल तक मुफ्त में नहीं मिल सकती। ये बाजार जो नितनई स्कीम और लुभावने आफर लेकर आते है वह एक मृगभरी चिका है। जिसे देखकर ऐसा लगता है कि बाजार हम पर कितना मेहरबान है जो हम पर सबकुछ लुटाने के लिए तैयार है। दरअसल ए एक के साथ तीन, चार और पांच चीजे जो फ्री की मिलती महसूस होती है वस्तुतः वह एक भ्रम है छलावा है। यह आफर एक ऐसी दरिया की भंवर है जो हमारे ग्रहस्ती रूपी नाव और वजट दोनों को निगल रही है। यह उत्पादक किस चतुराई से उपभोक्ता की जेब काटते हैं, यह आफर उसका नायाब उदाहरण है। आफर का लालीपाप दिखाकर बाजार हमें दोनो हाथों से लूट रहा है और हम खुशी-खुशी लुट रहे हैं। एक के साथ एक फ्री का पासा फेंक कर ग्राहक को लुटने के लिए उकसाया जा रहा है। आईए और अपने मन पसंद जरूरत की चीजों के साथ पांच नापसंद अनावश्यक चीजें घर ले आइए। दरअसल ये इस्कीम और आफर जादा मुनाफा कमाने की मार्केटिंग स्ट्रटजी है। जिससे बचना कोई आसान काम नहीं हैं। ये अमरीकी

कारोबारी मॉडल है जो मुफ्त की स्कीम से ज्यादा चीजें खरीदने को विवस करता हैं। कईबार इस प्रकार की स्कीमों का उपयोग पुराने माल को अच्छे मुनाफे के साथ निकालने के लिए भी किया जाता है। ऐसी योजनाओं में उत्पाद की कीमत वास्तविक कीमत से ज्यादा रखी जाती है। और उसी कीमत पर या उससे कम कीमत का दूसरा सामान मुफ्त दिया जाता है। किसी नए प्रोडक्ट को बाजार में स्थापित करने के लिए भी ऐसे हथकंडे अपनाए जाते हैं।

दरअसल ये एक उत्पाद के साथ दूसरा उत्पाद बेंचने का नायब तरीका है। ऐसी स्कीमों से जहां नए उत्पाद का प्रमोशन होता है वही पुराने उत्पाद की बिक्री भी बढ़ जाती है। सच्चाई यही है कि हर हाल में मुनाफा हमेंशा बाजार का ही होता है। ये उत्पादक अपने आफर का जाल बाजार में फेंक कर उपभोक्ता को उसमें फसने के लिए उकसाते हैं और उपभोक्ता उसमें तीतर-बटेर की तरह फंसते चले जाते है। इतना सुनते ही प्यारेलाल जी चेहरे पर अश्चर्य के भाव लाते हुए बोले- वाह रे! मेरे कौटिल्य मे तो तुझको सिर्फ साहित्यकार समझता था पर ये तू अर्थशास्त्री कब से हो गया। मैने काहा यही आफर और मुफ्त की स्कीमों का पहाड़ा सुन-सुन कर। ये आफर एक ऐसा ढ़ोल है जिसके अन्दर पोल ही पोल है। एक बार ऐसे ही मै एक सेल की दुकान में घुस गया। जहां बड़े-बड़े पोस्टरों में मोटे-मोटे अक्षरों से लिखा था। -अण्डरवियर के साथ पायजामा फ्री, शर्ट के साथ पैंट फ्री, ब्लाउज के साथ साड़ी फ्री, कम कीमत वाली चीजों के साथ अधिक कीमत वाली बड़ी वस्तुओं के फ्री गिफ्ट का गणित पहले तो मेरी तुक्ष बुद्धि के समझ में नही आया किन्तु जब अण्डर वियर शर्ट और ब्लाउज में लटक रही रेट लिस्ट पढ़ी तो आंखे जड़ी की जड़ी रह गई। हम रह गए दंग देखकर यह आफरों का घोटाला जेब में ऐसा डाका तो कभी डाकुओं ने भी नहीं डाला। अण्डर वियर जिसके साथ पायजामा फ्री था, उसकी कीमत रेट पर 275रू. और शर्ट जिसके साथ पैंट फ्री था। उसकी 1700 रू. तथा ब्लाउज की कीमत जिसके साथ साड़ी फ्री थी 450 रू. अंकित थी। कीमत पढ़ते ही हमारे होस ठिकाने आ गये और जेब बची की लाखों पाए। कहते हुए बिना कुछ लिए दिए चुप-चाप बाहर आ गए ऐसे ही एक दिन पत्नी की प्रेरणा से हेल्दी सीजन में हेल्थ सुधारने के लिए सोना चांदी नाम च्यवनप्राश खरीद लाए उसके साथ फास्टरिलीफ का पैकेट मुफ्त में मिला दुकानदार के अनुसार तब से जब भी मैं बाहर से घूम-घाम कर आता हूं श्रीमती जी पूछती हैं कहीं चोटं मोच आई, गाड़ी से गिरे-उरे की नहीं। मैं ना की मुद्रा से सर हिला देता। वह मायूस हो जाती आखिर एक दिन मैने उनसे पूछ ही लिया कि अरे। भाग्यवान तुम मेरे चोंट-मोच के पीछे क्यों पड़ी हो वह झुझलाते हुए बोली वह जो च्यवनप्रास के साथ फास्टरिलीफ का पैकैट मुफ्त में लाए हैं वह किस दिन किसके के काम आएगा।

अथ अखिल भारती कवि सम्मेलन कथा

कवि सम्मेलन करवालो। कवि सम्मेलन। जब यह आवाज हमारे कानो से टकराई, हमने अपने खाने की थाली सामने खिसकाई, भाग-कर वाहर दरवाजे पर आया झांककर देखा तो पाया खादी का कुर्ता, पायजामा पहने बगल में झोला लटकाये ब्लेक एण्ड व्हाइट दाढ़ी वाला एक कृषकाय युवक उक्त आवाज लगाते हुये चला जा रहा था।

मैने उसे आवाज देकर अपने पास बुलायाः सोफे पर आराम से बिठाया एक गिलास ठण्डा पिलाया फिर पूछा कहिये भाई साहब आप कौन है और यह क्या करवाने की आवाज लगा रहे थे। मेरे इस प्रश्न पर वह अपने चौकोर फ्रेम के चश्में को उतारकर मेज पर रखते हुए नाक पर पड़े चश्में के दाग को हाथ से सलाते हुए बोला भाई साहब मै एक अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजक हूं मेरा अपना स्वयंम का एक कवि सप्लाश्र सेन्टर हैं। जिसमें विभिन्न अवसरों पर- जैसे तिलक, बरीक्षा, शादी-विवाह, सुहाग रात, बरहो, और आन्य छोटे बड़े हर समय हर स्तर के हर रस के छोटे बड़े मझोले कवि उपलब्ध रहते है।

मैने कहा और तो सब ठीक है भाई साहब लेकिन ये शादी-विवाह, और सुहागरात पर कवि सम्मेलन के आयोजन की बात कुछ जमती नहीं?इतना सुनते ही वह तपाक से बोला, अरे साहब कैसे नहीं जमती, आजकल सब चलता है, ऐसे शुंभ अवसरों पर कुछ न कुछ तो होना ही चाहिए सो कविसम्मेलन से सस्ता आयोजन और कौन सा हो सकता है। एक बुलाओं चार आते है होतो मार्ग व्यय देदो न होतो प्रेम से खाना खिला दो इतने से ही संतुष्ठ हो जाएंगे। हर्रा लगे न फिटकरी रंग चोंखा ही आवे मैने ऐसे महान कवियों के प्रति सहानु भूति दर्शाते हुए कहा- अरे राम-राम भाई कवियों की ऐसी दुगर्ति इससे पहले कभी नहीं हुई कैसा समय आया हैं इस पर वह अपनी बिल्लेरी आंखो को नचाते हुए बोला कैसे समय की बात करते हैं साहब इससे पहले कविताओं और श्रोताओं की भी तो ऐसी दुगर्ति नहीं हुई जैसा की आज के मंचीय कवि कर रहे

हैं। मैने उसकी इस दलील पर अपने सहमति का स्वर मिलाते हुए कहा-अभी आपने बताया आपके पास तीन स्तरों के कवि हैं छोटे, बड़े मझोले इसके निर्धारण का आधार क्या हैं। क्या जादा अच्छी साहित्यिक कविता लिखने वाले को अच्छा कवि मानते है।

उसनें कहा क्या बात करते हैं। साहब साहित्यिक कवितायें पढ़वाकर आयोजतक और आयोजन का भट्ठा बैठवाना है क्या, अरे ऐसे कवियों को काव्य पाठ करते ही जनता अण्डे और टमाटर फेंकना शुरू कर देगी। ऐसे कवि तो सिर्फ महगी पत्र पत्रिकाओं में ही अच्छे लगते हैं मंच पर इन्हें कौन पूछता है। मंचीय कवि तो कुछ और ही होते है। तो अपनी शाली और बीवियों पर कवितायें लिखकर स्त्रोताओं को रिझाते हैं। हसाते हैं, गुदगुदाते हैं ओ आज के समय के श्रेष्ठ हास्य कवि कहलाते हैं, जो मंचपर हाथ फटकार कर माइक के आगे पीछे पैर बढ़ाकर जोर-जोर से चिल्लाकर पाकिस्तान को गाली देते हैं। ओ बीर और ओजत रस प्रधान कवि माने जाते हैं, इसके अलावा जो मंचपर दायें-बायें आगे पीछे घूमकर अपनी गर्दन घुमाकर, आखों को नचाकर कत्थक नृत्य करने जैसी मुद्रा में काव्य पाठ करते हैं उन्हें हास्य व्यंग कवि कहते है इसके अलावा कवियों का छोटा बड़ा होना बहुत कुछ उनके द्वारा निर्धारित माम देय पर भी निर्भर करता है। जो जादा पैसा मागे वही बड़ा। मैने कहा श्री मान यह तो भोली-भाली जनता को सरा-सर बेवकूफ बनाना है। क्या बात करते हैं साहब आज तो अधिकांश कवि सम्मेलन जनता से पैसा वटोर उन्हें बनाने के लिए किए जाते हैं।

भ्रष्टाचार का बाज

प्यारे लाल जी का मेरे घर में आगमन अक्सर किसी नए दरोगा के नगर में आगमन के समान या चुनाव जीतकर पहली-पहली बार विधायक मंत्री बने किसी नेता के मंचपर आगमन के समान होता। आते ही चाय की फरमाइस करते। लेकिन आज जब वह आये तो उनके चेहरे पर चिंता चिंतन और विषाद के मिले जुले भाव थे। आए और अनमन से सोफे पर बैठ गए। कुछ छण हम दोनों के बीच मौन रहा जिसे उन्होने ही भंग किया। बोले सोने के सिक्कें जैसा चमकता था कभी मेरे देश का चेहरा किन्तु इन सारस्वतों सफेद पोसों और भ्रष्टचारियों ने ऐसे कालिख मली है कि सूरज के प्रकाश में भी साफ-साफ नजर नहीं आता। इनका काम देश और समाज की सेवा करने के बजाय एक दूसरे के चेहरे पर कालिख मलना और कीचड़ उछालना ही रह गया हैं।

कभी हमारे देश को सोने की चिड़िया कहा जाता था लेकिन अगर आज मुझसे कोई पूछे कि इसका वर्तमान नाम क्या होना चाहिए तो मै तपाक से कहूं भ्रष्टचार का बाज। आज देश में चारों तरफ बेमिशाल भ्रष्टाचार है। चपरासी से लेकर के अधिकारी तक, मंत्री से लेकर संतरी तक सभी भ्रष्टाचार के काले समुन्दर में डूब -उतरा रहे हैं देश की सम्पूर्ण फिजा में यूनियन कारवाइड की तरह भ्रष्टाचार का जहर घुला हुआ है।

हर युग की अपनी एक विशेषता होती है- जैसे सतयुग की विशेषता थी किलोग सच बोलते थे। सत्य मार्ग पर चलते थे। त्रेता युग के लोग मर्यादा प्रधान होते थे। द्वापर युग धर्म और कर्म पर निष्ठा के लिए जाना जाता था। लेकिन वर्तमान कलयुग हिंसा, असत्य अधर्म और भ्रष्टाचार के लिए सुविख्यात हैं। खूब असत्य बोलो, अनाचार करो, भ्रष्टाचार करो और अपना घर भरो यही आज के युग का सार है। आज के जपी,तपी साधू सन्यासी सभी भ्रष्टाचार के पंक सरोवर में आकंठ डूबे हैं। कोई आर्थिक भ्रष्टाचार रहा है तो कोई मांश भ्रष्टाचार में लिप्त है। यह सब कलयुग की महिमा है। अभी हाल में सरकार द्वारा सभी को अपनी चल-अचल सम्पत्ति का विवरण प्रस्तुत करने का

फरमान जारी किया गया जिसे सरकारी कर्मचारियों द्वारा तो गंभीरता से लिया गया हैं। क्योंकि ऐसा न करने पर उनका हुक्का-पानी बंद किया जा सकता है। लेकिन सामान्य जन इसे चुनावी घोषणाओं की तरह ले रहे है। उनके द्वारा घोषित सम्पत्ती का विवरण कितना सही है। कितना गलत यह तो वही जानें। वार्षिक आय का मामला हो तो लोग इनकमटैक्स के डर से कम बतलाते है। बड़ी-बड़ी जागीरों के मालिक, कई एकड़ भूमि के भूस्वामी भिखमंगे बन जाते है। फिर तो यह चल-अचल समपत्ति का मामला है। कुछ तो इनकमटैक्स की डर से तो कुछ भ्रष्टाचार द्वारा अर्जित अकूत सम्पत्ति के सार्वजनिक हो जाने के भय से अपनी सम्पत्ति का वास्तविक विवरण नहीं देते। केवल दो लोग अपनी सम्पत्ती बिल्कुल नहीं छिपाते एक तो कंगाल दूसरे माला माल। कंगाल के पास खोने के लिए कुछ नहीं होता इसलिए वह झट हाथ खड़े कर देता है कि देख लो मैं सम्पत्ति की ओर दिगम्बर हूं। और मालामाल वह अपनी सारी सम्पत्ती आम कर देता है कि देख लो मेरी इतनी सम्पत्ति है। मेरा विश्व के गिने चुने अमीरों में फला स्थान हैं सारे खुरपेंच, सारी गड़बड़ियां सारे लुका-छिपी के खेल मध्यम वर्ग वाले ही करते हैं। इसमें कुछ डाक्टर कुछ मिनिस्टर और उच्च ओहदा प्राप्त अधिकारी कर्मचारी और व्यूरोकेट्स आते है। अगर इनका ग्रेडेशन किया जाय तो ए ग्रेड में व्यूरोक्रेट्स, बी ग्रेड में न्यायअधिकारी और तीसरे नम्बर पर नेता आते है। ए कमाते तो खूब हैं लेकिन बताते समय उन्हें अपनी सम्पत्ती का व्योरा गोल-मोल होता है, अब नेताओं को ही ले लीजिए जब ए चुनाव के समय अपनी सम्पत्ति का व्योरा देते हैं। तो वह लाखों में होती है। छापा पड़ता है तो करोड़ो बरामद होते हैं जिनका जवाब भी ए यहां, गोल मोल देते हैं। इनकी अर्जित सम्पत्ति का व्योरा तो ढूंढते रह जाओगे।

देश के लोकतंत्रावतार तथाकथित नेता मंत्री, समाजसेवक राष्ट्रपेमी आदि सब राजभवन में समाज सेवा का बाना ओढ़ कर साधू की तरह आते हैं। और राजकोष को बाबा बनाकर चल जाते हैं। यह लोकतंत्रीय भ्रष्टाचार का अप्रतिम उदाहरण हैं। राजभवन में संचालित रहस्यमय गतिविधयों को देखकर ऐसा लगता है जैसे यह लोकतंत्र का भवन न होकर तंत्रलोक का भवन हो।

वैसे तो भ्रष्टाचार का अर्थशास्त्र बहुत ही अदभुत और महत्वपूर्ण है लेकिन इसका को गणित नहीं है। यह कब किस अनुपात में बढ़ता है। कोई नहीं। बता सकता आज भ्रष्टाचार हमारे देश की गौरवशाली परम्परा बन गई है। जिन-जिन ने भ्रष्टाचार करके अकूत सम्पत्ति कमाई है। वह सब गौर्वान्वित हैं इन्टरनेशनल ट्रांसपरेसी के सर्वे के अनुसार भ्रष्टाचार के मामले में भारत के अन्दर मध्यप्रदेश का तीसरा स्थान है। यह स्थान 2007 व 2008 में भी यथावत रहा है। पहले स्थान पर बिहार और दूसरे स्थान

पर जम्मूकश्मीर है। भ्रष्टाचार के नित नए किर्तीमान रचने की प्रेरणा मिलती है। लेकिन देश के ये भ्रष्टाचारी गिद्ध जिस तरह से भारत माँ के तन को नोच-नोच कर खा रहे हैं उससे प्यारेलाल जी बहुत ही व्यथित हैं। इससे पहले मैंने उनको इतना संजीदा और दुखी कभी नहीं देखा। अन्त में इस चेतावनी के साथ उन्होने अपनी बात पूरी की

हो गए यदि मौन हम तो देखना
दौर काय दर्द होगा दस गुना
आंसुओं से बन नही पाती कभी
कष्ट के प्रतिकार की प्रस्तावना

शुद्ध के लिए युद्ध

बात उन दिनों की है जब मैं कॉलेज में विज्ञान स्नातक की पढ़ाई कर रहा था। मेरे साथ नगर के एक होल-सेल किराना मर्चेंट के सुपुत्र भी पढ़ रहे थे। मेरी और उसकी दोस्ती इतनी गहरी और प्रसिद्ध थी जितनी संदी-पनि आश्रम में अध्ययन कर रहे कृष्ण और सुदामा की उसके पूर्वज सिंध देश के निवासी जो किसी कारण वस वहां से भागकर भारत आए और यहां आवाद होकर अपना व्यापारिक प्रतिष्ठान स्थापित कर लिया। एक वार कॉलेज की तरफ से सांइस एगजीविसन का टूर लखनऊ गया वह भी मेरे साथ गया। सभी सहयोगी नवाबी शहर लखनऊ में अपने-अपने मनपसंद वस्तुओं की खरीददारी कर रहे थे। लखनऊ में हर चीज का मार्केट अलग-अलग था। वह मुझे मसाला मार्केट ले गया जहां लवंग, इलायंची, कालीमिर्च इत्यादि थोक के भाव में मिल रही थी। वह व्यापारी के पास गया और उससे पूछां आपके पास मसालों का कचड़ा होगा क्या वह बोला हां है। फिर उसने रेट पूंछ कर चार बोरा कचड़ा पैक करवा कर पार्सल करने का आर्डर दे दिया।

मैने कहा यार यहां सब अच्छी-अच्छी चींजे खरीद रहे हैं और तू यह कचड़ा खरीद कर क्या करेगा। वह बोला तुम नहीं समझोगे। मैं इसे ले जाकर लउंग का कचरा लउंग में और इलायची का कचड़ा इलायची में मिलाउंगा और इस आठ रुपए बोरे के कचड़े को अस्सी रुपये किलो बेंचुगा समझे। मैने कहा वाह रे मेरे मिलावट की दुनिया के बादशाद मानागए तेरे मिलावटी दिमांक की शानी नहीं है। आज से तेरी मेरी दोस्ती खतम हमारे देशा में मिलावट की संस्कृति काफी पुरानी है पहले दूध में पानी, देशी घी में डालडा,मसाले (पिसे) में घोड़े की लीद, हल्दी में रामरज, लाल मंजन में गेरू इत्यादि मिलाया जाता था। लेकिन आज के मिलावट खोर इस मारे प्रतिमानों को ध्वस्त करते हुए मिलावटी वस्तुओं के नए कीर्तिमान स्थापित कर रहे हैं।

आज मिलावट तो दूर इन खाद्य पदार्थो के नकली उत्पादन तैयार किये जा रहे

है। सेंथिटिक दूध, नकली देशी घी, सेंथेटिक मावा और उससे बनी जान लेवा मिठाइयों के पकड़े जाने के समाचार निरंतर समाचार माध्यमों से सामने आ रहे है। कुछ समय पहले महाराष्ट्र में केमिकल के द्वारा तैयार किए गए दूध के नाम पर लाखों लीटर जहर बच्चों से लेकर बूढ़ों तक के पेट में पहुचाया गया। मुबई में डेयरी की दूध की थैलियों से दूध चुराकर पानी भर दिया गया। दिल्ली में नकली सरसों का तेल बनाने का कारखाना पकड़ा गया। उत्तर प्रदेश में पशुओं की चर्वी से देशी घी बनाने का कारखाना पकड़ा गया। चौभू और उज्जैन मे नकली मावा और कई स्थानों में किंटलों नकली और स्वास्थ के लिए घातक टाफिंया पकड़ी गई। और स्वास्थ्य के लिए घातक टाफियां पकड़ी गई। और तो और लोगों की जिंदगी से खिलाड़ करने वाले नकली दवा निर्माण के कारखाने ध्ड़ल्ले से चल रहे हैं दो रूपये का सिरफ (टानिक) जिसमें शक्कर के साथ साथ कुछ फलों के फ्लेवर मिला दिये जाते हैं ४० रुपये सें सौ रुपये तक में बेचे जा रहे हैं। कमीशन के लिए डॉक्टर भी इन्हें धड़ल्ले से लिख रहे हैं। क्या करें बेचारे डॉक्टर और मेडिकल स्टोर वाले उनके भी मुह पेट है उन्हें भी जीने का हक है। मरीज मरे तो मरे इन्हें तो सिर्फ दाम से काम है। एक सर्वे समाचार के अनुसार छः हजार में से मात्र ढाई सौ दबाईयां असली पाई गई। नकली बीज, नकली सीमेंट नकली, नोट, नकली स्टील, नकली कलपूर्जे, नकली टायर-टियूब प्रतिदिन लाखों लोगों की जान ले रहें हैं। यह मिलावट और नकली सामान निमार्ताओं की दुनिया। यानी इस लोकतांत्रिक देश में हर उत्पादन कर्ता मिलावट कर एक दूसरे के धन की ठगी कर रहा है उपभोक्ता के स्वास्थ की बलि ले रहा है। उसे मध्यम-मध्यम मौत दे रहा हैं। ऐसे उत्पादन कर्ता किसी भी आतंकवादी, ठग,लुटेरे हत्यारों से कम नहीं है।

उपभोक्ता के धन और स्वास्थ का हरण करने वाले इन उद्योगपतियों, व्सइयों, चिकित्यकों और कर्मचारियों के धन्धे धड़ल्ले से चल रहे हैं। सरकारें इनका कुछ नहीं कर पाती हैं। इनसे ए पंगा कैसे ले सकते हैं। इनके खिलाफ कुछ करना सरासर नाइंसाफी, विश्वासघात और एहसानफरामोसी होगी।

इसलिए ये सारेके सारे कुर्सी पुत्र सत्ता के धृतराष्ट्र इन उद्योगपतियों मिलावटखोरों के प्रति मौन धारण किए हुए हैं देश से भ्रष्टचार मिटाने स्वच्छ प्रशासन लाने की धमकी देकर सत्ता में आने वाले ये विश्वास घाती नेता जनता की नजरों में भले ही गुनहगार हों पर पूंजीपतियों उद्योगपतियों और मिलावट खोरों के प्रति निहायक वफादार बने रहना चाहते हैं। ऐसा करना इनकी आवश्कता भी है और विवसता भी। क्योकिं अगला चुनाव इन्हीं के लिए से लड़ना हैं। अब जनता चिल्लाती है तो चिल्लाए कि -मिलावट खोरी नश्ल खराब करती है। मिलावट खोर देश द्रोही हैं। ए आतंकवादी, नक्सलाइड

और साम्प्रादायिक तत्वों से भी ज्यादा खतरनाक लोग हैं। देश के विधायक, सांसद मंत्री और नेताओं को चाहिए कि इनके खिलाफ कठोर कार्यवाही करें। अब ए बेचारे विधायक सांसद मंत्री किस-किस से कहां कहां लड़े।

चुनाव आया तो विरोधियों से लड़े। जीत कर आए तो संसद विधान सभा में लड़े। अब क्या ए जीवन भर लड़ते ही रहेंगे तो ऐस कब करेंगे। नेता कहते हैं, मिलावट खोर मिलावटी वस्तुएं जनता को बेचवें हैं। इसलिए यह लड़ाई जनात की है, उसे ही लड़ना चाहिए। ये नेता मंत्री, विधायक, सांसद कौन सी स्वदेशी जीजों का इस्तेमाल करते हैं जो उसके लिए लड़े, इनके घर की सुई से लेकर कार तक इम्पोर्टेड है। जिसमें मिलावट की गुंजाइस ही नहीं है। और पूंजीपतियों, उद्योगपतियों और जमाखोरों, मिलावटखोरों, के खिलाफ लड़ाई छेंडकर इन्हें अपना फ्यूचर थोड़े खराब करना है। शुद्ध करना जनता की जिम्मेदारी है। उसे अपने हक की लड़ाई स्वयंम लड़कर आत्मनिर्भर बनना चाहिए। हेल्प योर सेल्फ।

चार हाथों वाले डॉक्टर

आज शाम को प्यारेलाल जी जब मेर घर आये तो मन उदास तन शिथिल देखाइ देने वाली स्थित में थे। मैंने कहा क्या बात है प्यारे लाल जी आज आप बहुत उदास दिखाई दे रहें हैं। इस गहन उदासी का सबब क्या है। मेरे इस प्रश्न पर प्यारेलाल जी कुछ क्षण मौन रहे, मानो कुछ चिंतन मनन कर रहे हों। फिर मुखर होते हुए बोले अमा यार यह चार छह और आठ हाथों वाले देवी देवताओं के बारे में सुना था मंदिरो और कलेण्डरों में देखा भी था, पर यह चार हाथों वाले डॉक्टर कौन हैं और कहाँ से आये यह बात मेरे गले नहीं उतर रही। मैने मुस्कुराते हुए कहा क्या हुआा यह चार हाथों वाले डॉक्टरों का कोई सपना-वपना देख लिया क्या। प्यारेलाल जी बोले ऐसी बात नहीं है। मेरे एक पड़ोसी हैं। अमृतलाल अस्वथानी एवं इधर काफी दिनों से बीमार चल रहे हैं। उनका स्वास्थ निरंतर गिरता जा रहा है। उनकी यह स्थित देखकर मैंने कहा भई अस्वस्थानी जी यह बिस्तर में पड़े-पड़े हाय मर गया कहने से जान बचने वाली नहीं है बीमार पड़ने पर डॉक्टर से इलाज करवाईये। इस पर प्यारेलाल जी बोले कौन से अच्छे डॉक्टर को दिखाएँ साई यहाँ तो हर डॉक्टर के चार हाथ है। जिसके भी पास जाओ वही चारों हाथ से लूटने को तैयार बैठा है। मेरी माली हालत तो आप देख ही रहे हैं बरी। प्यारेलाल जी जब से बीमार पड़ा हूँ दुकानदारी ठप्प पड़ी है। फिर इन चार हाथ वाले डॉक्टरों को लुटाने के लिए पैसे कहाँ से लाऊँ बरी, नीम हकीम के पास जाओ तो जान का खतरा, बड़े डॉक्टरों के पास जाओ तो मॉल (रुपये) का खतरा, बरी एक तरफ कुआं, दूसरी तरफ खाई। जाँऊ तो कहाँ जाऊ मेरे तो कुछ समझ में नहीं आ रहा। बस तभी से मेरे दिमाग में यह चार हाथ वाले डॉक्टर घूम रहे हैं। आँखें चार होती है यह तो सुना है, इसका मुहावरा आँखें चार होना है यह चार हाथ वाले डॉक्टरों का कांसेप्ट मेरी समझ में नहीं आ रहा। जरा आप ही समझाइये न प्लीज यह चार हाथ वाले डॉक्टर क्या होते हैं। मैने कहा बस इतनी सी बात पर इतनी उदासी।

भाई प्यारेलाल जी आज कल हर अच्छे डॉक्टर के चार हाथ होते हैं। इनका एक एक हाथ सीधे मरीज की जेब में होता है जिससे वह फीस के रूप में दो सौ से तीन सौ तक नगद निकालते हैं। डॉक्टरों का दूसरा हाथ जाता है टट्टी, पेशाब और खून की जांच करनें वालों की जेब में जहाँ इनका तीस से चालीस प्रतिशत तक का कमीशन फिट रहाता है, तीसरा हाथ होता है मेडिकल स्टोर में यहाँ मेडिकल रिप्रजेंटेटिव अपनी दवाइयाँ बिकवाने के लिए महीना बाँध देते हैं और चौथा हाथ होता है प्राइवेट नर्सिंग होम में। जहाँ मरीजों को तबियत से लूटा जाता है हो गये न डॉक्टरों के चार हाथ। इतना सुनते ही प्यारेलाल जी अपने दोनों हाथ जोड़ कर आसमान की ओर देखते हुए बोले या अल्लाह तू कभी किसी को बीमार मत बनाना, अगर बनाना तो इन चार हाथ वाले डॉक्टरों की मार से बचना। आमीन....

अरुण नामदेव

पिता : स्व. श्री परमेश्वरदीन नामदेव

माता : स्व. श्रीमती सरोजनी नामदेव

जन्म : 14.04.1953

जन्म स्थान : कोठी, जिला-सतना (मध्य प्रदेश)

शिक्षा : विज्ञान स्नातक, एम.काम

लेखन : कविता, गीत, नवगीत, कहानी, समीक्षा एवं व्यंग्य लेखन

प्रकाशित : 'धूप हँसती है' कविता संग्रह, 'चुटकी भर है चाँदनी' दोहा संग्रह

प्रकाशनाधीन : 'डाल डाल गिद्ध' कविता संग्रह, 'मेरी अमेरिका यात्रा' यात्रा संस्मरण

प्रसारण : आकाशवाणी रीवा एवं अमेरिका (USA) के शिकागो, डालास, फिनिक्स तथा सेनएन्टेनिओ से कविताओं का प्रसारण

प्रकाशन : देश की प्रमुख स्थापित पत्र-पत्रिकाओं में कविता, गीत, कहानी, समीक्षा और व्यंग्य लेखों का प्रकाशन

सम्मान पुरस्कार : सूर्यकांत त्रिपाठी निराला सम्मान, डॉ. भगवानदास सकड़िया सम्मान, डॉ. राजन चौरसिया सम्मान, जे.एम.डी. पब्लिकेशन दिल्ली द्वारा भारत के प्रतिभाशाली हिंदी रचनाकार सम्मान, युगधारा फाउंडेशन लखनऊ द्वारा 'शब्द साधक' सम्मान, गीतकार पुस्पमोहन अवधिया सम्मान

यात्राएं : अमेरिका (USA) के शिकागो, न्यूयार्क कैलीफोर्निया, न्यूजर्सी, सैन्येटेनिओ, एरीजोना लासबेगस, मिलवाकी, डालाश, फिनिक्स, वाशिंगटन, आयरलैण्ड, कनाडा और दुबई की यात्राएँ

सम्प्रति : शासकीय सेवानिवृत्त शिक्षक, स्वतंत्र लेखन

सम्पर्क सूत्र : स्वास्तिक ग्रीनसिटी -F-24, शहडोल-484001

मोबाइल नं. : +91-8815715145

आवरण : नीतिश कुमार

रुद्रादित्य प्रकाशन

190 एच/आर/3-एन, ओ.पी.एस. नगर, कालिन्दीपुरम,
प्रयागराज (उ.प्र.) पिन-211011 फोन 8187937731